चतुराई सावधानी और कोमलतासे राज्यशासन करता था, इस प्रजा उससे प्रसन्न थी। परन्तु अब अकबरका जमाना नहीं था इस समय लालची ऐशपसन्द और नालायक लोग राज्यके अधिकारी थे। ये लोग ऐसे काम नहीं करते थे या ऐसे कामोंकी कर की चेष्टा नहीं करते थे जिनसे साधारण लोगोंके हृदयमें इन प्रति श्रद्धा भक्ति और स्नेह उत्पन्न हो सकता। इनकी निठुरत कड़ाई और अत्याचार-परायणताने गदरका सामान बना रख था। भारतवर्षके कई प्रदेशोंके सूबेदार और सैनिक पुरुष उ समय देहलीकी मातहती तोड़कर अपनी अपनी रियासतो बड़े आनन्द और उत्साहके साथ स्वाधीनताका झगड़ा उठा रहे थे

बनारसके राजा बलवन्तसिंह, अवधके नवाब सफदर-जङ्ग रुहेलखण्डके अलीमोहम्मद, हैदराबादके निजाम, मैसूरके हैद अली, बङ्गालेके नवाब आलोवर्दीखां आदि सभी अपनेको स्वतन्त्र अथवा खुदमुखतार राजा समझते थे। कोई देहलीके बादशाहका मातहत कहलाना पसन्द नहीं करता था। और ये सब स्वाधीनता चाहनेवाले सूबेदार तथा राजे महाराजे केवल अपने बढ़ानेहीकी चेष्टा कर रहे थे। जो कुछ पहलेसे वर्त्तम रहा क्योंकर होगी इस बातकी चिन्ता कोई न

चेष्टा करने लगे। प्रायः सबने अपने पड़ोसी राज्यपर चढ़ाई करनेकी तैयारियाँ आरम्भ कीं। मरहठे भी कभी मुसलमानी सल्तनत पर आक्रमण करने और कभी आपसहीमें झगड़ने लगे। उधर अवधके नवाब साहबने अपने पड़ोसी राज्य रुहेलखण्ड पर चढ़ाई करनेका उद्योग किया, इधर रुहेले सरदार अलीमोहम्मदने आसपासके छोटे मोटे जमींदारों पर आक्रमण करके अपने राज्यका विस्तार बढ़ाया। मैसूरके हैदरअली निजामके मस्थे थोड़े राज्यकी ओर व्याप्ती दृष्टिसे देखने लगे। निजाम साहबने बेरार राज्यको अपने अधिकारमें करलेनेकी चेष्टा की। अठारहवीं शताब्दिमें एक समय भारतवर्षकी दशा ऐसीही बिगड़ गई। मानो उस समय सारा भारतवर्ष भूत प्रेत और पिशाचोंसे भर गया। प्रायः सभी स्थानोंमें लड़ाईकी आग भड़क उठी। परिणाम यह हुआ कि कालकी राजाओं तथा नवाबोंको पीछे अपने राज्यसे भी हाथ धोना पड़ा। राज्यके बढ़ानेकी चेष्टा कर अन्तमें सभी राज्यच्युत हुए!

देशमें जगह जगह ऐसी गड़बड़ पैदा हो जानेसे साधारण प्रजाको बहुत कष्ट होने लगा। वास्तवमें जब देशकी ऐसी दुरवस्था होती है तब प्रजाको बिलकुल सुख नहीं मिलता। परन्तु मनुष्यकी प्रकृति बड़ी विचित्र होती है। कष्ट यन्त्रणा और दुःखका नाम सुनकर आदमी घबरा उठता है। दुःख और विपत्तिकी आशङ्का मनुष्यके हृदयमें चिन्ता उत्पन्न करती है। परन्तु जब दुःख और विपत्ति ऊपर आ पड़ती है तब वह दुःख उतना नहीं जान पड़ता और वह विपत्ति उतना कष्ट नहीं प्रदान करती। इस

संसारमें कैसाही कष्ट और दुःख क्यों न हो मनुष्य सबको सह सकता है ।

आज सौ डेढ़ सौ वर्षके बाद हमलोग समझते हैं कि अठारहवीं शताब्दिमें भारतवर्षमें बड़ी अराजकता और बेअमनी थी इसलिये उस समय हमारे बड़े बूढ़े बहुत कष्टमें रहे होंगे बल्कि शायद वे सदा चाहती होंगे कि किसी तरह इस निकले तो इन कष्टों से छुटकारा मिले । पर यह हमारी भूल है । अठारहवीं शताब्दिमें ऐसी लड़ाई भिड़ाईका सामना रहते भी हमारे पूर्वपुरुष हमारेही तरह हर्ष सुख और आनन्दसे रहते थे । देशकी दशा कैसीही बिगड़ी हुई क्यों न हो पर साधारण लोग उसको और बहुत कम ध्यान देते हैं । वे सब अवस्थाओंमें एकही तरह चलते फिरते और खाते पीते हैं । हां जब खास अपने ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ती है तब कुछ दिनके लिये उनको थोड़ा कष्ट उठाना पड़ता है ।

परन्तु जबसे यह सृष्टि रची गई तभीसे सब देशों और सब युगोंमें कुछ ऐसे लोग भी पाये जाते हैं जिनको संसारकी कोई बात कभी अच्छी नहीं लगती । मानो संसारके साथ इनका सदासे झगड़ा चला आता है । ऐसे लोगोंको इस संसारमें पाप ताप कष्ट दुःख अत्याचारादिके अतिरिक्त कोई दूसरी बात देखही नहीं पड़ती । इनमेंसे कुछ लोग अपने जीवन भर उस दुःख कष्ट आदिके मिटानेकी चेष्टा कर इस संसारसे चले जाते

... पीछे पैदा होनेवाले लोग उनका नाम सुनकर

... समाज-संस्कारक या धर्म-संस्कारक ...

हैं। और कोई कोई संसारको एकबारही त्यागकर अकेले निर्जन वनमें जा बैठते हैं। संसारके लोगोंके साथ उनका किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं रहता।

अठारहवीं शताब्दिमें भारतवर्षमें संसार-विरागी जो दो चार मनुष्य थे उनमेंसे किसीने देश-संस्कारक या धर्म संस्कारकका काम नहीं किया। वे संसारसे एकबारही सम्बन्ध तोड़ कर निर्जन वनों अथवा पहाड़ी गुफाओंमें बैठे हुए रात दिन ईश्वरका भजन किया करते थे। हिमालयके आसपासके हरे भरे वन उनके रहनेके स्थान थे। ये लोग संसारसे केवल इसलिये विलग रहते थे कि जिसमें मरनेके बाद शान्ति मिले। प्रायः ये लोग हरिद्वार आदि हिमालयके निकटवर्त्ती तीर्थोंमें भी घूमा करते थे।

हिमालयके नीचे जिस जगहसे श्रीगङ्गाजी निकलकर पूरब दक्खिन तरफ बहती हैं वही जगह प्राचीन समयसे हरिद्वारके नामसे प्रसिद्ध है। प्राचीन कालके लोग हरिद्वारको वैकुण्ठका द्वार समझते थे। वास्तवमें यह स्थान ऐसाही सुन्दर और सुरम्य है कि इसे वैकुण्ठका द्वार कहते बनता है।

तरह तरहके सुन्दर फूलों और फलोंसे सजी हुई हरिद्वारकी उपत्यका प्रकृति देवीकी विहार-वाटिका या प्रकृति देवीके घूमने फिरने और आनन्द मनानेका बगीचा जान पड़ता है। इसी स्थानका प्राकृतिक सौन्दर्य्य प्राचीन आर्योंके हृदयमें कविता का रस पैदा करता था। हजारों वर्ष पहले इसी जगह गङ्गाके किनारे बैठकर महर्षि लोग तरह तरहके छन्दोंमें सामवेद गाया

करते हैं। इसीसे हरिद्वार आजदिन परम पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है और साधु महात्मा यहां रहकर योग की साधना किया करते हैं।

o o • o o

सन् १७७४ ईस्वीके फरवरी महीनेमें एक दिन संध्याके समय कोई आदमी हरिद्वारके किसी टीलेपर आंखें बन्द किये बैठा ध्यान कर रहा था। उसके आगे होमका कुण्ड बना हुआ था जिसमें आग जल रही थी। ध्यान करनेवालेके दोनों गाल आंसुओंसे भीग गये थे। उसकी उमर कोई साठ सत्तर वर्षकी थी तोभी वह हृष्टपुष्ट और मजबूत था। सारे शरीरमें भस्म लगा हुआ था। कमरमें केवल एक लंगोटी थी। कभी कभी उसके मुंहसे दो एक बात भी निकल पड़ती थी पर वह बात पास खड़ा होकर भी कोई समझ नहीं सकता था। कुछ देरके बाद उसने स्पष्ट शब्दोंमें कहा—

"हा परमेश्वर! यह जीवन वृथा गया।"

कुछ देर चुप रहकर वह फिर बोला—

"शास्त्रका अध्ययन करनेसे केवल अभिमान उत्पन्न होता है। शास्त्र पढ़कर भी मनुष्य अपनेको पहचान नहीं सकता।"

फिर कुछ देरतक आंखें बन्द किये रहनेके बाद उसने कहा—

"मनुष्य मात्र ईश्वरके सैन्य हैं। इस संसारमें सभीको सैनि पुरुष बनना पड़ेगा। ईश्वरने जिस बातके लिये पैदा किया त्यागकर हमलोग वृथा जीवन बिता रहे हैं।"

"वृथा जीवन बिता रहे हैं" यह बात समाप्त होते न होते
छेसे कोई बोल उठा—

"वृथा जीवन बिता रहे हैं इसीसे तो ऐसे उपाय होते देख
हा हूं जिनसे संसारमें एक व्यक्ति भी जीवित न रहे।"

पहलेके कानोंतक इस दूसरे व्यक्तिकी बातें नहीं पहुचीं।
ह आखें बन्द किये अपनेही ध्यानमें डूबा रहा। स्वप्नकी अवस्था
ं सोनेवालेके मुखसे जिस प्रकार कभी कभी दो एक बात
नेकल आती है उसी प्रकार उसके मुँहसे भी ऊपर लिखी बातें
नेकल रही थीं।

यह दूसरा व्यक्ति गङ्गाजीके दूसरे किनारेसे नदीमें हलकर
स पार आया था। नदीमें अधिक जल नहीं था। इस पार
आकर पहला व्यक्ति जिस पहाड़ पर बैठा था उसीकी ओर वह
धीरे धीरे बढ़ने लगा और पहलेको यह कहते सुनकर कि
"वृथा जीवन बिता रहे हैं" उसने कहा—"यह जीवन वृथा है
इसीसे तो ऐसे उपाय होते देखता हूं जिनसे संसारमें एक व्यक्ति
भी जीवित न रहे।"

यह दूसरा पुरुष जो अभी आया था बहुतही दुबला पतला
था। इसकी हड्डियां सूखी हुई थीं। इसे चलते फिरते देखकर
यह ज्ञान पड़ता था कि मानो हवाके जोरसे इसका सारा शरीर
हिलता डोलता है। इसका चेहरा मनुष्यकी तरह था तोभी
वह मनुष्य नहीं मनुष्यकी छाया कहते बनता था। ऐसे लोग
कि इस संसारमें भूत आदिका होना मानते हैं इसे देखकर

अवश्य प्रेत समझते होंगे। ध्यानसे हूये हुए पहले व्यक्तिके निकट पहुंच और जोरसे हंसकर इसने कहा—

"ठाकुर, अब किस बातकी चिन्ता करते हो? इस बार बड़ा भारी शुभ सम्वाद लाया हूं। बहुत बड़ी लड़ाई छिड़ी है। निश्चय है कि सब देशोंके लोग इससे कट मरेंगे।"

प्रथम व्यक्तिका ध्यान टूट गया। सहसा नींद टूट जानेसे जिस तरह आदमी चौंकता है उसी तरह चौंक और पीछे पलटकर उसने देखा।

दूसरेने कहा—"ठाकुर, क्या सोच रहे थे? शायद अभी तक मेरी बात तुम्हारे कानों तक नहीं पहुंची। बड़ा भारी शुभ सम्वाद है। बड़ी लड़ाई होगी। इस युद्धमें भी क्या संसारके सब मनुष्य न मर मिटेंगे?"

पहला व्यक्ति अभी तक एक दृष्टिसे चुपचाप दूसरेकी ओर देख रहा था। कुछ देरके बाद बहुत धीमे स्वरमें उसने आपही आप कहा—

"हा परमेश्वर! शोक दुःख आदि सांसारिक झंझटोंके आगे मनुष्यको सदा हार मानना पड़ता है। ज्ञानलाभ शास्त्राध्ययन आदि किसीसे मनुष्य दुःख दरिद्रताके विषमय फलसे छुटकारा नहीं पा सकता।"

दूसरा। ठाकुर, मैं तुम्हारी इस सांसारिक झंझटोंकी बात सदासे सुनता आया हूं। मैंने स्वयं भी बाल्यावस्थामें शास्त्र पढ़ा और सीखा है। मेरा नाम वामेश्वर है। यह बड़ कठि

विद्ध सब मैं जानता था। अब ज़रा मेरे मतलबकी भी सुनलो।
इस दूसरे व्यक्तिका नाम वाणेश्वर था और उस पहले महा-
पका श्रीनिवास। श्रीनिवास एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र पण्डित
और वाणेश्वर बङ्गदेशमें उत्पन्न हुआ था। सात आठ वर्ष
कलकत्तेमें दोनों एक दूसरेसे मिले थे। पश्चात् आपहो
देदारकी ओर चले आये थे।

श्रीनिवासने वाणेश्वरसे पूछा — "इस समय कहांसे आ रहे हो?"

वाणेश्वर। यह बात पीछे बताऊंगा। एक शुभ सम्वाद लाया
। पहले उसे सुनलो।

श्रीनिवास। (मुस्कुराकर) कैसा शुभ सम्वाद?

वाणेश्वर। बड़ी भारी लड़ाई छिड़ी है। यदि मरहठोंने इसेलों
र साथ दिया तो इस युद्धकी आग सौ वर्षमें भी नहीं बुझेगी।
सो युद्धसे मेरे मनकी बात पूरी होगी। अवश्य इस बार संसार
सब मनुष्योंका नाश होगा।

श्रीनिवास। मूर्ख, अब भी तेरे शिरसे यह भूत नहीं उतरा?
तने दिन तक कितने देशों और तीर्थोंमें भ्रमण किया तौभी
वत्त ठिकाने नहीं आया?

वाणेश्वर। ठाकुर, इस बातको जाने दो। पहले यह बत-
ताओ कि मरहठे इस युद्धमें किसीका साथ देंगे या नहीं?

श्रीनिवास। यह मैं क्या जानूं? तुम महाराष्ट्र देशमें भी
गये थे?

वाणेश्वर। क्या मैं तुम्हारी तरह एक जगह बैठा रहता हूं?
कभी महाराष्ट्र देशमें, कभी मैसूरमें, कभी हैदराबादमें, कभी दे-

दलोंमें, कभी अवधमें—इसी तरह अनेक देशोंमें घूमा करताहूं

श्रीनिवास। इतना क्यों घूमते हो? जरा अपनी ओर तो देखो कितने दुबले होगये हो।

वागेश्वर। घूमनेका और कोई मतलब नहीं है। जहां जाता हूं वहां वहांके राजाओंको युद्ध करनेकी राय देता हूं उनसे कहता हूं—वाह! युद्ध करो, इससे तुम्हारा राज बढ़ेगा। पहले मेरी बात सुनकर ये हंसते हैं, पर असलमें करते वही हैं जो मैं कहता हूं। देखते नहीं पिछले तेरह वर्षोंके बीच कितनी जगह लड़ाइयाँ हुईं?

श्रीनिवास। तुम क्या समझते हो उन लोगोंने तुम्हारेही कहनेसे युद्ध आरम्भ किया?

वागेश्वर। चाहे वे अपनीही इच्छासे लड़ते हों या मेरे कहनेसे इससे मतलब नहीं। मेरी मनोकामना सिद्ध होनी चाहिये। संसारके सब मनुष्योंके मर जानेहीसे मेरी आशा पूरी होगी।

श्रीनिवास। संसारके सब मनुष्योंके मर जानेसे तुम्हें क्या लाभ होगा?

वागेश्वर। ऐसा होनेसे जगत्‌के सब प्रकारके दुःख और कष्ट दूर हो जायँगे। एकका मरना और दूसरेका जीवित रहना अच्छा नहीं है। सारी पृथ्वीके एकबारही नष्ट हो जानेहीमें भलाई है। यदि ऐसा होगा तो किसीके मनमें कोई दुःख नहीं रह सकेगा।

श्रीनिवास। सारी पृथ्वीके लोगोंने क्या तुम्हारे साथ कोई अपराध किया है जो तुम उनकी बुराई सोचते हो?

दाणेश्वर। मनुष्यके समान भयानक जन्तु और कोई नहीं है। बाघ भालू आदि कोई जीव मनुष्यके समान निठुर नहीं होते। सर्पमें भी कृतघ्नता पाई जाती है पर आदमीमें नहीं। आदमी बड़ा अकृतघ्न होता है।

श्रीनिवास। यदि मनुष्य ईश्वरको दी हुई प्रकृतिकी रचा कर सके तो वह देवजीवन लाभ कर सकता है। हमारे समाजमें जो कुरीतियाँ फैली हुई हैं उन्हींसे हमलोग इतने नीच और खराब हो रहे हैं।

बाणेश्वर। मनुष्य देवजीवन लाभ कर सकता है, देवता हो सकता है, यह मैं बहुत दिनोंसे सुनता आता हूं, पर आजतक मैंने किसीको भी देवता होते नहीं देखा। मैं खूब जानता हूं कि मनुष्यके समान दुष्ट जन्तु इस संसारमें और कोई नहीं है। बाघ भालू आदि हिंसक जन्तुओंकी अपेक्षा मनुष्य सौगुना अधिक निठुर होता है। इसीसे भिन्न भिन्न देशोंके राजाओंमें लड़ाई लगाकर मैं संसारसे मनुष्योंका नामही मिटा देना चाहता हूं।

श्रीनिवास। तुम एकदम पागल हो गये हो! ये जो राजे महाराजे आपसमें लड़ रहे हैं सो क्या तुम्हारे कहनेसे? क्यों तुम पागलकी तरह देश देशकी धूल फांकते फिरते हो? तुम कुछ दिन मेरे पास रहो, मैं तुम्हारे सिरसे यह भूत उतार देनेकी चेष्टा करूंगा।

बाणेश्वर। मैं एक घड़ी भी यहां नहीं रुक सकता। जहां कहीं बैठता हूं मेरा चित्त दोही चार मिनटमें वहांसे घबरा उ-

ठता है। तुरन्त उठकर दूसरी जगह जानेकी इच्छा होती है इसीसे लोग कहते हैं कि मेरे सिरपर भूत सवार है।

श्रीनिवास। मैं सच कहता हूं, तुम्हारे सिरपर अवश्य भू सवार है। भूत और कुछ नहीं है। मनुष्यका चित्त जब एक ओर लग जाता है, दूसरी बात उसे सूझतीही नहीं और उस लिये वह रात दिन हैरान रहता है, तब उसपर भूत सवार हो कहा जाता है। संसारके सब लोग मर जायँ यह चिन्ता सद तुम्हें घेरे रहती है। दूसरे किसी विषय या दूसरी किसी बातक ओर तुम ध्यान नहीं दौड़ा सकते। एक घड़ी किसी जगह बै नहीं सकते। इसीलिये लोग समझते हैं कि तुम्हारे सिर पर भू सवार है।

वाणेश्वर। अच्छा तो ठाकुर, अब विदा होता हूं। अधिक नहीं ठहर सकता।

श्रीनिवास। जरा और ठहर जाओ। अभी दो एक बा मुझे तुमसे कहनी है।

वाणेश्वर। अब नहीं रुक सकता।

श्रीनिवास। तो अब किधर जाओगे?

वाणेश्वर। रुहेलखण्ड जाऊंगा।

श्रीनिवास। रुहेलखण्डमें क्या काम है?

वाणेश्वर। वहीं तो लड़ाई होगी।

श्रीनिवास। कहिले लोग किसके साथ युद्ध करेंगे?

वाणेश्वर। वजीर शुजाउद्दौला और अंगरेज एक ओर हैं, ... दूसरी ओर।

वाणेश्वरकी इस बातसे दुःखित होकर श्रीनिवासने आपही
[illegible]प कहना आरम्भ किया—

"हा परमेश्वर, देशकी अवस्था कैसी बिगड़ गई है। कोई
[illegible]जा या नवाब अपने राज्यको उत्तमतासे चलाने या प्रजाका
[illegible]ख दूर करनेका उपाय नहीं करता है। सभी केवल दूसरोंका
[illegible]ाज्य छीन लेनेकी चेष्टा कर रहे हैं। ये लोग वह काम कर रहे
[illegible] जो इनको नहीं करना चाहिये। अन्तमें सब अपने राज्यसे
[illegible]ी हाथ धोयेंगे।"

श्रीनिवासकी बात समाप्त होतेही वाणेश्वरने जोरसे हँस-
कर कहा—

"क्यों ठाकुर, अब तो तुम भी वही कहने लगे जो मैं कहता
था। मैं तो पहलेहीसे कहता आता हूं कि मनुष्य बड़ा दुष्ट
जानवर है। ऐसा दुष्ट जीव और कोई नहीं। एक एक नवाब
या राजाके यहां दो दो सौ तीन तीन सौ बेगमें या रानियां हैं, तिस-
पर भी वह पर-स्त्रीका सतीत्व नाश करनेकी चेष्टा करनेसे नहीं
चूकता। एक एक नवाब या राजाके कोषमें करोड़ों रुपये
मौजूद हैं, उसका राज्य बहुत बड़ा है, तौभी दूसरोंके राज्य और
धनकी ओर उसकी दृष्टि सदा दौड़ाही करती है। नरहिंसक
जानवर भयानक जङ्गली जन्तु भी ऐसा नहीं करते। शेर
भालू आदि जानवर अपना पेट भरनेके लिये जीवहत्या करते
हैं। शेर जब एक जीवको मारकर खाने बैठता है तब दूसरेकी
ओर ध्यान नहीं देता। परन्तु आवश्यकता न रहने पर भी म-
नुष्य हजारों खून कर डालता है। मारनेमें कुछही क्यों न लिया

हो पर इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य सबसे बढ़कर निठुर जीव होता है ।"

श्रीनिवास । भाई, अपनी दुर्दशा देखकर दूसरोंको दोष नहीं लगाना चाहिये । हमारी तुम्हारी दुरवस्था हमारी तुम्हारी भूल या उस कामके न करनेसे हुई है जो हमको करना चाहिये । जो मनुष्य इस संसारमें अपनी कर्त्तव्यका पालन करता है और न्याय तथा सत्यका रास्ता कभी नहीं त्यागता उसे दुःख और कष्ट नहीं भोगना पड़ता ।

वागेश्वर । ठाकुर, ऐसी बातें सुननेको मेरा जी नहीं चाहता । मैं अब जाता हूं । ठहर नहीं सकता । (जोरसे हँसकर) सिर परका भूत चञ्चल हो उठा है ।

श्रीनिवास । रुहेलखण्ड जानेसे तुम्हें क्या लाभ होगा ?

वागेश्वर । इस लड़ाईमें कितने आदमी मरते हैं इसका हिसाब जोड़नेके लिये जाता हूं । बिना इसके जाने यह क्योंकर मालूम होगा कि यह पृथ्वी कितने दिनमें मनुष्य-रहित हो जावेगी । इधर मेरी आयु भी पूरी हो चली है । सिर पर यह भूत सवार है इसीसे अभीतक चलता फिरता हूं । यदि यह न होता तो अबतक कभी इस संसारसे चला गया होता ।

श्रीनिवास । मैं नहीं जानता था कि अपनी दुर्बलता का हाल तुम जानते हो । अब समझ गया ।

वागेश्वर । (खूब हँसकर) ठाकुर मैं सब जानता हूं । न्याय दर्शन सब शास्त्र मैंने पढ़े हैं । परन्तु इस समय......

यह कह और हाथ मलकर वाघेश्वरने दुःखित स्वरमें फिर कहा—"हाय! स्त्री पुत्र कन्या कहां है इस समय उन्हींको चिन्ता लगी हुई है।"

इसके उपरान्त वाघेश्वर जल्दी जल्दी वहांसे चला जाने लगा। श्रीनिवासने दौड़कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—"तुम जाते हो तो तुम्हें कोई रोक नहीं सकता। पर मेरी एक बात सुनलो।"

वाघेश्वर। कौनसी बात?

श्रीनिवास। महीने दो महीनेके बाद एक बार फिर मुझसे मिलना।

"रुहेलखण्डका युद्ध समाप्त होतेही मैं यहां लौट आऊंगा।" —यह कहकर वाघेश्वर दोही चार मिनटमें श्रीनिवासकी दृष्टिसे दूर निकल गया।

दूसरा परिच्छेद।

रुहिलखण्ड।

अवध और कुमाऊं पर्वतके बीच गङ्गाजीके पूर्व ओर जो लम्बा चौड़ा देश पहले कुमादारके नामसे प्रसिद्ध था वही अठारहवीं शताब्दिमें रुहेले सर्दार अलीमोहम्मदके सर्दारी पानेके साथही साथ रुहेलखण्डके नामसे पुकारा जाने लगा। रुहेलखण्डका राज्य अवधसे मिला हुआ है। वजीर सफदरजङ्गके समयसे अवधके नवाबोंकी रुहेलखण्ड पर अधिकार करने

जिस कारणसे रुहेलोंमें आपसकी फूट पैदा हुई और जिस पापसे उनका राज्य नष्ट भ्रष्ट हुआ उसका हाल संक्षेपमें यहां नहीं लिखनेसे इस उपन्यासमें लिखी हुई कई प्रधान प्रधान बातें अच्छी तरह पाठकोंकी समझमें नहीं आवेंगी। इसलिये इस परिच्छेदमें वही सब इतिहाससे सम्बन्ध रखनेवाली बातें लिखी जाती हैं।

सन् १६७२ में शाहआलम और हुसेनखां नामक दो भाई कुताहार (वर्त्तमान रुहेलखण्ड) में रहा करते थे। ये दोनों अफगानी थे। कभी कभी ये लोग देहलीके बादशाहकी मातहती में सिपहगरी भी किया करते थे। इनमेंसे बड़े भाई शाहआलमके दो लड़के थे। बड़ेका नाम दाऊदखां और छोटेका हाफिज रहमतखां था। दाऊदखांने कुमाऊं राज्यकी सेनाकी अफसरी पाकर कई बार अपने मालिककी बड़ी खैरख्वाही की। पर मालिकने उसके परिश्रम और स्वामिहितैषिताका पूरा पूरा आदर नहीं किया। इस बातसे निरुत्साहित होकर दाऊदखांने नौकरीसे इस्तीफा देनेका विचार किया। इस्तीफेकी बात सुनकर मालिकने उसके दोनों हाथ पांव कटवा डाले। इस कष्टसे दाऊदखांकी मृत्यु हुई। उसका छोटा लड़का अलीमोहम्मद भी पिताकी तरह लड़ाका और बहादुर था। उसने पक्का इरादा कर लिया कि एक न एक दिन अपने पितृवैरीका विनाश अवश्य करना चाहिये।

पिताके मरनेके बाद अलीमोहम्मदने मुरादाबादके फौजदार अजमतुल्लाखांकी मातहतीमें सिपहगरी आरम्भ की। जब

अज़मतुल्लाका भी देहान्त होगया। तब थोड़ा मौका पाकर उसने अलीमोहम्मदने मुरादाबादके आसपासके कई स्थानों पर अधिकार कर लिया। धीरे धीरे उनके आदमियोंकी गिनती बढ़ने लगी। आदमियोंकी तादाद बढ़नेके साथ उसके अधिकारकी भी उन्नति होती गई।

मुरादाबादके पास देहलीके बादशाहके मीरबख्शी इमदादुल-मुल्ककी बहुत बड़ी जागीर थी। लोगोंके द्वारा इमदादुलमुल्कको मालूम हुआ कि उसकी जागीरका भी कुछ हिस्सा अलीमोहम्मदने अपने अधिकारमें कर लिया है। यह सुनतेही क्रुद्ध होकर अलीमोहम्मदको दमन करनेके लिये उन्होंने कुछ फौज भेज दी। इमदादुलमुल्ककी भेजी हुई सेनाके साथ अलीमोहम्मदने घोर युद्ध किया। अन्तमें जीत भी उसीकी हुई। इमदादुलमुल्ककी ओरके प्रायः सब सिपाही काट डाले गये।

इस बातसे रञ्ज होकर इमदादुलमुल्कने बादशाहको लिखा कि अलीमोहम्मद बागी है उसे उचित दण्ड मिलना चाहिये। बादशाहके कर्मचारियोंमें परस्पर शत्रुता थी। हरेक दूसरेकी बुराई सोचता था, दूसरेको नुकसान पहुंचानेकी चेष्टा करता था। अलीमोहम्मदकी गिरफ्तारीके लिये सैन्य जाते देख वजीर कमरुद्दीनने हाथ जोड़े हुए खड़े होकर कहा—"जहांपनाह, मेरी एक अर्ज है उसे सुन लीजिये। अलीमोहम्मद खराब आदमी नहीं है। मीरबख्शी इमदादुलमुल्ककी भेजी हुई फौजने उसे निहायत तकलीफ पहुंचाई इसीसे वह लड़ाई करने पर लाचार हुआ। कानूनन् वह सजावार नहीं हो सकता।"

बादशाहने वज़ीरकी बात सुनकर सेनाको रोक लिया। इधर अवसर पाकर अलीमोहम्मदने मीरबख़्शी इमदादुलमुल्ककी सब जागीर अपने अधिकारमें करली। इसके बाद सैयदुद्दीन नामक एक राजविद्रोहीको गिरफ्तारीके लिये बादशाहने सेना भेजी। वज़ीर कमरुद्दीनने अलीमोहम्मदको लिखा कि तुम भी इस सेनाके साथ शामिल होकर बागीके पकड़नेका उद्योग करो।

अलीमोहम्मदने इस पत्रके पानेके साथही बड़े आग्रहके साथ बादशाही सैन्यसे मिलकर सैयदुद्दीनको गिरफ्तार किया। बादशाहने अलीमोहम्मदकी इस राजभक्तिसे सन्तुष्ट होकर उसे नवावकी उपाधि और साथही बहुतसी जमीन दी।

परन्तु दिनोंदिन अलीमोहम्मदकी क्षमता और कीर्त्ति बढ़ते देखकर वज़ीर कमरुद्दीनके मनमें अनेक तरहकी शङ्काएँ पैदा होने लगीं। अन्तमें अपने एक विश्वासी मित्र राजा हरानन्दको मुरादाबादका सेनापति नियुक्त कर कमरुद्दीनने उनसे कहा कि आप कृपा करके अलीमोहम्मदके कामोंको सदा जांचकी दृष्टिसे देखते रहियेगा।

राजा हरानन्दने मुरादाबाद पहुंचतेही अलीमोहम्मदके जिम्मे जो बादशाही कर बाकी पड़ा था उसे तलब किया। इस बातने धीरे धीरे दोनोंमें विवाद आरम्भ हुआ। अन्तमें अलीमोहम्मदने युद्धमें राजा साहबको परास्त किया। बेचारे राजा हरानन्दका इस युद्धमें प्राण भी गया।

कोई राजा हरानन्द वज़ीर कमरुद्दीनके बड़े भारी प्रियपात्र थे।

इनके मारे जानेकी बात सुनकर वज़ीर साहब बड़े क्रोधमें आ
और बहुत शीघ्र अपने पुत्र मीर मन्नूको उन्होंने अलीमोहम्म
को गिरफ्तारीके लिये मुरादाबाद भेजा।

मन्नू अपने साथी सिपाहियोंके साथ दूसरे दिन मुरादाबा
पहुंच गया। परन्तु सहसा अलीमोहम्मद पर आक्रमण करने
साहस उसे नहीं हुआ; अलीमोहम्मदने भी सहसा उसपर आ
क्रमण नहीं किया। दोनों ओरकी सेनाएँ एक दूसरेके थोड़े अन्त
पर टिकी रहीं। पीछे अलीमोहम्मदके यत्नसे दोनोंमें सं
होगई। अलीमोहम्मदने वज़ीर कमरुद्दीनके पुत्रके साथ अपन
एक कन्याका विवाह कर दिया और साथमें बहुत कुछ दहे
भी दिया।

वज़ीर कमरुद्दीनके साथ अलीमोहम्मदका यह सम्बन्ध ह
जानेके बाद उसकी क्षमता और अधिकारमें और भी दृढ़ता आ
गई। अफ़गानिस्तानमें रुहेला नामक एक सम्प्रदाय है। अली
मोहम्मद भी रुहेला था। इसलिये अपने इस नवीन राज्यक
नाम उसने रुहेलखण्ड रखा और अपनेको रुहेलखण्डका नवा
प्रसिद्ध किया।

इस प्रकार रुहेलखण्डमें अपना राज्य दृढ़ करके अलीमो
हम्मदने अपने पितृवैरी कुमायूं-नरेशको दण्ड देनेकी इच्छासे
सैन्यके साथ उसके राज्यमें प्रवेश किया। राजा इस चढ़ाईसे
पातेही राज्य छोड़कर अपने परिवारके सहित कहीं　　उसे
अलीमोहम्मदने बिना युद्ध किये राजमहलमें पहुंच　　बार
सब धन सम्पत्ति लूट ली।

कुमाऊँसे लौटते समय अलीमोहम्मदके साथियों और अवधके नवाब सफदरजङ्गके लोगोंमें कुछ छेड़छाड़ होगई। सफदरजङ्गके लोग कुमाऊँके पास किसी स्थानमें शालके पेड़ काट रहे थे। छेड़छाड़ होने पर इन सबको मार भगाकर अलीमोहम्मदके साथियोंने सब पेड़ोंको आप ले लिया।

नवाब सफदरजङ्गने अलीमोहम्मदके इस अन्याय व्यवहार की बात सुनकर देहलीमें बादशाहके पास अभियोग उपस्थित किया और कहा कि अलीमोहम्मद राजविद्रोही है, उसे प्राणदण्ड मिलना चाहिये। बादशाह सफदरजङ्ग पर बड़ी कृपा रखते थे। उसके अनुरोधसे उसको और सैन्यको अपने साथ लेकर वे स्वयं अलीमोहम्मदको प्राणदण्ड करनेके अभिप्रायसे मुरादाबाद प्रस्थानित हुए। इस बार वजीर कमरुद्दीन किसी तरह अलीमोहम्मदको नहीं बचा सके।

परन्तु अलीमोहम्मद बड़ा बुद्धिमान् आदमी था। वह खूब जानता था कि देहलीके बादशाह और अवधके नवाब दोनोंके साथ युद्ध करके जीतकी आशा नहीं की जा सकती। इसलिये उसने इनके साथ युद्ध नहीं किया बल्कि वह बादशाहकी शरणमें चला गया। बादशाहने सन्तुष्ट होकर उसका प्राण विनाश नहीं किया परन्तु कैद करके वे उसे देहली ले गये।

सफदरजङ्गने आशा की थी कि यदि बादशाह सभासत अलीमोहम्मदके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा दे देंगे तो हम सहजमें रुहिलखण्ड राज्य पर अधिकार कर लेंगे। परन्तु इस आशाका कोई फल नहीं हुआ।

बादशाहने अलीमोहम्मदकी गिरफ़ारीके बाद रुहेलखण्डके निकट गङ्गाजीके पश्चिम तरफ सैन्यका पड़ाव डलवा दिया। यह छावनी इसलिये डाली गई कि जिसमें रुहेलोंकी सेना गङ्गापार उतर कर अलीमोहम्मदको क़ैदसे छुड़ानेके लिये देहली न जा सके। पर रुहेली सेना अपने सर्दारको बहुत चाहती थी और उसपर बड़ी भक्ति तथा श्रद्धा रखती थी। जब रुहेलोंने देखा कि बादशाही फ़ौज छावनी डाले रास्तेमें पड़ी है तब वे कुछ दक्खिन हटकर गङ्गापार उतरे और अलीमोहम्मदके उद्धारके लिये देहलीमें पहुँचकर रातभरके वास्ते राजमहलके पास किसी बागमें ठहर गये। दूसरे दिन सुबहको शाही महलके द्वारपर पहुँच कर उन्होंने कहा कि अलीमोहम्मदको छोड़ दो नहीं तो सारा महल लूट लेंगे।

इनकी ऐसी वीरता देखकर वज़ीर क़मरुद्दीन और स्वयं बादशाहको बहुत डर मालूम हुआ। बहुत वादानुवादके बाद इनके साथ यह बन्दोबस्त हुआ कि अलीमोहम्मद अपने पुत्र फ़ैज़ुल्ला तथा अब्दुल्लाको जमानतके तौर पर देहलीमें रहने दे तो उसे छुटकारा मिल सकता है पर तौभी वह रुहेलखण्ड नहीं जाने पावेगा बल्कि बादशाहकी ओरसे सरहिन्दमें जाकर उसे वहांका कर वसूल करके ख़ज़ानेमें देना पड़ेगा। दोनों पक्षवालोंने इस बातको स्वीकार किया। अलीमोहम्मद जमानतमें अपने पुत्रोंको देहलीमें छोड़कर सरहिन्द चला गया। उसके सैनिक रुहेलखण्ड लौट गये।

अलीमोहम्मदके सरहिन्द पहुँचनेके कुछही दिन बाद अर्थात् १७४४ ईसवीमें अहमदशाह अब्दालीने देशपर आक्रमण किया। वजीर कमरुद्दीनने अपने लड़के मीर मन्नू तथा फैजुल्ला और अब्दुल्लाको साथमें लेकर अहमदशाहके मुकाबिलेके लिये लाहोर की यात्रा की। लाहोर पहुँचनेके बादही अकस्मात् कमरुद्दीनकी मृत्यु हो गई। उसके पुत्रों तथा फैजुल्ला आदिने इस मृत्युकी बातको छिपाकर अहमदशाहके साथ युद्ध किया। तीन बार लड़ाई हुई, तीनोंही बार अहमदशाह परास्त हुआ। परन्तु अन्तिम अर्थात् चौथी बार उसकी जीत होगई। तब मीर मन्नू तथा अब्दुल्ला आदिने उसे बहुत धन रत्न देकर देश छोड़कर चले जानेपर राजी किया। अहमदशाह असंख्य धन रत्न और साथही अलीमोहम्मदके दोनों पुत्रोंको जमानतमें लेकर तुरन्त कन्दहार लौट गया।

इस घटनाके बाद सरहिन्द छोड़ और रुहेलखण्डमें आकर अलीमोहम्मदने फिर अपने राज्यका शासन करना आरम्भ किया। परन्तु अधिक परिश्रमके कारण अब वह प्रायः रोगी रहा करता था। उसे इस समय इस बातकी चिन्ता होने लगी कि यदि मैं मर गया तो मेरे राज्यको [illegible] करेगा।

अलीमोहम्मद केवल [illegible] टके मा-
नसिमेंहा [illegible] तोंमें भी

[illegible] ज्यका भार

छोड़कर चला जाऊंगा तो सम्भव है कि उनकी अदूरदर्शिता और नासमझीसे राज्यके प्रधान प्रधान लोग बागी हो जायँ अथ उनमेंसे एकका पक्ष लेकर दूसरेसे झगड़ा करें। इसलि जिसमें कि भविष्यमें किसी तरहकी दुर्घटना न होने पावे उर एक प्रकारकी प्रतिनिधि गवर्नमेण्ट (Representative Gover ment) स्थापित करनेका बन्दोबस्त किया। राज्यके हरेक अ सर और सेनापतिके हाथमें राज्यशासन-सम्बन्धी एक न ए काम दे देनेका उसने निश्चय किया। उसने सोचा कि हरे अफसर और सेनापतिके ऊपर राज्यशासन-सम्बन्धी कोई न को भार रहनेसे राज्यमे किसी तरहका उपद्रव नहीं खड़ा होने प वेगा। यदि इनमें आपसमें झगड़ा भी होगा तो एक केवल दूस का दर्जा छीन लेनेकी चेष्टा करेगा; सारे राज्यके नष्ट करनेक विचार कोई नहीं करेगा।

इन बातोंको सोचकर अलीमोहम्मदने अपने लड़कों अपने राज्यके हिस्से किये। उसके पुत्रोंमें अब्दुल्ला और फैजुल बालिग थे। पर वे अभीतक जमानतमें कन्दहारमें पड़े थे। सअ दुल्लाखां, मोहम्मदयारखां, मुर्तजाखां और अल्लाहयारखां नाबालि थे। अलीमोहम्मदने अपने चचा हाफिज रहमतखां को इन नाब लिग लड़कोंका रक्षक नियुक्त किया और मरनेसे कुछ दिन पह रियासतके सब कार्यकर्त्ताओंको बुलाकर उनमेंसे हरेकको राज्यशासन सम्बन्धी कोई न कोई भार सुपुर्द किया।

हाफिज रहमतखांके साथही साथ उसने दुन्दीखांको भ अपने पुत्रोंका रक्षक नियुक्त किया। इसके सिवा सेनापतिक

द भी उसीको सौंपा। नियादतखां और सलावतखांको आय
व्ययका हिसाब जाँचनेवाला बनाया और फतेहखांको घरकी
व्यवस्थाका भार सौंपा। इन कई लोगोंके अतिरिक्त इस अवसर
पर सफदरखांने बख्शीका पद प्राप्त किया।

परन्तु इस बन्दोबस्तके अनुसार हाफिज रहमतखांही सब
बड़े राज प्रतिनिधि हुए। हाफिज साहब लोगोंमें बड़े धार्मिक
प्रसिद्ध थे। रुहेलखण्डके सभी लोग उनको धर्म धुरंधर तथा पुराना
आदमी समझकर उनको बहुत मानते थे।

अलीमोहम्मदकी मृत्युके बाद कई वर्षतक अच्छी रीति
रुहेलखण्ड राज्यका शासन होता रहा। प्रजाओंके दिन ब
सुख और आनन्दसे कटते रहे। खेती और वाणिज्यकी भी र
खण्डमें विशेष रूपसे उन्नति हुई।

किन्तु व्यक्तिविशेषकी स्वार्थपरता विश्वासघातकता और स्व
अपना अधिकार करनेकी इच्छा सदा संसारमें दुःख कष्ट औ
उपद्रवोंका प्रचार करती है। जबतक मनुष्य स्वार्थपरता नहीं छो
ड़ेगा तबतक इस संसारसे दुःख कष्ट आदिका नाम नहीं मि
टेगा। हाफिज रहमतखांकी खुदगरजीनेही सुख शान्तिसे भ
हुए रुहेले राज्यमें विनाशका बीज बोया। हाफिज साहबने इस
अवसर पर अपनेको इस पद और अपनोंही इच्छाके अनुसा
राज्यप्रबन्ध करना आरम्भ किया। इस बातसे राज्यके दूसरे ब
बड़े लोग उनसे क्रमशः असन्तुष्ट होने लगे।

कई वर्षके बाद अलीमोहम्मदके दोनों बड़े लड़के फैजुल्ला
और अब्दुल्लाखां कन्दहारसे अपने देशको लौटे। ये दोनों हाफि

थे। पर हाफिजने इनको भी राज्यशासनका पूरा पूरा अधिकार नहीं दिया। और तो क्या—अलीमोहम्मदके वसीयतनामेके अनुसार इनको इनके हिस्सेकी जायदाद देनेके समय भी उन्होंने इनके छोटे भाइयोंका अधिक पक्षपात किया।

हाफिज रहमतखांके प्रति, दिन पर दिन, रुहेलोंकी भक्ति विश्वास और श्रद्धा कम होती गई। सो हाफिजकी अदूरदर्शितानेही रुहेलोंकी जातीय एकताकी जड़ काटी।

इस समय मरहठे सिपाही भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रदेशोंपर आक्रमण कर रहे थे। हाफिज रहमतखांने सुना कि मरहठी सेना बहुत शीघ्र रुहेलखण्ड पर भी आक्रमण करनेवाली है। इस समाचारके सुननेसे उनके चित्तमें बहुत शङ्का उत्पन्न हुई। आखिर अपनेको निरुपाय समझकर उन्होंने अवधके नवाब शुजाउद्दौलासे सन्धि करली। सन्धिका शर्तनामा इस प्रकार लिखा गया कि यदि मरहठे रुहेलखण्ड पर आक्रमण करें तो नवाबसाहब अपनी सेनाके द्वारा रुहेलखण्डवालोंकी सहायता करें और रुहेले इस सहायताके बदलेमें उन्हें चालीस लाख रुपया दें। यही सन्धि रुहेले राज्यके विनाशका दूसरा कारण हुई। शत्रुके हाथसे स्वदेशकी रक्षा करने अथवा देशके अत्याचारी राजाको सिंहासनसे उतारनेमें अपनेही देशके लोगोंके बलका भरोसा करना चाहिये। विदेशी राजाकी सहायता लेना केवल अपनी दुर्बलता का परिचय देना है।

इस सन्धिके स्थापित होनेके बादही मरहठा सेनापति रुहे लखण्ड पर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगा। पर उनके

रुहेलखण्डमें प्रवेश करनेसे पहलेही बरसात आरम्भ होगई। मरहठे सिपाही गङ्गापार उतरकर रुहेलोंके प्रदेश पर हमला नहीं कर सके। इसलिये उस साल वे अपनेको देशको लौट गये। शुजाउद्दौलाको सेनाके द्वारा रुहेलोंको सहायता नहीं करना पड़ी।

लेकिन तिसपर भी शुजाउद्दौलाने हाफिज रहमतखांसे वह चालीस लाख रुपया मांगा जो शर्तनामेमें लिखा था। हाफिजने रुपया देनेसे बिलकुल इनकार नहीं किया किन्तु किसी दूसरे समय देनेका बहाना करके वे दिन बिताने लगे। इधर रुहेलखण्डके दूसरे प्रधान प्रधान लोगोंने यह रुपया देना एकदम अस्वीकार किया।

दो साल तक कई बार मांगने पर भी शुजाउद्दौलाको रुपया नहीं मिला। तब मनही मन उसने विचार किया कि रुहेलोंने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार रुपया नहीं दिया इसलिये युद्धमें उनको परास्त करके एकदम उनका राज्य छीन लेना चाहिये।

शुजाउद्दौला रुहेलखण्ड पर अधिकार करनेके लिये पहलेही से चेष्टा कर रहा था। इस समय उसे अपना अभिप्राय सिद्ध करनेका अच्छा सुयोग मिल गया। परन्तु दूसरेकी सहायताके बिना अपने सैनिकोंके भरोसे रुहेलखण्ड पर आक्रमण करनेका साहस उसे नहीं हुआ। इसलिये उसने अङ्गरेजोंसे मदद मांगी। उस समय वारेन हेष्टिंग्स साहब अङ्गरेजोंके बड़े लाट थे। शुजाउद्दौलाने उनको लिखा कि यदि आप रुहेलखण्ड राज्य पर चढ़ाई करनेमें सैन्य द्वारा मेरी सहायता करें तो मैं आपके सैनिकों

कि लड़ाईके लिये दो लाख दस हजार रुपया मासिक दूंगा और यदि रुहेलोंसे जीत होगी तो इनाममें और दर चालीस लाख रुपया आपके पास भेजूंगा।

अङ्गरेज स्वभावहीसे कुछ लालची होते हैं। शुजाउद्दौला यह पत्र देखकर वे सब बहुत प्रसन्न हुए। पर जल्दी यह नि नहीं कर सके कि क्या करना चाहिये।

महीनेमें दो लाख दस हजार और इनाममें चालीस लाख इतनी भारी रकमको सीधी छोड़ देना लालची अङ्गरेजोंके लि बहुत कठिन काम पड़ा। पर रुहेलोंने उनके साथ कभी कि तरहका अपराध नहीं किया था। इसलिये वे निश्चय नहीं क सके कि कौनसा बहाना करके उनको युद्धमें पराजित करने लिये सेनाएँ भेजी जायँ। कलकत्तेकी कौन्सिलमें इस बातक बहस होने लगी पर दो तीन महीनेमें भी कोई बात स्थिर नहीं की जा सकी। सो, इस रकमके पानेके लिये लुटेरा बननेके सिव कोई दूसरा उपाय नहीं था।

जब शुजाउद्दौलाने देखा कि ईस्ट-इण्डिया कम्पनी लगात देर कर रही है तब उसने गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्सको लिख कि आप मेरी राजधानीमें आकर मुझसे मिलें। १७७२ ईसवी अगस्त महीनेमें हेस्टिंग्स साहब नवाब शुजाउद्दौलासे मिलने लिये युक्तप्रदेशमें आये।

बनारसमें हेस्टिंग्स और शुजाउद्दौलाकी मुलाकात हुई। वहाँ रुहेलखण्डपर चढ़ाई करनेके लिये वारेन हेस्टिंग्स शुजाउद्दौलाके

विशेष रूपसे उत्साहित करने लगा *। आखिर इसी जगह दोनों ने एक शर्तनामा लिखा। इतिहासमें इस शर्तनामेका नाम बनारसका शर्तनामा लिखा है। पर हेष्टिंग्स बड़ा चतुर और धूर्त्त आदमी था। इस शर्तनामेमें उसने रुहेलखण्डकी चढ़ाईका नामो निशान भी नहीं आने दिया। सन्धिपत्रमें केवल यही बात लिखी गई कि अवधके नवाब शुजाउद्दौला अपने राज्यमें कुछ अङ्गरेजी सैन्य रखना चाहते हैं। इस सेनाके खर्चके लिये वे हर महीने दो लाख दस हजार रुपया दिया करेंगे। अतएव ईष्टइण्डिया कम्पनीकी एकदल सेना उनके यहां बराबर नियुक्त रहेगी।

हेष्टिंग्सने विलायतकी पार्लिमेण्टमें रुहेलखण्डके युद्धकी खबर भी नहीं की। भला वे किस साहससे ऐसी वाहियात खबर विलायत भेजते? रुहेलोंके साथ अङ्गरेजोंका कभी भी कोई झगड़ा नहीं हुआ था। अनर्थक बेचारे निरपराध लोगोंका खून करनेके लिये सैन्य भेजना लुटेरापनके सिवा और क्या कहा जा सकता है?

किन्तु बनारसका शर्तनामा लिखे जानेके समय और भी ऐसी कई बातें तय हुई थीं जिनका उल्लेख इस स्थानपर नहीं होनेसे अगले परिच्छेदोंमें आनेवाली बहुतसी आवश्यक बातें

---

* "I found him (says Warren Hastings in his appeal to the Directors dated 3rd. December 1774) still equally bent on the design of reducing the Rohillas *which I encouraged*, as I had done before, by dwelling on the advantages which he would derive from its success"

अच्छी तरह पाठकोंको समझमें नहीं आवेगी। इसलिये उसको भी संक्षेपमें यहां लिखे देते हैं।

इस सन्धिपत्रके द्वारा हेष्टिंग्सने इलाहाबाद और कोरा नामक दो जिलोंको पचास लाख रुपयेपर शुजाउद्दौलाके हाथ बेचा। बनारसका राज्य उस समय राजा चेतसिंहके अधिकारमें था। नवाब शुजाउद्दौलाने इस राज्यके खरीदनेकी विशेष इच्छा प्रकाश की। पर हेष्टिंग्स साहब इस बार चेतसिंहको उनके पैतृक राज्यसे वञ्चित करनेपर राजी नहीं हुए। राजा चेतसिंहके राज्यके सम्बन्धमें पहले जो कुछ बन्दोबस्त हुआ था वही कायम रहा।

इलाहाबाद और कोरा ये दोनों जिले चेतसिंहके राज्यमें शामिल थे। ईष्टइण्डिया कम्पनीका इन दोनों जिलोंपर कभी कोई अधिकार नहीं था। परन्तु इस समय देशके असली राजा मुगल बादशाहकी क्षमता एकदम घट गई थी। सारा हिन्दुस्थान इस समय लावारसी मालकी तरह था। ऐसे समयमें ईष्टइण्डिया कम्पनीके गवर्नर वारेन हेष्टिंग्स बिलकुल भारतवर्षको बेच डालते तोभी शायद उनको रोकनेवाला कोई दिखाई नहीं देता।

देहलीका वर्त्तमान बादशाह शाहआलम ऊपर लिखे दोनों जिलोंका प्रकृत अधिकारी था। सन् १७६५ ईस्वीमें जिस समय उसने ईष्टइण्डिया कम्पनीको बिहार बङ्गाल और उड़ीसाकी दीवानी प्रदान की थी उस समय इलाहाबादके सन्धिपत्रमें

यह स्थिर हुआ था कि कम्पनी हर साल शाहआलमको छब्बीस लाख रुपया राजस्व देगी और यदि कोई आदमी इन दोनों जिलोंसे उसे बेदखल करना चाहेगा तो वह उसको (अर्थात् बादशाहको) ओरसे लड़कर उसको मार भगावेगी।

इस सन्धिपत्रके लिखे जानेके समयसे अबतक बराबर इलाहाबाद और कोराका कर बादशाहको मिलता रहा। पर इधर मरहठोंने उसे अपने पक्षका अवलम्बन करनेपर लाचार किया। शाहआलममें स्वयं कुछ करनेकी क्षमता तो थी ही नहीं इसलिये लाचार होकर उसे मरहठोंके हाथकी कठपुतली बनना पड़ा। मरहठोंने उसे देहलीके सिंहासन पर बैठाकर इलाहाबाद कोरा तथा और कई प्रदेशोंका कर अपने लिये लिखवा लिया।

इस बातसे ईस्ट इण्डिया कम्पनीको बादशाहसे इलाहाबाद और कोराका अधिकार ले लेनेका अच्छा सुयोग मिल गया। बादशाहने मरहठोंका साथ क्यों दिया, इसी बहानेसे कम्पनीने बङ्ग बिहार और उड़ीसाका छब्बीस लाख रुपया वार्षिक कर एकदम बन्द कर दिया। इधर वारेन हेष्टिंग्सने इलाहाबाद और कोराको पचास लाख रुपयेपर नवाब शुजाउद्दौलाके हाथ बेच डाला।

हेष्टिंग्स साहब इस प्रकार शुजाउद्दौलाके साथ सब बन्दोबस्त करके कलकत्ते लौट गये। यहां पहुँचनेके साथही रुहेलखण्डकी लड़ाईके लिये जेनरल चेम्पियनको सेनापतिके पदपर नियुक्त कर उन्होंने सेनाके सहित अवधमें भेजा। इधर कौंसिलके दूसरे मेम्बरोंसे कहा कि नवाब शुजाउद्दौलासे बहुतसी प्राइवेट बातें करनी हैं इसलिये उनके पास अपना एक विश्वासी आदमी

रायोडरके ओरपर रहना चाहिये। कौंसिलके मेम्बरों
प्रस्तावको स्वीकार किया। मिस्टर साहब बम्बईके र
नियुक्त हुए। इस समय कलकत्तेकी कौंसिलके और भी
मेम्बर थे। रेगुलेटिंग ऐक्ट (Regulating Act) से च
जेनरल क्लेवरिङ्ग कर्नल मानसन और फिलिप फ्रान्सिस थे
मेम्बर अभीतक कलकत्तेमें नहीं पहुंचे थे। यदि वे वहां
गये होते तो शायद हेस्टिंग्स साहबको रुहेलोंके साथ युद्ध
लिये शुजाउद्दौलाके पास सैन्य भेजनेकी ताकत नहीं रहती

तीसरा परिच्छेद ।

युद्ध-प्रसङ्ग ।

युद्धका नाम सुनतेही बहुतसे सीधे स्वभावके लोगोंके
घृणा उत्पन्न होती है। पर इस घृणाके साथ उनका स्वाभ
सीधापन भी मिला रहता है। ऐसे लोगोंके मतके अनुसार श
लाभ करनाही मनुष्यके जीवनका एकमात्र उद्देश्य है। इस
जिसमें कि संसारसे लड़ाई झगड़ा और अशान्ति सदा दूर
ऐसाही उपदेश वे लोगोंको किया करते हैं।

परन्तु क्या युद्ध संसारमें सदा अशान्तिकाही बीज रोपण
रता है? क्या उस अशान्तिसे कभी शान्त फल पैदा नहीं हो
हमारे समझमें तो युद्धकी आग अशान्ति दुर्नीति अत्याचार
स्वार्थपरताको भस्मीभूत कर संसारके नैतिक वायु और
साफ तथा शुद्ध करती है। यदि इस जगत्में समय समय

दर न मचता, विद्रोहको आग न भड़क उठती, तो मनुष्यको घण भरके लिये भी जरा चैन न मिलता।

यह संसार जब कभी दुर्नीति और अत्याचारसे भर जाता है तभी लड़ाईको आग भड़ककर इन सबको भस्म कर डालती है। सब मनुष्योंको स्वाधीनताकी रक्षाके लिये तथा जगत्‌को दासत्व-शृङ्खलसे मुक्त करनेके लिये जो युद्ध होते हैं उनसे लाभके सिवा कभी हानि नहीं होती।

परन्तु जो लोग धन अथवा और किसी बातके लोभसे युद्ध करते हैं—लोगोंकी स्वाधीनता छीननेके लिये संसारमें लड़ाईकी आग भड़का देते हैं—वे सचमुच ही लुटेरे होते हैं। ऐसी लड़ाइयोंको यदि लोग घृणाकी दृष्टिसे देखें तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

सच्चे वीर पुरुष युद्धक्षेत्रमें कभी न्यायका पथ नहीं छोड़ते। प्राचीन समयमें भारतके योद्धे शत्रुको खाली हाथ देखकर कभी उसपर आक्रमण नहीं करते थे। शत्रु यदि शरणमें आकर उनसे क्षमा मांगता था तो वे उसपर तलवार नहीं उठाते थे। परन्तु इहिले युद्धमें देशी तथा विलायती वीरोंने हारे और भागे हुए शत्रुओंका क्या कन्याओं तकको दण्ड देनेमें त्रुटि नहीं की। इन लोगोंने वीरत्वमें प्रमत्त होकर क्या वृद्ध, क्या युवती, क्या बालिका, क्या कुलवधू, सबके आगे अपने दुर्दान्तपनका परिचय दिया। शायद इनमें कुछ अधिक वीरता थी नहीं तो इनकी संग्राम तृष्णा इतनी प्रबल क्यों होती ?

प्राचीन समयमें भारतवर्षके सच्चे वीर पुरुषोंमें आपसमें जहां जहां लड़ाइयां हुई थीं वे सब जगहें आजकल पुण्यक्षेत्र कही जाती हैं । संग्रामक्षेत्रमें प्रत्येक योद्धा अपने अपने हृदयकी स्वार्थपरता और विषयासक्तिको भूलकर केवल अत्याचार और अन्याय व्यवहारके रोकनेके लिये प्राण देनेको तैयार होता था। उसकी मानसिक अवस्था उस समय उसको देवताके तुल्य बना देती थी । इसीसे उन सब देशहितैषी युद्धार्थियोंके मिलनेकी जगहें आजदिन परम पवित्र तीर्थस्थान माने जाते हैं । इस संसारमें मनुष्यकी प्रकृतिका देवत्व संग्रामक्षेत्रमेंही दिखाई देता है। संग्राम-क्षेत्रमें मनुष्य अपने आपको भूलकर सच्चे कर्मयोगी के समान पवित्र जीवन लाभ कर सकता है ।

परन्तु क्या रुहेले युद्धके इतिहासमें भी मनुष्यकी प्रकृतिका वही देवभाव दिखाई देता है ? जब रुहेलोंको मालूम हुआ कि नवाब शुजाउद्दौलाने अङ्गरेजोंकी सहायता ली है और अङ्गरेज सेनापति जेनरल चेम्पियन अवधमें पहुंच गये हैं तब वे बहुत भयभीत हुए। इससे पहले उनमें जो आपसकी फूट थी वह इस नई विपत्तिको देखकर मिट गई। सबने परस्पर एकता करली और चालीस लाख रुपया चन्दा करके हाफिज रहमत खांको दिया। हाफिजने नवाबकी शरणमें जाकर उससे क्षमा मांगी और प्रतिज्ञाके अनुसार चालीस लाख रुपया देना चाहा। पर नवाब शुजाउद्दौलाने रुपया लेनेसे इनकार किया। रुपयेका केवल बहानाही बहाना था। उसका असल मतलब तो रुहेलों ९ उनके राज्यको अपने अधिकारमें लेलेनेका था।

हाफिज रहमतखांने देखा कि शुजाउद्दौला किसी तरह इको नहीं टालना चाहता। तब उन्होंने बड़े यत्न और परि-श्रमसे चार हजार लड़ने भिड़नेवाले आदमी संग्रह किये। और ो बहुतसे बूढ़े जवान तथा बालक अपने देशकी रक्षाके लिये ाण देनेपर तैयार हुए।

१७७४ ईस्वीकी १७ वीं अप्रैलको हाफिज रहमत और फैजु ाखांने सेनाके सहित यात्रा की। गङ्गा नदीके पश्चिम किनारे र कट्टार नामक कसबेमें सेनाएं इकट्ठी हुईं। २२ वीं अप्रैलको अङ्गरेज सेनापति जेनरल चेम्पियन भी शाहजहांपुर पहुंच गये। रन्तु २३ वींसे पहले लड़ाई नहीं आरम्भ हुई।

२३ वीं अप्रैलको दोनों ओरकी सेनाओंका सामना हुआ। हाफिज रहमत और फैजुल्लाने इस युद्धमें बड़ी बहादुरी दिखाई। रुहेलोंमें लड़ने मरनेवाले चार हजारसे अधिक आदमी नहीं थे, परन्तु उनसे शत्रुओंकी संख्या उनसे चौगुनी थी। अपनी ओरके लोगोंकी गिनती कम होनेके कारण जिसमें कि रुहेले सिपा-हियोंका उत्साह कम न होने पावे इसलिये हाफिज रहमत और फैजुल्लाखां हाथियोंकी पीठसे उतरकर सबके आगे होके लड़ने लगे। रुहेले सिपाही इनकी बहादुरीसे बहुत उत्साहित हुए और बड़े जोर शोरके साथ अपने शत्रुओंका संहार करने लगे। इधर जेनरल चेम्पियन इनकी वीरता देखकर बहुत विस्मित हुए। यह सोचकर कि थोड़ेसे देशमें इन्हें बड़ी भारी विपत्ति का सामना करना पड़ेगा उनके मनमें बहुत चिन्ता उत्पन्न हुई।

परन्तु कुछही देरमें रुहेलोंकी बारूद गोली प्राय: समाप्त गई। तलवार चलानेमें वे बड़े निपुण थे । उनके पास अधि तोपें बन्दूकें आदि आग उगलनेवाले हथियार नहीं थे। धि कर समय कम होनेके कारण वे इन सब चीजोंको अच्छी त इकट्ठा नहीं कर सके थे। इधर अङ्गरेजोंकी ओर गोले बारूद कोई कमी नहीं थी।

हाफिज रहमतखाने देखा कि घोर विपद पड़ना चाह है। उन्होंने फैजुल्लासे सलाह करके अङ्गरेजोंके दक्षिण ओर घ कर आक्रमण करनेका विचार किया। अभीतक अङ्गरेजी सेः पश्चिम तरफ होकर लड़ रही थी। रुहेली सेना पूर्वकी ओर थ हाफिज रहमतने आधे मिनटके अन्दर अपनी सेनाको कुछ दक्षिण हटाकर फिर पूरब तरफ किया। तब रुहेले सिपाहियोंक अङ्गरेजोंके बाईं ओर होकर उनपर अच्छी तरह आक्रमण कर का अवसर मिल गया। इधर दूसरी ओरके सैनिक पश्चिममु थे। यह सुयोग पाकर रुहेली सेना एकबारही अङ्गरेजी सेन भीतरी प्रवेशकर तलवार बरसाने लगी। अङ्गरेजोंको तोपों काममें लानेका बिलकुल समय नहीं मिला।

पांच मिनटमें भी जेनरल चेम्पियन अपने तोपवाले सिपाहियों को दक्षिणमुख नहीं कर सके। इस अवसरमें हाफिज रहमत ोर फैजुल्लाने मस्त हाथियोंकी तरह अङ्गरेजी सेनामें घुसक बड़ी हलचल दमन किया। हाफिज रहमतने सोचा था कि ो सेनामें प्रवेश करके शत्रुओंको तोप चलानेका अवसर

नहीं मिलती, [illegible]

परन्तु नवाब शुजाउद्दौलाकी कुछ सेना थोड़ी दूरपर ठहरी हुई थी। अङ्गरेजोंको एकबारही सुस्त होते देखकर उसने पीछे से आकर रुहेलों सेनापर आक्रमण किया। इस समय फैजुल्ला और उसके साथी मुहब्बतखांने कुछ सेना दक्षिणमुख करके नवाब के सिपाहियोंको रोका। किन्तु इस अवसरमें जेनरल चैम्पियनने भी अपनी तोपोंको दुरुस्त कर लिया।

रुहेले सिपाही अब भी पछाड़ पछाड़ करके दोनों ओरकी सेनाओंमें घोर युद्ध कर रहे थे। केवल रुहेले युवक मुहब्बतखांनेही घोड़ेपर सवार होकर अकेले नवाबके दो सौ सैनिकोंको काट डाला। पर इसी समय एक बड़ी भारी दुर्घटना उपस्थित हुई। अकस्मात् हाफिज रहमतखांकी छातीमें तोपका एक गोला आकर लगा। बेचारे हाफिज वह चोट खाकर घोड़ेसे नीचे गिर पड़े। सेनापतिको गिरते देखकर सैनिक घबरा उठे। सैनिकोंको सम्हालनेके लिये फैजुल्लाने फिर पछाड़ पछाड़ करके अङ्गरेजी सैन्यमें प्रवेश किया।

अभीतक हाफिजकी मृत्यु नहीं हुई थी। उन्होंने फैजुल्लाको पुकार कर कहा—"अब उम्मीद नहीं है। मैदान छोड़कर औरतोंकी इज्जत बचानेकी कोशिश करो।"

इतना कहनेके साथही हाफिजकी बोली बन्द हो गई। उन की छातीके उस हिस्सेसे जहां गोला आकर लगा था लगातार खून बहने लगा।

बहादुर फैजुल्ला इतने पर भी निराश नहीं हुआ। हाफ़िज़ की बातों पर ध्यान न देकर और उनके दूसरे और तीसरे पुत्रों तथा मुहब्बतखांको साथमें लेकर उसने फिर अल्लाह अल्लाह करके अङ्गरेजी सेना पर आक्रमण किया।

प्रायः पचास अङ्गरेजोंने इकट्ठा होकर हाफ़िजके दूसरे पुत्र को पकड़ लिया। इधर एक गोली आकर मुहब्बतखांकी छाती में घुस गई। तब भी फैजुल्लाने अल्लाह अल्लाह करके अपने हे मित्रोंको उत्साहित करना चाहा। पर इस समय रुहेलोंकी गिनती घटते घटते बहुतही कम होगई थी। उसके पीछे केवल दो सौ आदमियोंने अल्लाह अल्लाह कहा। लाचार होकर इस बार फैजुल्लाको भी निराश होना पड़ा। अपने पास खड़े हुए हाफ़िज रहमतखांके सबसे छोटे लड़केसे उसने कहा—"अब चलिये; किसी तरह औरतोंकी इज्जत बचानेकी कोशिश करें।"

यह कहकर फैजुल्लाने पहले अपने सिपाहियोंके लिये रास्ता कर दिया, फिर वह आप भी हाफ़िजके पुत्रोंको साथमें लिये हुए घोड़े पर सवार होकर लड़ाईके मैदानसे निकल गया।

अंग्रेज और शुजाउद्दौलाके साथियोंकी जीत हुई। उन्होंने बड़े जोरसे चिल्लाकर जयध्वनि की।

चौथा परिच्छेद।

स्त्रीकी वीरता।

रुहेलो स्त्रियां ऐसी बहादुर थीं कि उनके पतियोंको कोई कभी

युद्धमें परास्त नहीं कर सकता। उन स्त्रियोंमें जातीयता पाई जाती थी और वे अपनेको वीरबाला वीरपत्नी तथा वीर-जननी मानती थीं।

रुहेलखण्डकी स्त्रियां पति पुत्र आदिके लड़ाई पर चले जानेके बाद बड़े आराम और निश्चिन्तताके साथ रहने लगीं। उनको किसी बातका डर या खटका नहीं था। रहताही क्यों? —उनको तो दृढ़ विश्वास था कि उनके पति पुत्र युद्धमें शत्रुओं-को अवश्यही परास्त करके घर लौटेंगे।

कोई माता अपने रोते हुए बच्चेको धीरज धराती हुई कह रही थी—"बेटा न रोओ। आज शाम तक तुम्हारे अब्बाजान जरूर लौट आवेंगे।" कहीं चार पांच स्त्रियां बैठी आपसमें तरह तरह की बातें करके जी बहला रही थीं। एक बूढ़ी औरत अपनी साथवाली स्त्रियोंसे कहती थी – "जब देहलीके बादशाहने अली-मोहम्मदको पकड़ कर अपने यहां कैद कर रखा था उस वक्त मेरे वालिद बहुत बड़ी फौज लेकर उसको कैदसे रिहा करने गये थे।"

मुहब्बतखांकी मा बड़े उत्साहके साथ कहती थी—"इस बार हाफिजको मालूम होगा कि मेरा "मुहब्बत" कैसा बहा-दुर लड़का है।"

इसी मुहब्बतखांके साथ हाफिज रहमतखांकी लड़कीका विवाह होना स्थिर हुआ था। परन्तु लड़ाई आरम्भ हो जानेके कारण यह सम्बन्ध रुक गया था।

किसी घरमें एक बूढ़ी मा और उसकी सोलह वर्षकी ख़ूबसूरत लड़की बैठी कुरान पढ़ रही थी। यह दोनों हाफ़िज़ रहमतउल्लाकी मा तथा कन्या थीं। ये दोनों बैठी युद्धमें शामिल होनेवालोंकी मङ्गल-कामना कर रही थीं। हाफ़िज़ कुमारीने कुरानमेंसे एक जगह यह टुकड़ा पढ़ा —"खुदा सबका ख़ालिक राज़िक और मालिक है। जो उसको पहचानते और मानते हैं उनके वह हमेशा साथ रहता है। दुनियाके लाखों आदमी मिलकर भी उनका कुछ नहीं बना सकते जिनपर खुदाकी मेहरबानी रहती है।"

जब हाफ़िज़की लड़कीने यह टुकड़ा पढ़कर सुनाया तो उसकी मा बहुत प्रसन्न हुई। उसने हंसते हुए कहा—

"तुम्हारे अब्बा बड़े परहेज़गार शख़्स हैं। खुदा ज़रूर उनके साथ है और वह बिलाशक उनको मदद करेगा।"

इस समय हाफ़िज़ कुमारीने अपनी मासे कुछ पूछना चाहा किन्तु लज्जाके कारण वह उस बातको मुंहके बाहर नहीं निकाल सकी। लाचार होकर कुछ देरके लिये वह चुप होरही।

पर वह बात जाननेके लिये उसका जी बहुत व्याकुल हो रहा था। आख़िर उसी बातको घुमा फिराकर उसने कहा—"अम्मा, लड़ाईमें जितने लोग गये हैं शायद सभी नेक और पाक परवरदिगारके माननेवाले हैं। क्या फैज़ुल्ला परहेज़गार नहीं हैं?"

माताने कहा—"सभी पर खुदाकी मेहरबानी है। क्योंकि सभी नेक और साफदिल हैं। मगर तुम्हारे वालिदमें जो नेकियां

यादातर पाई जाती है। उनमें जरा भी कोना व बुगज़ नहीं
। फैजुल्लाने चालीसके बदले अस्सी लाख रुपया देकर भी यह
गड़ा मिटाना चाहा था, मगर तुम्हारे अब्बाने यह राह पसन्द
हीं की। उन्होंने कहा, "फैजुल्ला, किसी बातका डर नहीं है।
दा हमारी मदद करेगा।"

लड़कीको अपनी माके जवाबसे सन्तोष नहीं हुआ। उसके
नमें जिस बातकी इच्छा थी वह पूरी नहीं हुई। आखिर लज्जा
मारे सिर झुकाये हुए डरते डरते उसे अपना मतलब साफ
ाफ कहना पड़ा। उसने कहा—

"क्यों अम्माजान, क्या मुहब्बतखां साफदिल और नेक आ-
मी नहीं है?"

कन्याका प्रश्न सुनकर माता मुस्कुरा उठी। जिस मतलबसे
टीने ये सवालात किये थे वह अब उसकी समझमें आगया। बड़े
यारके साथ उसने कहा — "बेटी! मुहब्बतका दिल सच्चो और
ाक मुहब्बतसे भरा हुआ है। जिसके दिलमें मुहब्बत होती है
दा हमेशा उसके साथ रहता है।"

इसी प्रकार घर घरमें रुहेली स्त्रियां तरह तरहकी बातें कर
रही थीं। इधर दिन बीत चला था। सन्ध्याके समय घायल सै-
निकोंके साथ फैजुल्लाने कसबेमें प्रवेश किया।

परम माननीय हाफिज रहमतखां अपने ज्येष्ठ पुत्रके सहित
संग्राममें [illegible] लोग युद्धमें परास्त हुए—यह भयानक
[illegible] घरघरमें हाहाकार-ध्वनि गूंज उठी।
[illegible] सिरपर वज्र गिर पड़ा।

ने खुदही फर्माया था कि यहांसे जाकर औरतोंकी इज्जत बचाओ
र्ना मेरी तो यही ख्वाहिश थी कि ताजीस्त अपने मुल्कके लिये
इकर अखीरमें उनका साथ देता। सिर्फ तुम सबकी इज्जत-
ाही ख्याल था जिससे यह काबिल नफरत जिन्दगी रखनी
ड़ी। खैर माफ करो।"

फैजुल्लाकी इस बातसे हाफिजकी स्त्रीका क्रोध और भी बढ़
या। उसने तड़पकर कहा—"क्या रुहेली औरतें भागकर अपनी
ज्जत बचावेंगी? नहीं नहीं,—बहादुर रुहेले लड़ाईमें मारे गये
 पर उनकी तलवारें अभीतक उनके मकानोंमें मौजूद हैं। देख
ह तलवार—यह चमकीली तलवार—क्या रुहेली औरतोंकी
ज्जत बचानेके काबिल नहीं है? जिसने बहादुर रुहेलोंके हाथमें
हकर दुश्मनोंका सर काटा और अभीतक हमारी इज्जतका बचाव
कया है वह क्या आज इन कम्बख्तोंके हाथसे हमें नापाकीज:
ोने देगी—तकलीफ उठाने देगी? भागनेका क्या काम है? तेज
लवारोंकी मददसे हमलोग अभी अपने मालिकों और बच्चोंसे
ा मिलेंगे। तू इनसान नहीं है, हैवान है। लड़ाईके मैदानसे पीठ
दिखाकर तूने बहादुर अलीमोहम्मदके नाममें धब्बा लगाया है।
अभी फिर वहां जा और वजीरका सर काटकर इस धब्बेकी गन्द-
गीको दूर कर।"

"अलीमोहम्मदके नाममें धब्बा लगाया" यह बात हाफिजकी
स्त्रीके मुँहसे निकलनेके साथही फैजुल्लाने अपनी कमरसे तलवार
निकालकर आत्महत्या करनी चाही। यह देखकर पीछेसे हा-

फिजकी छोटे लड़केने और आगेसे हाफिजको पोते उसे र हाथोंमें पकड़ लिया।

फैजुल्लाको इस तरह आत्महत्या करनेके लिये तैयार हाफिजपुत्रीके हृदयमें मातृस्नेह उत्पन्न हुआ। उसने अपनी तोका ढङ्ग बदल दिया और खींचकर अपनी गोदमें बैठा लिया। समय दोनोंहीको आंखोंसे आंसू बह रहे थे।

दिनभर संग्रामक्षेत्रमें युद्ध करते रहनेके कारण फैजुल्लाक चेहरा सूख गया था। हाफिजकी लड़कीने अपने भाई और फैज़ को बढ़िया शर्बत पिलाया और अपने हाथोंसे उनके खूनमें हुए शरीरको साफ किया।

युद्धमें जो सब रुहेले वीर मारे गये थे उनका नाम लेनेके स हाफिज रहमतके लड़केने मुहब्बतखांका भी नाम लिया। ब्बतकी मृत्युकी बात सुननेसे स्वर्णप्रतिमा हाफिज-कुमारीके ऊपर दुःख और कष्टके चिन्ह दिखाई देने लगे।

कुछ देरके बाद फैजुल्लाने कसबेकी सब स्त्रियोंसे भाग लिये तैयार होनेको कहा। बहुतसी औरतें भागनेका उद करने लगीं पर हाफिजकी स्त्रीने स्वामीकी क्रिया समाप्त f बिना रुहेलखण्ड छोड़नेसे बिलकुल इनकार किया। तब फैज़ लाचार होकर हजारों दूसरी औरतोंके साथ रुहेलखण्डसे ‍ कर पहाड़ोंमें चला गया। हाफिजकी स्त्रीको पहाड़पर ला लिये उसके छोटे लड़केको वहीं छोड़ता गया। माताकी आ के अनुसार हाफिजका कनिष्ठ पुत्र पिताकी लाश लानेके f

[हस्तिकी ओर चला। पर रास्तेमें शुजाउद्दौलाके साथियोंने उसे पकड़ लिया। सो, हाफिजको लाश वहीं संग्रामक्षेत्रमेंही पड़ी रही।

पांचवां परिच्छेद।

लुटेरापन ।

युद्ध समाप्त होनेके बाद नवाब शुजाउद्दौलाने अङ्गरेजोंको रुहेलखण्डके सब गांवोंके लूट लेनेकी आज्ञादी। एक एक दल सेना एक एक गांवमें पहुंचकर क्या वणिक्, क्या कृषक, क्या जमींदार,क्या रोजगारी, सबके मकानोंको लूटने लगी। गांवकी औरतोंके कान नाककी बालियां छीनकर उनके गहने कपड़े उतरवाने लगी। बहुतसी लज्जावती गृहस्थ स्त्रियां बिलकुल नङ्गी करके नवाबके खेमेतक पहुंचाई गईं। संसारके इतिहासमें ऐसा क्रूर आचरण बहुत कम देखनेमें आता है। लगातार चार पांच दिनतक अपने सिपाहियोंको ऐसाही बुरा व्यवहार करते देखकर जेनरल चैम्पियनके हृदयमें भी दया आई। उन्होंने यह वाहियात काम रोकनेके लिये वारेन हेस्टिंग्सके पास पत्र लिखकर उनसे अनुमति मांगी। परन्तु वारेन हेस्टिंग्सने उनके पत्रके उत्तरमें यह लिखा कि "अङ्गरेजी सेनाको नवाब शुजाउद्दौलाकी आज्ञाके अनुसारही काम करना होगा। शुजाउद्दौला जो कुछ करनेको कहें वह उसको अवश्य करना पड़ेगा। तुमको इस विषयमें रोकटोक करनेका कोई अधिकार नहीं है।"

जेनरल चैम्पियन हेस्टिंग्सका यह पत्र पाकर चुप हो रहे।

जो कईएक सैनिक पुरुष भेजे गये थे उनमें लिफटेनेण्ट टामसन और इनमाइन मिलविल आदि चार पांच अङ्गरेज तथा अमरसिंह वगैरह पचास देशी सिपाही थे। यहांपर अमरसिंहने हाफिजकी स्त्री और कन्याके भगानेका सुयोग नहीं पाया। एक तो स्वयं नवाब ने उनको गिरफतारीके लिये स्पष्ट आज्ञा दी थी दूसरे इनमाइन मिलविल और लिफटेनेण्ट टामसनके ऊपर इस यात्राका सब भार डाला गया था। फिर यह कब सम्भव था कि वे अमरसिंह जैसे एक हिन्दुस्थानीकी बात मानकर उनको भाग जाने देते?

सिपाहियोंने हाफिजके मकानपर पहुंचकर देखा कि बाहरके हिस्से बिलकुल खाली पड़े हैं। क्योंकि जनाने महलके जो दो चार नौकर अभीतक रुके हुए थे वे भी फौजके आनेकी खबर सुनकर भाग गये थे। सिपाहियोंने दर्वाजा तोड़कर अन्दर घुसना आरम्भ किया। हाफिजकी स्त्रीने सिपाहियोंको अन्दर आते देखकर समझ लिया कि ये सब हमी दोनोंके पकड़नेके लिये यहां आये हैं। सो भीतरके आगेवाले दो तीन कमरोंका दर्वाजा बन्द करके वह सबके पीछेकी कोठरीमें अपनी कन्याको गोदमें लिये हुए जा बैठी। माता और कन्या दोनोंकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। थोड़ी देरके बाद हाफिजकी स्त्री एक दूसरी कोठरीमें गई और वहांसे दो तेज छूरियाँ लेकर फिर इस कमरेमें लौट आई। इन छूरियोंमेंसे एकको उसने अपने बालोंमें रखा और दूसरीको सुन्दरी हाफिज कुमारीको लुत्फे सियहफामके अन्दर छिपाया। माका मतलब लड़कीकी समझमें नहीं आया। उसने सिसकती हुए पूछा—

" अम्माजान, बालोंके अन्दर छुरियाँ क्यों छिपाती हो ?
हाफिजको मांने कहा "बेटो यही मेरो आखिरो वसीयत है

अब भो माका अभिप्राय हाफिज-कुमारीकी समझमें न
आया। यद्यपि उसको उमर सोलह वर्षसे कम नहीं थो तो
विपद किसे कहते हैं यह वह नहीं जानती थो। इसलिये
होकर वह माके मुखको ओर देखने लगी।

उस समय हाफिजको स्त्रोने अपने उमड़ते हुए शोकके वेग
रोककर कहा—" बेटा, हर वक्त एकसा नहीं बीतता। ए
वह वक्त था जब तुम्हारी यह कम्बख्त मा छाती पर सुलाके तु
दूध पिलाती थी, तुम्हें देख देखकर खुश होती थी और तुम्हार
बलायें लेती थी। मगर आज तुम्हारी वही मा तुमसे खुदकुश
कराना चाहती है। बेटा घबराओ नहीं। यही जहरीली छु
तुम्हारी इज्जत बचावेगी। यही तुम्हारी अम्माकी आखिरी वसी
यत है, आखिरी मदद है। जाओ खुदा हाफिज।"

कन्याने कहा—" तो अम्मा, आओ अभी हमलोग छुरी मा
रकर अपनी जान देदें। बालोंके अन्दर छिपा रखनेकी क्या
जरूरत है ?"

हाफिजको स्त्री। यहां क्यों जान देंगी ? क्या हमलोग इनसान
नहीं हैं ? इनसानकी तरह जान देंगे। हाफिजकी औरत कुत्ते
बिल्लियोंकी मौत नहीं मरना चाहती। इस जहरीली छुरीसे प
हले दुश्मनोंका खून करना होगा। बगैर दुश्मनका खून किये
इस दुनियासे चला जाना ठीक नहीं। चाहे तुम्हारे हाथसे हो

मेरे हाथमें—उस नालायक वजीरकी मौत जरूर होगी। खबरदार, नवाब शुजाउद्दौलाकी मलिकुलमौतके सुपुर्द किये बगैर भूलकर भी खुदकुशी न करना।

कन्या। दुश्मनकी जिन्दगीका खातमा क्योंकर किया जायगा?

हाफिजकी स्त्री। जिस वक्त वह नालायक जाहिरी मुहब्बत दिखाकर प्यारी बेटीकी इज्जत बिगाड़ना चाहेगा उसी वक्त यह जहरीली कुरी नागिन बनकर उसके दिलमें डस लेगी। बेटा, याद रखना—जान देकर भी इज्जतका बचाव करना होगा। भूलना नहीं—तुम हाफिजकी लड़की हो, हाफिजके पाक खूनकी बनी हो।

यह कहकर माताने बारम्बार कन्याका मुख चूमना आरम्भ किया। कन्या माको देख देखकर रोने लगी। माने फिर साहसपूर्वक कहा—

"डर किस बातका है? तुम्हारे वालिदने अपनी रिआया और सल्तनतके लिये जान दी है। वे जरूर बिहिश्तमें जायेंगे और वहां ऐशो-आराम पायेंगे। जन्नतकी हूरें उन्हें अपना जलवा दिखादिखाकर खुश करेंगी। हम सब भी दो चार दिनमें यह दुनियवी बखेड़ा पाक करके उनसे जा मिलेंगे। तुम बेखौफ-"

हाफिजपत्नीकी बात समाप्त होते न होतेही सिपाहियोंने द्वार तोड़कर अन्दर प्रवेश किया। हाथमें तलवार लिये हुए हाफिजकी स्त्रीने उन सबको पुकारकर कहा—"खबरदार, हमारे

बदनसे हाथ न लगाना। अगर हमारेमेंसे किसीको चाहते हों तो हम अभी तुम्हारे साथ चलनेको तैयार हैं।"

हाफिजकी स्त्रीने गँवारी भाषामें ये बातें कही थीं। इसमें इन मेलविल और लेफटेनेण्ट टामसनने बिलकुल उनका मतलब नहीं समझा।

उस जगह अमरसिंह और जमादार आबिदअली भी उपस्थित थे। इनमें आबिदअलीने अच्छी तरह उन बातोंको समझ लिया और अमरसिंहने भी कुछ कुछ समझा। आखिर आबिदअलीने हाफिजकी स्त्रीका मतलब अपने अङ्गरेज अफसरोंको समझ दिया।

लेफटेनेण्ट टामसनने आबिदअलीकी बातोंकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। उसने अपने साथी मेलविलसे कहा—

"Dear Melville, this old woman is setting her cap for you. She is a pretty old girl. You may accept her offer if you please."—

प्रिय मेलविल, तुम्हारे ऊपर इस बुड्ढीकी दृष्टि पड़ी है। यह बड़ी खूबसूरत बुढ़िया है। यदि तुम्हारी इच्छा होतो तुम इसे अपने लिये ले सकते हो।"

टामसनकी बात सुनकर मेलविलने आपही आप कहा—"टामसन बड़ा दुष्ट आदमी है। शायद मुझे इस बुड्ढीको सुपुर्द कर आप इस सुन्दरी युवतीको लेगा। पर उसकी यह आशा वृथा है। नवाब साहबने स्पष्ट आज्ञा दी है कि हाफिज रहमतकी स्त्री और कन्याको स्वयं हुजूरके सामने उपस्थित करना होगा।

सके सिवा हुक्म हुआ है कि इनको पाल्कीके अन्दर बिठाकर ाना । शायद नवाब साहब स्वयं इनको रखेंगे।"—मनही मन ह सब सोचकर उसने टामसनसे कहा—

"Dear Thompson, these prizes are not for us, they re intended for the Nawab himself."

प्रिय टामसन, यह पुरस्कार हमलोगोंके लिये नहीं है। स्वयं वाब साहब इनको अपने पास रखेंगे ।

टामसन। Nawab has already in his seraglio three thousands and three hundred women. Does he want more.? नवाबके महलके अन्दर इस समय तीन हजार तीन सौ स्त्रियां है। क्या वे और चाहते हैं ?

मिलविल। Thompson, what a fool you must be ? The Qoran, the religious book of the Nawab, says that a man must have as many women as there are stars in the sky. टामसन, तुम कैसे नासमझ हो। नवाबको धर्मपुस्तक कुरान में लिखा है कि आकाशमें जितने सितारे है पुरुषको उतनो स्त्रियोंके साथ अवश्य विवाह करना चाहिये।

टामसन। "But the exact number of stars has not yet been ascertained. The best astronomer of our days have failed to ascertain it. How is the Nawab to know the exact number he requires according to the Qoran ? किन्तु आकाशमें कितने तारे हैं इसका अभी तक निश्चय नहीं हुआ है। वर्त्तमान समयके बड़े बड़े ज्योतिषी पण्डित इस बातका निर्णय

नहीं कर सके हैं। फिर नवाबको यह क्योंकर मालूम होगा कि, अपना धर्म पुस्तक कुरानके अनुसार उन्हें कितनी स्त्री रखनी चाहिये ?

मेलविल। So the best Persian scholar, our Governor Warren Hastings, has not yet been able to ascertain the exact number of women whom Nawab Meerjaffer had kept in his seraglio. In both the cases the number remains without end. हमारे गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स बड़े भारी फारसीदां हैं। पर नवाब मीर जाफरको कितनी बेगमें थीं इसका वे आज तक निर्णय नहीं कर सके। अन्तःपुरकी स्त्रियोंकी संख्या कोई नहीं जान सका है। नवाबोंकी बेगमोंकी गिनतीका अन्त भी कोई नहीं पा सकेगा।

टामसन। Dear Melville, I do not believe what you say is written in the Qoran. You have never read the Qoran. Have you ? प्यारे मेलविल, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम जो कुछ कहते हो वह कुरानमें लिखा है। तुमने तो कभी कुरानको पढ़ाही नहीं। या पढ़ा है ?

मेलविल। That drummer boy, Hassanali Khansama's son, told me it is written in the Qoran that a man must have as many women as there are stars in the sky. My Khansama Hassanali must be a great Arabic scholar. He says his *nomaz* six times a day, and his son, the drummer boy, must have given a very faithful account of the Qoran.

मेरे खानसामा हसनअलीके लड़के अर्थात् उस ताशेवाले छोकरे ने मुझसे कहा था "कुरानमें लिखा है कि आसमानमें जितने सितारे हैं मर्दको उतनी औरतोंके साथ निकाह पढ़वाना चाहिये।" हसनअली अवश्य बड़ा भारी धरबोदां होगा। उसके लड़केने भी जरूरही कुरानकी सच्ची बातें मुझसे कही होंगी।

टामसन। Does that drummer boy teach you the Qoran? Do you often read it with him? वह छोकरा क्या तुम्हें कुरान पढ़ाता है? क्या तुम उसके साथ बैठकर कुरान पढ़ा करते हो?

मेकविल। I never bother my head with the Qoran. Yesterday when we captured nearly thirty Rohilla women and dragged them naked to the Nawab' scamp sthe Nawab made them over to the soldiers, saying that that he has already kept one hundred women, and at present he wanted no more Out of those thirty women three were brought to me by that drummer boy. I told him I would not keep more than one. The boy entreated me to keep all the three, and said, "Huzoor, keep tham all. It is written in the Qoran that a man must have as many women as there are stars in the sky"—मैं कभी कुरान नहीं पढ़ता। वह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। कलकी बात है कि हमलोग तोस रुहेली औरतोंको पकड़ कर बिलकुल नङ्गी नवाबके हुजूरमें लेगये। नवाब साहबने फर्माया कि "मेरे पास एकसौ बेगमें मौजूद हैं इस वक्त मैं और नहीं चाहता।" यह

बाद कर उन्होंने उन लोगों स्त्रियोंको सिपाहियोंके सुपुर्द कर दिया। उन स्त्रियोंमेंसे तीनको वह तारीवाला छोकरा मेरे पास लाया था। मैंने उससे कहा कि मैं एकसे अधिक नहीं रक्खूंगा। तब वह बोला—"हुजूर, तीनोंहीको रख लिजिये। कुरानमें लिखा है कि आसमानमें जितने सितारे हैं मर्दको उतनी ही स्त्रीके साथ ब्याह करना चाहिये"।

टामसन। Then the Quran must be an excellent book an extraordinary book Fling away the Bible. Damn with the Bible. In this hot climate we must all follow the Quran to its very letter.—तब तो कुरान बहुत अच्छी पुस्तक होगी। दूर हो बाइबुल। चूल्हेमें जाय बाइबुल। इस गर्म देशमें हम सबको कुरानमें लिखे हुए धर्मको मानना चाहिये।

जिस समय टामसन और मेलविनमें ऊपर लिखी बातें हो रही थीं उस समय दूसरी ओर कुछ दूसराही दृश्य दिखाई दे रहा था। वहां दूसरीही तरहकी बातें हो रही थीं।

जिस कमरेमें हाकिजको स्त्री और कन्या बैठी थीं उसके अन्दर लेफटेनेण्ट टामसन, इनसाइन मेलविल, आविदअली जमादार और अमरसिंह, यही चार आदमी घुसे थे। लेफटेनेण्ट टामकिन और दफीनअली आदि दस बारह आदमी बाकी बाहरकी चीजें लूट रहे थे। इनके सिवा और और सिपाही यातो तम्बाकू पी रहे थे या इधर उधर मैदानमें टहल रहे थे।

जमादार आबिदअली भी हाफिजकी खोके कमरेमें प्रवेश कर बहुत देर तक वहां नहीं रहा। लेफटेनेण्ट टामसनकी आज्ञा पाकर वह पालकी और कहार लेनेके लिये बाहर चला गया। लेफटेनेण्ट टामसन, मेलविल और अमरसिंहही उस जगह ठहरे रहे।

हम पहलेही लिख चुके हैं कि किसीको स्त्रियोंके ऊपर अत्याचार करते देखकर अमरसिंह बहुत दुःखित होता था। जब उसने हाफिजकी खोके कमरेमें प्रवेश किया तब उसकी कन्याके सरल और पवित्र मुखको देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह बहुत देर तक चुपचाप कठपुतलीकी तरह एक दृष्टिसे उसकी ओर देखता रहा। फिर मनही मन सोचने लगा— "जान पड़ता है कि ऐसी सुन्दरी युवती इस संसारमें और कहीं नहीं होगी।" पर थोड़ीही देरके बाद उसपर पड़नेवाली विपत्तिका ध्यान आजानेसे उसे बहुत दुःख हुआ। ऐसी पवित्र मूर्त्ति नालायक कामी नवाब शुजाउद्दौलाके हाथोंमें पड़ेगी, यह चिन्ता उसे एकबारही असहनीय जान पड़ी। उस समय अमरसिंह बारम्बार आपही प्रश्न करने लगा।— "सच-मुचही क्या संसारमें परमेश्वर नहीं है? यह क्योंकर कहा जाय कि है? यदि वह होता तो ऐसी कोमलाङ्गी सुन्दरीको इसकी बुरी अवस्थामें न छोड़ता। इसका पवित्र मुख देखनेसे मनुष्यके हृदयमें इसके प्रति स्नेह और दयाका सञ्चार होता है, इसे नरपिशाचोंके अपवित्र स्पर्शसे बचानेके लिये प्राण देनेकी इच्छा होती है। फिर ईश्वरमें दयावान् होकर भी इसे इस तरह क्यों छोड़

दिया ? शायद इस संसारमें ईश्वर है पर वह दयावान् नहीं वह सर्वशक्तिमान् अवश्य है। यदि उसमें सब कामोंके करने की शक्ति न होती तो वह ऐसी हैलोके तुल्य रूपवतीको कभी न बना सकता। पर क्या वह बहुत निठुर है ? शास्त्रकारोंने तो उसे बहुत दयावान् कहा है। तो क्या शास्त्र झूठा है ? नहीं शास्त्र कभी झूठा नहीं हो सकता। व्यासिवास पण्डितने जो कुछ कहा है वह बहुत ठीक है। मनुष्य मनुष्यको रक्षा करे इस अभिप्रायसे ईश्वरने हरएक मनुष्यके हृदयमें दया और स्ने उत्पन्न किया है। विपत्तिसे मनुष्यके बचानेका उपाय उसने स सने पहलेहीसे स्थिर कर रखा है। फिर उसे दोष क्यों दें ? जो परमेश्वर बच्चा पैदा होनेसे पहलेही माताके स्तनमें दूध दे देता है वह निठुर कैसे कहा जा सकता है ? मनुष्य विपत्तिमें पड़े तो उसके साथी उसका उद्धार करें यही ईश्वरका उद्देश्य है। परन्तु इस संसारमें मनुष्य एक दूसरेकी सहायता प्रायः नहीं करते। प्रायः सभी अपने कर्त्तव्यका पालन करनेसे चूकते हैं इसलिये अन्तमें उनको अपने किये हुए कर्म्मोंका फल भोगना पड़ता है।"

अमरसिंह एकबारही आपेसे बाहर होकर ये सब बातें सो रहा था। लेफटेनेण्ट टामसन और मेलविल उसी तरह कुरानके बातें कर रहे थे। कभी कभी जोशमें आकर वे विचित्र नाट्य करने लगते और बड़े जोरसे बोल उठते थे। हाफिजकी लड़की टामसन और मेलविलको जोर जोरसे बातें करते देखकर कुछ डरी। वे अङ्गरेजीमें बातें करते थे इसलिये उनकी बातोंका मतलब

समझनेकी शक्ति तो उसमें नहीं थी, पर उनके चेहरे मोहरे और जोश खरोशको देखकर वह कांपने लगी और सरककर अपनी माके बहुत पास चली गई। हाफिजको स्त्री बिलकुल निडर थी। कन्याको कांपते देखकर उसने धीरेसे कहा—"डर किस बात का है! मौत सब तरद्दुदातको रफा कर देगी। बहुत जल्द हम-लोग इन तकलीफोंसे रिहा होंगे। मौतकी दवा तो हमलोगोंके पास मौजूदही है।"

बुढ़ियाकी यह बात टामसन या मिलविल किसीने नहीं सुनी। पर अमरसिंहके कानोंतक दो चार शब्द पहुँच गये। अमरसिंहका जन्म ऐसे देशमें हुआ था जहांकी भाषा बहुत सीधी सादी थी। इसीलिये वह रुहेलखण्डकी बोलचाल खूब अच्छी तरह नहीं समझता था। पर हाफिजकी स्त्रीके मुँहसे निकली हुई बातका कुछ अंश अनायासही उसकी समझमें आ गया।

"मौत सब तरद्दुदातको रफा कर देगी"—इस बातसे अमर-सिंहकी चिन्ता टूट गई। उसका चित्त जो कहांका कहां दौड़ गया था ठिकाने पर आ गया।

उस समय वह आपही आप सोचने लगा—"यह बात ठीक है। मृत्यु संसारके सब कष्टों सब यन्त्रणाओंको दूर कर सकती है। फिर मैं क्यों न मर जाऊं? इस अनित्य शरीरको मैं इस स्वर्गीया सुन्दरी हाफिज-कुमारीके उद्धारके लिये क्यों न देदूं? यदि ऐसा हो तो मृत्यु मेरे सब कष्टों और सब यन्त्रणाओंको दूर कर देगी। इसके सिवा जो अनित्य शरीर रोगी होकर अभी अभी मुर्दा हो सकता है, जिसको क्षण भरके लिये भी

रक्षा करने शक्ति मुझमें नहीं है, उसी तुच्छ देहके बदलेमें एक बड़ा उपकारी काम हो जायगा। मैं इन राक्षसोंके हाथसे इन बेचारी स्त्रियोंकी जान अवश्य बचाऊंगा। प्रतिज्ञा करता हूं कि इनके लिये अपना प्राण अवश्य दूंगा।

"मेरे इस जीवनके रखनेका कोई फल नहीं है। मेरा हृदय रात दिन शोकसे जला करता है। इस संसारमें राज्यपद पाकर भी मैं सुखी नहीं हो सकता। पिता माता का शोक, स्त्रीका शोक, बहिनका शोक—सदा मुझे दुःख दिया करता है। सिवा इसके, जिसने पिताके समान बनकर मेरे जीवनकी रक्षा की—जहां तक बना आदरके साथ मेरा पालन किया, जिसके यहां रहकर मैंने तलवार पकड़ना सीखा, वह भी उस साल बकसरके युद्धमें मारा गया। ऐसी अवस्थामें मेरा यह जीवन रखना वृथा है। किसी अच्छे काममें इसे उत्सर्ग कर देनेसे अन्तमें सद्गति मिलेगी। हाय—हाय। ऐसा कौन दिन होगा जब मुझे अपनी प्यारी माताके दर्शन प्राप्त होंगे? यदि एकबार भी उसे देख पाता तो पांव पकड़ कर कहता मा, तेरे इस अभागे पुत्रने डरके मारे उन दुष्टोंके हाथोंसे तेरी रक्षा करनेकी भी चेष्टा नहीं की।" मनही मन इन बातोंको सोचता सोचता अमरसिंह पागलकी तरह एकबारही 'मा—मा' चिल्ला उठा।

हाफिजकी स्त्रीने सिर उठाकर आश्चर्यके साथ उसकी ओर देखा। आंखें चार होतेही दोनोंके हृदयमें एक दूसरेके प्रति सद्भाव उत्पन्न हुआ। हाफिजकी स्त्रीके मनमें यह बात जम गई कि अमरसिंह शत्रु नहीं मित्र है।

अमरसिंह फिर अपने तई सम्हालकर सोचने लगा—"ठीक है, केवल मृत्युही मुझे सुखी कर सकती है। विशेषकर इन निःराश्रया स्त्रियोंके बचावके निमित्त प्राण देनेसे मृत्यु मेरे लिये स्वर्गका द्वार अवश्य खोल देगी। इससे मेरे पुराने पापका भी प्रायश्चित्त हो जायगा।

"पर इनको क्योंकर बचाऊं? पचास आदमी इनके पकड़नेके लिये यहां आये हैं। इनमेंसे मेरे सिवा सभी इनको नवाब शुजाउद्दौलाके पास ले जानेकी चेष्टा करेंगे। उनचास आदमियोंसे लड़कर भी क्या मैं इनका बचाव कर सकूंगा? क्यों नहीं? पिताासे जैसी शिक्षा प्राप्त की है उससे इन दो चार अङ्गरेजोंको मैं बातकी बातमें टुकड़े टुकड़े करके फेंक दे सकता हूं। परन्तु ऐसा करके भी इनको नहीं बचा सकूंगा। ये स्त्रियाँ हैं और अच्छे कुलकी हैं। मेरे साथसाथ पैदल नहीं चल सकेंगी। इस समय देशमें जगह जगह नवाबी और अङ्गरेजी सेनाएं घूम रही हैं। इन पचास सिपाहियोंको परास्त करने पर भी कोई लाभ नहीं होगा। बन्दूकों और तोपोंकी सहायतासे दस बारह आदमी अनायासही मुझे मार डालेंगे और इनको पकड़ लेंगे। तोपें और बन्दूकेंही अङ्गरेजोंकी एकमात्र ताकत और सहायक हैं। यदि ये लोग तलवारों या बर्छियोंके भरोसे लड़ते तो एकबार अवश्य इनका सामना करता।

"पर यहां ऐसी चेष्टा करना वृथा है। इससे केवल मेरा प्राण जायगा, इन स्त्रियोंका कोई उपकार नहीं हो सकेगा। उनचास आदमियोंके हाथसे अकेले इनको बचाकर निकल जाना

बहुत कठिन काम है । तब क्या करूं ? यदि इनसे सहाय क
रनेसे कोई उपाय निकल आवे तो किसी तरह काम निकल
सकता है । पर मेरी गंवार भाषा इनकी समझमें नहीं आवेगी,
इनकी बातें मैं भी अच्छी तरह नहीं समझ सकूंगा । वि
पक्षके सौ अंगरेजोंके पास इनको पकड़नेके लिए भेजा गया हूं
मुझे अपना शत्रु समझती होगी । यदि मैं इनसे कुछ पूछूंगा
ये कभी मेरी बातोंका उत्तर न देंगी । ये नवाबकी बेगमें हैं
नवाबजादियां हैं । दुःख पड़नेसे क्या मेरे जैसे क्षुद्र सिपाहीके स
बातें करेंगी ? मैं एक साधारण सिपाही मात्र हूं । मेरे सम
सैकड़ोंही इनके गुलाम रहे होंगे । तब क्या किया जाय ? इ
साथ बातें करनेका उपाय क्या है ? दूसरे जो सिपाही इन
बातें समझ सकेंगे और मेरे मनका भाव इनको समझा स
उनसे अपना अभिप्राय कहनेसे सब खेल बिगड़ जायगा । अ
इसी समय कैद करके मैं नवाबके पास पहुंचाया जाऊंगा । हा
कैसी भारी विपत्ति पड़ी है । हमारी पल्टनोंमें क्या एक
ऐसा आदमी नहीं है जिसपर विश्वास करके मैं अपने हृदय
भेद उसके आगे कह सकूं ?

"धन्य परमेश्वर । है—अवश्य है । वृद्ध छत्रसिंह मेरे स
आया है । वह इस देशकी भाषा खूब समझता है । उसका
दय भी एकबारही पथरीला नहीं है । विशेष कर बक्सर-यु
मैंने उसकी जान बचाई थी । संग्रामक्षेत्रमें वह घायल पड़ा थ
मैं उसे दो कोस तक कन्धे पर बिठाकर ले गया था । सभी
उसे तड़पता छोड़ दिया था । ऐसी अवस्थामें क्या छत्रसि

मुझसे घातमात करेगा? मेरा रहस्य खोलकर क्या वह मेरे प्राणके विनाश करनेकी चेष्टा करेगा? छत्रसिंह लालची नहीं है। वह कभी मुझसे बेवफा नहीं होगा।"

यह सोच और कमरेसे बाहर आकर अमरसिंह छत्रसिंहको तलाश करने लगा। जो सिपाही उसके साथ आये थे वे इस समय हाफिजका मकान लूटनेमें लगे हुए थे। दूसरी किसी बातकी सुधि उनको नहीं थी। पर छत्रसिंह जिसकी बात अमरसिंह ऊपर कह चुका है वास्तवमें लोभी नहीं था। उसमें एक बुरी आदत अवश्य थी वह यह कि वह जरा गांजा पीनेका आदी होगया था। इस समय भी मकानके बाहर एक किनारे बैठकर वह गांजेका दम लगा रहा था। बहुत देरके बाद गांजा मिलनेसे वह इस समय बहुत प्रसन्न था।

अमरसिंहने छत्रसिंहके पीछे जाकर धीरेसे उसकी पीठ पर हाथ रक्खा। छत्रसिंह गांजेके नशेमें चूर था। चौंककर उसने देखा कि अमरसिंह उसकी पीठपर हाथ रखे खड़ा है। अमरसिंहको छत्रसिंह अपने प्राणसे भी अधिक चाहता था, उसे अपना छोटा भाई समझता था।

अमरसिंहने कहा—"भाई साहब, तुमसे कोई खास बात कहनेके लिये इस समय तुम्हारे पास आया हूं। पर कसम खाओ कि वह बात किसीसे कहोगे तो नहीं?"

छत्रसिंह। भाई, तुमसे भी मुझे प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी? तुमने एकबार मेरी जान बचाई है। मैं तुम्हारे लिये प्राण तक दे सकता हूं।

अमरसिंह। और, तुमने हाफ़िज़ रहमतखांकी की औरत को देखा है या नहीं? अन्दर से सब बन्द है। सिकटेमिष्ट टामन और हेसटिंग्स उनके पास बैठे हैं।

छत्रसिंह। मैंने पहले एकबार भी जाना नहीं सिवाय फिर यहां इनको छोड़कर मैं मन भुलैयोंको देखने जाता! तुम तो विचित्र आदमी हो। मैं क्यों वहां जाता?

अमरसिंह। हाफ़िज़की लड़कीकी तरह सुन्दरी मैंने आज तक कहीं नहीं देखी। उसका मुख मानो धर्म भावसे भरा है उसे देखनेसे जान पड़ता है कि उसकी चालचलन बहुत अच्छी और उसका हृदय बहुत पवित्र होगा।

छत्रसिंह। नवाबकी बेगमें और नवाबजादियां सुबह शाम दोनों वक्त गर्म जलसे स्नान करती हैं। फिर इतने पर भी वे पवित्र न होंगी?

अमरसिंह। भाई, हाफ़िज़की स्त्रीको देखकर उसको मां कह कर पुकारनेको मेरी इच्छा होती है। उसकी कन्याका हृदय भी दया और धर्मभावसे भरा है।

छत्रसिंह। बड़े लोगोंकी लड़कियोंके पास बहुत रुपया पैसा रहता है। वे स्वभावहीसे लोगों पर दया रखती हैं।

अमरसिंह। भाई साहब, हाफ़िज़की लड़कीको सचमुची देवकन्या कहते बनता है। पहलीही बार उसे देखकर मेरे हृदय में उसके प्रति भाई बहिनकासा स्नेह उत्पन्न हुआ। किस तरह हमलोग ऐसी रूपवती बालाको कामी नरपिशाच शुजाउद्दौला के हाथमें सौंपेंगे? इनको नवाबके हाथसे बचानेका क्या कोई उपाय नहीं है?

छत्रसिंह। ऐसी बात कभी मुंहसे भी न निकालना नहीं तो तुम्हारा जीना भी कठिन हो जायगा। एक तो पहलेहीसे तुम्हारी बदनामी हो रही है। साले इरफान अलीऔर मोहम्मद इकरामने नवाबके पास जाकर कहा है कि तुमने रुपया लेकर बहुतसी रुहेली स्त्रियोंको छोड़ दिया और बहुतोंके भागनेका सुभीता कर दिया है। नवाब साहब तुमको पहचानते नहीं इसीसे तुम बचे हो, पर उन्होंने जेनरल चेम्पियनको तुमको बरखास्त कर देनेका हुक्म दे दिया है। तुम निहालसिंहके पुत्र हो। तुम्हारी जैसी बहादुरी है उससे तुम कभी सूबेदार होगये होते, पर अपनी चालसे खराब हो रहे हो।

अमरसिंह। मैं सूबेदारी नहीं चाहता। यदि मेरा नाम काट दिया जायगा तो मैं अभी चला जाऊंगा, पर तुमको इस समय मेरा एक काम अवश्य करना पड़ेगा।

छत्रसिंहने जोरसे गांजेका एक दम खींचकर कहा—"भाई, तुम्हारा एक काम क्यों दस काम करूंगा। यह प्राण तुम्हारे लिये दूंगा। जो थोड़ी बहुत पूंजी है वह भी मरनेके समय तुम्हें दे जाऊंगा। तुमको छोड़ इस जगत्‌में मेरा और कौन है?—

"नहीं है अब कुछ करनेमें मुझको।
कहे तनसे जुदा सर भी कराओ॥"

अमरसिंह। भाई साहब, मैं हाफिजकी स्त्री और कन्याके साथ बातें करना चाहता हूं। पर वे मेरी बोली अच्छी तरह नहीं समझ सकती। मैं भी उनकी बातचीत भली भांति नहीं समझ सकूंगा। मैं चाहता हूं कि मैं जो कुछ कहूं वह तुम उनको समझा दो और वे मेरी बातके जवाबमें जो कहें वह मुझे बतला दो।

छत्रसिंह। तुम उनके साथ किस विषयकी बातें कर चाहते हो?

अमरसिंह। यहां उनके भागनेका सुभीता कर देनेका क उपाय नहीं है। फैजाबादमें नवाबके पास उनको उपस्थित क देनेके बाद किसी तरह उनके भागनेका उपाय कर दिया सकेगा। तुमको यही सब बातें उनको समझानी होंगी।

छत्रसिंह। भई, तुम काम नासमझ नहीं हो। ऐसे दुःसा के काममें पड़कर अपना जान गँवाओगे। चुप रहो, ऐसे का में हाथ नहीं डालना चाहिये।

अमरसिंह। मैं अपना प्राण देकर भी उनके साथ उपक करूंगा। जैसे होगा उनके धर्मकी रक्षा करनेकी चेष्टा करूंग यदि शुजाउद्दौला उनका धर्म नष्ट करना चाहेगा तो मैं अव उसकी जान लूंगा।

छत्रसिंह। तुम पागल होगये हो, धर्म धर्म चिल्लाते हो कहीं मुसलमानोंमें भी धर्मका विचार होता है? एक एक सात सात बार निकाह करती है। फिर उनमें धर्म कैसा ये दोनों नवाबके पास जातेही बेगम बन जायँगीं। नवाब य इन दोनोंके साथ निकाह न करेंगे तो बुड्ढीको खुर्दमहलमें भेज देंगे और उसकी लड़कीको कुछ दिन अपने पास रखक पीछे उसे भी वहींका हवा खिलावेंगे।

अमरसिंह। भाई, सब मुसलमान एक समान नहीं होते

* नवाबोंकी उपपत्नियां जिन महलोंमें रहती हैं उन्हें खुर महल कहते हैं।

मुसलमानोंके नामसे तुम्हें चिढ़ है पर मैं निश्चय करके कहता हूं कि यदि नवाब साहब इनका धर्म्म बिगाड़ना चाहेंगे तो ये दोनों आत्महत्या कर डालेंगी। मुझे ठीक तौरसे यह बात मालूम हुई है।

कुवरसिंह। यह हो सकता है। शायद कहेंनो औरतें वैसोही होंगी जैसी हमारी हिन्दू स्त्रियां होती हैं। उस दिन जो तीस औरतें पकड़ी गई थीं उनमेंसे भी दस बारहने आत्महत्या कर डाली थी। मिलविल साहबके यहां जो तीन स्त्रियां रखी गई थीं उन्होंने भी अपने पेटमें छुरी मारली।

अमरसिंह। तुम मेरा यह काम कर दोगे या नहीं?

कुवरसिंह। छिपकर बातें करनेका सुयोग मिलनेसे मुझे इस कामके कर देनेमें कोई आपत्ति नहीं है। पर यदि दरबारभरको आदिको इसकी खबर हो जायगी तो हमलोगोंका कहीं ठिकाना न रहेगा। ये सब दूसरोंकी बुराई इसीलिये करते हैं कि जिसमें जल्दी इनको सूबेदारी मिले। इन दुष्टोंको बहादुरी दिखाकर दर्जा पानेकी ताकत तो है नहीं, इसलिये ऐसा करते हैं। केवल लोगोंको बदनाम करके कर्नेल साहबको प्रसन्न करना चाहते हैं।

अमरसिंह। छिपकर बातें करनेका एक उपाय है। नवाबने इनको पाल्कीमें बिठाकर लानेका हुक्म दिया है। हम दोनों इनकी पाल्कीके साथ रहेंगे और जब जब पाल्की रखकर कहार आराम करेंगे तब तब अपनी इच्छाके अनुसार इनके साथ बातें कर लेंगे।

छत्रसिंह। यह राय बहुत ठीक है। वह देखो नादिरअली चार पाल्कियोंके साथ आ रहा है।

इतनेहीमें नादिरअली चार पाल्कियाँ और बीस पचीस कहारोंके साथ आ पहुँचा। नवाब शुजाउद्दौलाने हाफ़िज़ रहमत की स्त्री और कन्याकी गिरफ़ारीके लिये सैन्य भेजनेके समय सैनिकोंको आज्ञा दे दी थी कि हाफ़िजके परिवारकी स्त्रियोंको पाल्कीके अन्दर बिठाकर लाना होगा। साथही यह भी कह दिया था कि यदि कोई उनको नङ्गा करना चाहेगा या उनके ऊपर किसी प्रकारका अत्याचार करेगा तो उसे कठिन दण्ड दिया जायेगा। शुजाउद्दौलाकी मा सैयदुन्निसा बेगम देहलीके बड़े नामी रईस सआदतअलीखांकी लड़की थी। उन्हीं सआदत-अलीके परिवारकी किसी स्त्रीके साथ हाफ़िज़ रहमतके किसी पुत्र या पौत्रका विवाह हुआ था। इसी सम्बन्धसे रुहेलखण्डकी किसी किसी स्त्रीके साथ अवधके वज़ीरकी रिश्तेदारी थी।

जब नादिरअली पाल्की लेकर आ पहुँचा तब टामसनने हाफ़िज़ रहमतकी लड़कीकी ओर उंगली उठाकर कहा—
"O! the young lady is crying. What a handsome girl she is. I wish the Nawab would make her over to me."
यह युवती रोरही है। कैसी रूपवती है। यदि नवाब साहब इसे मुझे दे देते तो बड़ा अच्छा होता।

यह कह और आगे बढ़कर दुष्ट टामसनने हाफ़िजकी कन्याका हाथ पकड़ लेना चाहा। पर तुरन्तही उसको मार्ग

तलवार खेंचली। इधर पीछेसे मिलविलने भी उसे पकड़ कर कहा—"What are you doing? What are you doing? The Nawab will certainly put us to death. He has given us strict orders not to touch the body of any of these ladies" तुम क्या कर रहे हो—क्या कर रहे हो? नवाब साहब निश्चय हमलोगोंको मरवा डालेंगे। उन्होंने ताकीद करदी है कि इन स्त्रियोंका शरीर कोई भी न छूने पावे।

इसके बाद नादिरअलीने हाफिजकी स्त्री कन्या और तीन चार दूसरी स्त्रियोंको पालकीके अन्दर बैठनेको कहा। * रास्ते में लड़कीके साथ बातें करनेका अवसर मिलेगा यह सोचकर हाफिजकी स्त्री और कन्या एकही पालकीमें बैठीं। प्रायः सभी सिपाही पालकियोंके आगे आगे चलते थे। केवल अमरसिंह और छत्रसिंह उस पालकीके साथ साथ थे जिसमें दोनों मा बेटियां बैठी थीं। लेफटेनेण्ट टामसन पालकीके पीछे पीछे चलते थे। सो जिस बातकी अमरसिंहने आशा की थी वही पेश आई।

* पक्षपाती अङ्गरेज इतिहास-लेखक कहते हैं कि रुहेलखण्डके युद्धके बाद रुहेली स्त्रियों पर कोई अत्याचार नहीं किया गया। हाफिजकी स्त्री और कन्या पालकीमें बिठाई गई थीं। पर हारे हुए शत्रुकी स्त्री कन्याओंको पकड़ना क्या अत्याचार नहीं है? इसके सिवा, रुहेलखण्डकी और बहुतसी स्त्रियां पकड़ी करके नवाब शुजाउद्दौलाके पास पहुंचाई गई थीं यह क्या झूठ बात है?

छठा परिच्छेद।

रास्ते रास्ते।

अमरसिंह शुद्ध उर्दू या हिन्दी भाषामें बातचीत नहीं सकता था और लखनऊ आदिको उर्दू अच्छी तरह नहीं झता था। अमरसिंहके पिता निहालसिंहका मकान इला बादमें था। निहालसिंहका पुत्र ठीक ठीक हिन्दी या उर्दू लना नहीं जानता यह बड़े आश्चर्यकी बात थी। उसके स सिपाहियोंमेंसे कोई कोई कहते थे कि निहालसिंहने मुर्शिदा की किसी बङ्गालिनके साथ दोस्ती करली थी अमरसिंह बङ्गालिनके गर्भसे पैदा हुआ है। दो एककी राय थी कि नि लसिंह ऐसा आदमी नहीं था। वह बड़ा धार्मिक और भारी स्वभावका क्षत्रिय था। ऐसी अवस्थामें शायद अमर उसका पालित पुत्र होगा। इरफानअली आदि कहते "निहालसिंहने अपने दामाद रणवीरसिंहके पलासीको में मारे जानेके बाद चुपचाप बिरादरीमें छिपाकर अमर को अपनी लड़की सुपुर्द करदी थी। बाद, बात खुल जाने बिरादरीसे निकाले जानेके डरसे उसने अमरसिंहको अ लड़का कहकर घरमें रख लिया। असल बात यह है कि रसिंह निहालसिंहका दामाद है।"

इरफानअली मगैरहके ऐसा कहनेका और कोई क नहीं था। अमरसिंह निहालसिंहको कन्याको बहुत आ था बहिनको तरह प्यार करता था इसीसे इरफानअली अ

ऐसा कहते थे। परन्तु इस संसारमें जिसको जैसी आँखें होती हैं वह दूसरोंको उसी भावसे देखता है। चोर समझता है कि संसारके सभी लोग चोर हैं। सरल स्वभावके लोग समझते हैं कि जगत्के सभी प्राणी सीधे सादे और भले हैं। इरफानअली जैसा आदमी था उसके मनके भाव भी वैसेही थे। इससे हम उसे इस बातमें दोषी नहीं कह सकते।

अमरसिंह वास्तवमें कौन था यह बात पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगी। इस जगह उस बातका उल्लेख करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। हाफिजकी स्त्रीके साथ रास्तेमें उसने क्या क्या बातें कीं यही सब वृत्तान्त इस परिच्छेदमें लिखा जाता है।

सिपाही आगे आगे चल रहे थे। हाफिजके परिवारकी आठ नौ स्त्रियां पाल्कीमें उनके पीछे पीछे थीं। उदयसिंह और अमरसिंह पाल्कियोंके साथ साथ थे। तीसरे पहर ये लोग हाफिजके मकानसे बाहर निकले थे। इस समय दिन बीत चला था। सायंकालकी अंधियारी धीरे धीरे पूर्व दिशामें अपने पांव फैलाने लगी थी। रात भरके लिये इनको किसी जगह ठहरना पड़ता इसलिये ये शामहीसे ठहरनेके लिये जगह तलाश करने लगे। शाम होनेके बादही इनकी मण्डली एक बाजारके पास आ पहुंची।

लेफटेनेण्ट टामसनने कहा—"अभी बहुत समय है। यह बाजार छोड़कर आगेके अड्डे पर चलकर ठहरेंगे।"

परन्तु कहारोंने बाजारके पास पहुंचते पाल्कियोंको एक घने पेड़के नीचे रख दिया और कहा—"हुजूर, रात अन्धेरी है। हमलोग पाल्की लेकर इस समय आगे नहीं चल सकते।"

लेफटेनेण्ट टामसनने घोड़ेसे उतरकर छि: छि: हँसते हुए कहारोंकी पीठ पर दो चार चाबुक जमादी। बेचारे कहारों पर क्यों चाबुककी मार पड़ी यह कोई नहीं समझ सका। हां इतना अवश्य हुआ कि अङ्गरेजोंकी मार खानेसे उन बेचारोंकी पीठसे खूनकी बूंदें टपकने लगीं। लाचार, इधर उधर भागकर उन्होंने अपना प्राण बचाया। टामसन और टामकिन खिलखिला कर हँस पड़े। छोटे नासमझ बच्चे जिस प्रकार पशु-पक्षी मारकर खेलते और प्रसन्न होते हैं उसी प्रकार वे भी हँसे और प्रसन्न हुए। बेचारे काले आदमी गोरे भाइयोंके आगे खिलवाड़ की चीज समझे गये।

हाफिजकी स्त्री अपनी लड़कीके साथ जिस पाल्कीमें बैठी थी अमरसिंह और छत्रसिंह उसी पाल्कीके पास खड़े थे। पाल्की का द्वार बन्द था। किस तरह उनसे बातें आरम्भ करनी चाहियें इसी विषयमें वे खड़े खड़े चिन्ता कर रहे थे।

कुछ देरके बाद अमरसिंहकी शिक्षाके अनुसार छत्रसिंहने पाल्कीके दरवाजेके पास मुंह लेजाकर हल्की भाषामें कहा—"मा, यदि आपको किसी चीजकी आवश्यकता हो तो हमलोगोंसे कहियेगा। हमलोग आपके शत्रुओंके नौकर होकर भी आपको दुःखित नहीं करना चाहते। हमारी यही इच्छा है कि रास्तेमें आपको किसी प्रकारका कष्ट न होने पावे।"

पाल्कीके अन्दरसे छत्रसिंहको बातका कोई उत्तर नहीं मिला। केवल एक लम्बी सांस खैंचनेका शब्द सुनाई दिया।

अमरसिंहके बतलानेके अनुसार छत्रसिंहने फिर कहा—"मा, हमारे साथ यह जो एक दूसरा सिपाही है इसका नाम अमरसिंह है। गांव लूटनेके समय इसने बहुतसी रईसी स्त्रियों के निकल भागनेका सुभीता कर दिया था। आपलोगोंको किसी प्रकारका कष्ट देनेकी हमारी इच्छा नहीं है। हमलोग नौकर हैं, मालिककी आज्ञासे आपको लिये जाते हैं। यदि हमलोगों के द्वारा आपको किसी तरहकी सहायता मिल सके तो हम जानपर खेलकर भी उसके करनेकी चेष्टा करेंगे।"

अङ्गरेजी फौजके एक सिपाहीने गांव लूटनेके समय बहुतेरी रईसी स्त्रियोंके बचावका बन्दोबस्त कर दिया था यह बात हाफिजकी स्त्री पहलेही लोगोंके मुखसे सुन चुकी थी। सो अमरसिंहका नाम सुनतेही उसने पाल्कीका पर्दा जरा हटाकर देखा कि उसकी गिरफतारीके समय जो सिपाही उसकी कोठरीमें बैठा आंसू बहा रहा था और जो एक बार अचेतावस्थामें "मा—मा" चिल्ला उठा था उसीको छत्रसिंह अमरसिंह कहकर बतला रहा है। इससे उसे कुछ बातें करनेका साहस हुआ। छत्रसिंहकी बातोंके जवाबमें उसने कहा—"जो तकलीफजदों की मदद करते हैं खुदा उनका भला करेगा"

छत्रसिंहने पहलेकी तरह फिर अमरसिंहकी शिक्षाके अनुसार कहा—"मा, हमलोग सचमुच आपको अपनी माताके

समान समझती हूं। जालिम शुजाउद्दौलाके हाथसे प्राण देकर भी आपकी और आपकी कन्याकी रक्षा करनेकी हम चेष्टा करेंगी। इस समय आप यह बतलावें कि आपके यहांसे बचकर निकल जानेके लिये कौनसी तरकीब की जावे।"

छत्रसिंहकी यह बात सुनकर हाफिजकी स्त्रीने पाल्कीका द्वार और भी खोल दिया और इनको अपना परम मित्र समझ कर इनसे अच्छी तरह बातें करना आरम्भ किया। कहार और दूसरे सिपाही खाने पीनेका बन्दोबस्त कर रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था। पाल्कीके पास छत्रसिंह और अमरसिंहके सिवा तीसरा कोई नहीं था।

हाफिजकी स्त्रीने कहा—"हमलोग भाग नहीं सकते। तमाम मुल्कमें दुश्मन फैले हुए हैं। भागनेकी कोशिश करनेसे आयहो उसी दम गिरफतार होना पड़ेगा।"

छत्रसिंह। (अमरसिंहकी शिक्षाके अनुसार) तो क्या आप लोगोंके छुटकारेका कोई उपाय नहीं है? आपकी सहायता और उद्धारके लिये जो कुछ करना हो हम करेंगे। हमलोग जान देकर भी अपनी इज्जतकी रक्षा करनेके लिये चेष्टा करनेको तैयार हैं।

हाफिजकी स्त्रीने इस बात पर आकाशकी ओर दोनों हाथ उठाकर कहा—"ऐ मुसीबतजदोंकी राहत बख्शनेवाले, मैं तेरी कुदरतके निसार होती हूं। तूने इस वक्त गौया अपना फरिश्ता भेजकर मुझ आफतकी मारीके दिलको ढाढ़स बंधाया।"

इसके बाद छत्रसिंहकी ओर देखकर उसने कहा—"बेटा तुमने इस मुसीबतके वक्तमें हमलोगोंके साथ जो हमदर्दी दिखाई इसका बदला खुदासे तुम्हें जरूर मिलेगा। मगर फिल हाल मौतके सिवा हमारे छुटकारेको कोई दूसरी तरकीब नहीं दिखाई देती। तुमलोग हमारे लिये बेफायदा क्यों तकलीफ उठाओगे? मौतकी दवा हमारे पास पहलेहीसे मौजूद है। अगर शुजाउद्दौला हमारी इज्जत बिगाड़ना चाहेगा तो हमलोग जान देकर भी अपना बचाव करेंगे।"

छत्रसिंह बोला—"आपलोग निराश न हों। मेरा साथी अमरसिंह कहता है कि यदि वजीर आपलोगोंका धर्म नष्ट करना चाहेगा तो वह अवश्य उसका प्राण नाश कर डालेगा। शुजाउद्दौलाके अत्याचारोंने इसे एकदम आपेसे बाहर कर दिया है।"

इस बार हाफिजकी स्त्रीके मुख पर कुछ प्रसन्नता दिखाई दी। इससे पहलेही यदि उसकी इच्छा होती तो वह फैजुल्लाके साथ भागकर पहाड़ोंमें छिप सकती थी। पर उसने निश्चय किया था कि जहांतक सम्भव होगा स्वामीकी क्रिया किये बिना रुहेलखण्डसे बाहर नहीं जाऊंगी। इसीसे वह उस समय नहीं भागी। इसके बाद उसका पुत्र नवाबके सैनिकोंके द्वारा पकड़ा गया। ऐसी अवस्थामें आत्महत्या करके वह सब दुःखों और कष्टोंसे सदाके लिये अपना छुटकारा कर सकती थी, पर इस कामके करनेसे भी उसे रुकना पड़ा। उसने प्रतिज्ञा की कि स्वामीके शत्रुका विनाश करनेके बाद आत्मघात करूंगी।

किन्तु इस जीवनमें उसकी प्रतिज्ञाका पूरा होना कठिन द
परमेश्वरकी कृपासे आज उसने एक सहायक पाया। आज
सकी मुर्झाई हुई आशालता फिरसे हरी होगई। उसने उ
कताके साथ पूछा—"बेटा, तुम क्योंकर वजीरका खून करोगे

छत्रसिंह। (अमरसिंहकी ओर उंगली दिखाकर) ये क
हैं कि क्योंकर शुजाउद्दौलाका प्राणनाश किया जायगा इस
निश्चय अभी नहीं किया जा सकता। समय पर जैसा अव
मिलेगा वैसाही उपाय होगा।

हाफिजकी खोजेने भी मनही मन कहा—"ठीक है। प
मे कोई बात ठीक तौरसे नहीं कही जा सकती। जैसा मौ
होगा वैसा किया जायगा।"

छत्रसिंह। आप इस अमरसिंहको पहचान रखें। इस
चेहरा भूलें नहीं। यह छिप छिपकर समय समय पर आ
मिलता रहेगा और बराबर आपके काममें आपकी सहाय
पहुंचानेकी चेष्टा करता रहेगा।

ऊपर लिखी बातचीतके बाद कहार पाल्कियोंको उठा
बाजारके एक मकानमें लेगये। रातभर स्त्रियोंके टिकनेके लि
लेफटेनेण्ट टामसनने यही मकान ठीक कर दिया था। हाफि
की पीछे बाक़ी दूसरी स्त्रियोंने भी इसीमें प्रवेश किया।

इति प्रथम भाग।

सनाम प्रसिद्ध, आदर्शव्यापारी, स्वर्गीय

बाबू माताप्रसाद एम० ए०, एफ० सी० एस०,

जीवनचरित।

(बाबू गंगाप्रसाद गुप्त-लिखित)

"The elements so mixed in him that nature m
stand up and say to all the world—this is a man."

Shakespeare.

बाबू माताप्रसाद बाबू गंगाप्रसाद गुप्त के पिता थे। उन्
२१ वर्ष की अवस्था में एम० ए० की परीक्षा पास की थी
इस परीक्षा में वे युक्तप्रान्त भर में प्रथम श्रेणी में प्रथम हुए
गवर्नमेण्ट दस सहस्र रुपये देकर उनको विलायत भेजती थ
उन्होंने इनकार किया। नौकरी को गुलामी समझते थे।
व्यापारप्रिय थे। बनारस प्रयाग कानपुर देहली और मु
रादाबाद में दूकानें खोल रखी थीं जो अभी तक चलती है
इनके पिता १०) रु० महीने की कचहरी में नौकरी करते
इन्होंने अपने उद्योग से व्यापार में कई लाख रुपया पै
किया। हिन्दूकालिज के आनरेरी प्रोफेसर थे। विलायत
केमिकल सोसाइटी के आनरेरी फेलो और बनारस की कई
सभा सोसाइटियों के सेक्रेटरी प्रेसीडेण्ट और मेम्बर थे। अं
रेजी के सिवा लेटिन अरबी फारसी हिन्दी और बंगला
जानते थे।

इनका जीवनचरित छप रहा है। आठ आने में मिलेगा।

॥ श्रीः ॥

जबर्दस्त की लाठी

सिर पर

[उपन्यास]

श्रीचुन्नीलाल खत्री द्वारा लिखित

और

लहरी बुकडिपो द्वारा

प्रकाशित।

काशी

लहरी प्रेस में प्रथम बार मुद्रित।

महसूल ।)

सरलेनानी ने कहा, "रजिस ! अपने विचारों को थोड़ी देर के लिये अलग रख कर मेरी बात को ध्यान के साथ सुनो। जब मेरी उम्र तुम्हारे बराबर थी मैं एक सीधीसादी खूबसूरत लड़की पर आशिक होगया (कुछ रुक कर अपनी धंसी हुई आंखों से आंसू बहाते हुए रंज के साथ) मैं उसको उसके लड़कपनही से जानता था और उससे मोहब्बत रखता था मगर उसकी मुहब्बत मेरे साथ बिल्कुल पाक थी। एक दिन जब मैंने उससे अपनी मुहब्बत का हाल कहा और उससे अपने साथ ब्याह करने का जिक्र किया तो वह अचम्भे के साथ मेरी तरफ देखने लगी क्योंकि उसने अब तक मुझको केवल अपना पाक दोस्त समझा हुआ था अस्तु इस बात पर उसने मजबूती मगर नर्मी के साथ यह कहकर कि मेरे दिल का मालिक कोई दूसरा हो चुका है मेरी बात अस्वीकार की।

ऐ मेरे लड़के ! तुम समझ सकते हो उस समय मेरे दिल पर कैसी चोट पहुंची होगी ! मैंने भी उसी दम प्रतिज्ञा की कि जिन्दगी भर उसी से मुहब्बत रक्खूंगा और दूसरी शादी न करूंगा। अस्तु उसी बात पर मैं अभी तक कायम रहा और किसी से मुहब्बत न की।

उस लड़की ने मेरे एक प्यारे मित्र मन्सूर के रईस के साथ शादी कर ली। चाहे इस शादी का होना मेरे लिये मौत से कम नहीं था तथापि मैंने उसे खुशी से बर्दाश्त किया। इसके बाद भी मैं उसके साथ वैसीही मुहब्बत रखता था क्योंकि मुझको इस बात से बहुत खुशी थी कि उसके पति ने उसके साथ अच्छा सलूक किया है जिससे वह बहुत ही प्रसन्न थी।

दिनों के बाद उसको एक नेहायत खूबसूरत लड़की जन्मी। लड़की के पैदा होने से उनको खुशी तो हद्द दर्जे की हुई परन्तु यह खुशी केवल चंद दिनों की थी क्योंकि छोटी लड़की जिसका नाम एलिस रक्खा गया था जब एक महीने की हुई तो उसकी मां एकाएक बीमार होकर मर गई।

इस दुर्घटना के दोही तीन दिन पहिले मेरे भाई (तुम्हारे बाप) ने हिन्दुस्तान से चीठी लिखी थी कि "मेरी स्त्री तीन महीने हुए दुनियां से कूच कर गई और मेरी तन्दुरुस्ती दिनों-दिन खराब होती जाती है इस वास्ते तुम चीठी देखतेही फौरन रवाना हो आओ। यदि तुम हिन्दुस्तान पहुंच कर मुझको जीता न पाओ तो जो लड़का मेरा तुम्हारे पास है उसको मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। उस समय तुम्हारी उम्र छः वर्ष की थी। मैंने सफर का सब इन्तजाम जल्दी के साथ ठीक कर लिया परन्तु रवाना होने के पहिले मैंने सोचा कि अपनी मृत प्यारी की अन्तिम क्रिया को समाप्त करके चलना उचित होगा, अस्तु मैं उसके पति अर्थात अपने मित्र के पास गया। वह अपनी स्त्री के वियोग से बहुत ही दुःखित था। हमलोगों में बहुत देर तक बातें होती रहीं। इसी सिलसिले में मैंने भी उसकी स्त्री के साथ अपनी मुहब्बत का पूरा २ हाल कह डाला।

पहिले तो मेरी बातें सुन कर वह आश्चर्य के साथ हक्का बक्का मेरी तरफ टकटकी बांध कर देखता रहा, इसके बाद मेरा हाथ पकड़ कर वह इस तरह कहने लगा "रोदर! वह मेरे जैसे अभागे के योग्य नहीं थी बल्कि वह तुम्हारेही योग्य थी। मुझ को इस बात से बड़ा आश्चर्य मालूम होता है कि बगैर किसी

तरह की कहा सुनी हुए तुमने उसको मेरे साथ शादी करने इजाजत देदी और मजा यह कि अभी तक तुम मेरे साथ ही दोस्ताना बर्ताव रक्खे जाते हो । यह आश्चर्य की बात यदि तुम्हारी जगह कोई और होता तो मेरा जानी दुश हो जाता !"

इन्हीं बातों के सिलसिले में मैंने उससे हिन्दुस्तान सफर का भी हाल कह दिया और तुम्हारे बाप की बीमारी भी जिक्र किया । उसने इस बात को सुन कर जल्दी से कह "ऐ मेरे दोस्त ! हम दोनों दोस्तों ने एकही स्त्री से मुहब्बत है और वह मुहब्बत भी कैसी कि जिसका मुकाबिला कोई क ही नहीं सकता ! अब तुम्हारा तो लड़का है और मेरी लड़की मेरा इरादा है कि इन दोनों की आपस में शादी करके दोनों घरों को एक कर दें ।"

ऐ प्यारे रजिन ! मैंने उस समय इस बात का बिल्कुल खयाल न करके कि यह शादी तुम्हारी या लेडी एलिस की राय के अनुकूल या विपरीत होगी, उसकी बात को मंजूर करलिया और फौरन इस विषय में लिखा पढ़ी कर दी ।

इसके बाद उसने फिर इस तरह कहना शुरू किया— "रोदर ! मेरी एक प्रार्थना और भी है, सम्भव है कि हमलोग उस जमाने तक मर जावें । यदि हम में से कोई एक मर जावे तो उसकी औलाद को दूसरा अपने घर में रक्खे । अर्थात यदि मैं पहिले मरूं तो एलिस को जब तक कि वह बालिग न हो तुम्हारी सुपुर्दगी में लिख जाऊं और यदि तुम पहिले मरो तो रजिन मेरी हिफाजत में रहेगा परन्तु ज्योंहीं वे अपनी उम्र पर

हुंचें उनकी शादी फौरनही मृत मित्र की कबर के पास जाकर
रा देनी चाहिये। यदि तुम पहिले मर जाओगे तो तुम्हारी
ही कबर पर लेजाकर मैं शादी करा दूंगा और यदि मैं मर गया
ो तुमको यह काम मेरी कब्र पर पहुंच कर करना होगा।"

प्यारे रजिन! यह एक विचित्र प्रकार का कौल करार
ा। मेरी तबीयत उस समय भी ऐसे कौल करार करने से हि-
की थी परन्तु वह अपनी मृत स्त्री के वास्ते ऐसी तकलीफ में
ा कि मैं उसकी बात से इन्कार न कर सका और उसकी बात
ान ली। हम दोनों में से किसी को भी उस समय यह न सूझी
के जवान होने पर तुम लोगों को अख़्तियार होगा कि जहां जी
ाहे शादी करो और फिर उस समय के बाद से मेरी उनके
ाथ कभी मुलाकात भी नहीं हुई। तुम जानते हो कि उस
समय से मैं तुमको साथ लेकर बराबर सफर मेंही रहा हूं। मुझ
ो बस इसी बात का ख्याल रंज पहुंचा रहा है कि मैंने उससे
जबान हार दी थी और यह रजिन तुम्हारे ऊपर निर्भर है,
चाहे मेरी जबान को सच्ची करो या झूठी!

रजिन०। (जोश के साथ) चचा साहब! मैं आपको रंज
पहुंचाना नहीं चाहता, परन्तु जरा विचारिये तो यह कैसी
बेदर्दी की बात है कि बेगुनाह बच्चों को बगैर उनकी राय के
जाल में जकड़ देना। मान लीजिये आपके पिता ने किसी के
साथ इसी तरह का कौल करार करके आपकी शादी किसी
ऐसी स्त्री से ठहराई होती जिसको आप बिलकुल न चाहते होते
या जिसको आपने कभी देखाही न होता तो क्या बालिग होने
पर आप अपने बाप पर ऐसी अवस्था में न बिगड़ते जब कि

आप लेडी एलिस की मां पर अपना दिल न्योछावर करचुके हैं।

यह बात सुनते ही रोदर इस तरह चौंक पड़ा जैसे उसे सांप ने डस लिया हो परन्तु फ़ौरनही सम्हल कर वह इस तरह कहने लगा, "ऐ मेरे लड़के। बड़ों के साथ बातचीत करने में हमेशा नम्रता लिये हुए शब्दों का प्रयोग करना चाहिये। यदि मैं कुछ दिन तुम दोनों को इङ्गलैण्ड में एक साथ रख कर जान लेता कि तुम लोग परस्पर प्रेम नहीं कर सकते तब निश्चय मैं रर्थ मन्यू के साथ बातचीत करके कोई और बन्दोबस्त कर सकता था, परन्तु अब वह मौका हाथ से निकल गया। तुम या तो एलिस के साथ शादी करने की प्रतिज्ञा करो नहीं तो मैं अपनी बिल्कुल जायदाद का वारिस अपने नालायक भाई आर्थर को जिसका चाल चलन तुम अच्छी तरह से जानते हो बना दूंगा। खान्दानी खिताब को तो जरूर मैं नहीं रोक सकता परन्तु जायदाद तुम जानते हो कि मेरी ही पैदा की हुई है, अस्तु कुछ नकद रुपया तो मैं खैरात कर दूंगा और बाकी की कुल जायदाद का आर्थर मालिक बन जायगा, नहीं तो हमारी बात मंजूर करो क्योंकि कोई तीन महीने हुए तब भी मन्यू की चीठी आई थी कि शादी करने का कब तक इरादा है?

रजिन०। यदि आपकी यही इच्छा है तो अच्छा, मुझे कुछ समय दीजिये जिसमें मैं लेडी एलिस को राजी करने की कोशिश करूं।

रोदर०। नहीं, इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम सिर्फ़ इक़रारनामे पर दस्तख़त करदो, इस समय तुम्हारी उम्र चौबीस वर्ष की है और उसकी अठारह वर्ष की, अस्तु जितनी

जल्दी शादी हो जाय उतनाही अच्छा है। मैं तुमसे अपने अन्तिम समय में पूछता हूं अब साफ २ कहो कि तुम खूबसूरत ो और दौलत लेकर मेरी इज्जत बचाना चाहते हो या भीख ग कर जिन्दगी बिताना?

इसके बाद थोड़ी देर तक उस कोठड़ी में बिलकुल सन्नाटा ा परन्तु रजिन इस बात से क्रोध में भरकर भीतरही भीतर ढ़ने और अपनी अवस्था पर गौर करने लगा।

रोदर०। (दबी हुई आवाज से) जल्दी जवाब दो, क्योंकि री तबीयत बराबर घटती जा रही है।

आखिरकार कई मिन्टों तक सोच विचार कर रजिन ने पनी गर्दन ऊंचे उठाई और कहा "चचा साहब' मैं अच्छी रह से जानता हूं कि आपका धन घृणा करने के योग्य नहीं परन्तु तब भी मानवी खुशी से तुलना करने पर वह किसी योजन का नहीं है। रही यह बात कि आपकी अन्तिम इच्छा पनी दौलत मेरे हवाले करके अपनी कीर्ति, यश और सचाई ीछे छोड़ जाने की है और साथही आप यह भी कहते हैं कि ईस मन्धू की अभी तक इच्छा अपने कौल के पूरे करने की है तो मुझको भी कोई उज्र नहीं है यदि आपको एक शर्त मंजूर हो तो।

रोदर०। (जल्दी से) और वह शर्त क्या है?

रजिन०। बस यही कि लेडी एलिस इस बात को मंजूर कर ले।

रोदर०। इस बात से निश्चिन्त रहो, यह जरूर मंजूर कर लेगी।

रजिन०। तब भी मुझको उसकी तबीयत का हाल जान
ना चाहिये। यदि यह किसी दूसरे आदमी से शादी का वादा
र चुकी होगी तो मैं कभी राजी न होऊंगा। मैं बिलकुल इज्जत
और दौलत को छोड़ देना कबूल करूंगा परन्तु एक निरपराध
लड़की की जिन्दगी को बर्बाद न करूंगा। चचा साहब! मैं
अच्छी तरह से जानता हूं कि मेरे बाप मां जो कुछ हैं सब आप
ही हैं क्योंकि आपही ने मुझको पाल कर इतना बड़ा किया है
और इस शादी के बारे में भी मैंने आपसे वादा किया है कि
जो कुछ आपने हुक्म दिया मुझको सब मंजूर है परन्तु तिस
पर भी जैसा कि मैं कह चुका हूं कि यदि यह शादी करने
वास्ते राजी न हुई तो मैं कभी न करूंगा।

रोदर०। (आंखों से प्रेम के आंसू टपका कर) ऐ मेरे लड़
तुमने बहुत ही अच्छा काम किया कि मेरी आज्ञा मान
परन्तु रजिन! तुमने जो इस बात पर इतना जोर दिया है
यदि लेडी एलिस दूसरे किसी से वादा कर चुकी होगी तो
शादी न करूंगा, या यदि इस शादी से उसको रंज होगा
भी मैं राजी न होऊंगा, इसका क्या मतलब है? ईश्वर
है मैंने इस बात पर पहिले विचार ही नहीं किया था
वास्तव में मेरी तरह तुम भी अपना दिल किसी दूसरे
फँसा चुके हो?

रजिन०। चचा साहब! आप इस विषय में दृढ़
रखिये, मैंने अभी तक किसी से मुहब्बत नहीं की
बात जरूर है कि यदि कोई शादी दूलहा और दु
रजामन्दी के बगैर करदी जाय तो मुझे बहुतही बुरा

रोदर०। वास्तव में बात तो ठीक है परन्तु अब इतना समय कहां है कि इस बात की जांच कर ली जाय। अब तुमको यह करना चाहिये कि मुझको दफन करने के बाद फौरन रईस मन्यू की शादी के वास्ते चीठी लिखना, क्योंकि जब तक तुम शादी न कर लोगे यह जायदाद तुमको मिल नहीं सकती। परन्तु यदि एलिस शादी करने से इन्कार करे तो यह सब दौलत तुम्हारी है, तुम्हारा जो जी चाहे सो करना, साथही इस बात पर ध्यान रखना कि यदि दोनों बातों में से एकभी न हुई तो बिल्कुल धन का मालिक मेरा भांजा आर्थर हो जायगा।

रजिन०। बहुत अच्छा, मैं हरएक बात का ध्यान रक्खूंगा।

रोदर०। (बेसब्री के साथ करवट बदल कर) अच्छा पादरी साहब (धर्मशास्त्री) को बुलाओ।

पादरी बुलाया गया और उसने मरने के समय की रसम अदा की। इसके एक हफ्ते बाद रोदर की लाश उसी गांव के गिर्जाघर के पासवाले मुकबिरे में गाड़ी गई।

जब इन सब कामों से छुट्टी मिल गई तो रजिन ने अपने चचा के एकाएक बीमार होकर मरने का हाल और वह विल्कुल बातें जो उसने मरते समय कही थीं लिख कर रईस मंयू के पास भेजीं और साथही में अपनी रजामन्दी भी लिख भेजी।

इतना करके वह जवाब की राह देखने लगा॥

⁂

दूसरा बयान।

उधर रईस मन्थू के पास जिस दिन रजिन की चीट पहुंची वह अपनी लड़की लेडी एलिस के पास गया परन्तु व इस बात के सोच विचार में पड़ा हुआ था कि इस मामले वे उससे किस तरह बयान करे। आखिर उसने इस तरह पूछ शुरू किया—

रईस०। एलिस! यह ते बताओ हमारे मेहमान आर्थ और उसकी बहिन कब तक जाएंगे?

एलिस०। परसों तक इरादा है!

रईस०। ते ठीक है, हम लोगों को भी बहुत जल्द ए सफर करना है।

एलिस०। (आश्चर्य के साथ) सफर करना है!

रईस०। हां, मैंने तुमसे पहिले भी अपने मृत मित्र रोद और उसके भतीजे रजिन का जिक्र किया था जो रिश्ते आर्थर का मामा लगता है। मैंने तुमसे यह भी कहा था f कई वर्ष हुए मैंने उसके साथ एक एकरारनामा लिखा था औ उसमें वादा किया था कि तुम्हारी शादी जब तुम बड़ी होग तो रजिन के साथ करूंगा परन्तु फिर इसके बाद उनकी कु खबर ही न मिली इससे मुझको भी ध्यान नहीं रहा था अ उसकी चीठी आई है। मैं समझता हूं तुमको उस एकरारना का ध्यान होगा?

एलिस०। (नाक भैांह सिकोड़ कर क्रोध के साथ) ह ध्यान ते है।

रईस०। रोदर एक हफ्ता हुआ इटली में मर गया है औ

क़रार के मुताबिक़ अब वह बात पूरी होनी चाहिये।

इतना कह कर वह जवाब पाने के वास्ते रुक गया परन्तु एलिस कुछ न बोली।

रईस०। (चीठी दिखा कर) यह चीठी रजिन ने भेजी है, उसने शादी के बारे में अपनी इच्छा प्रगट की है और पूछा है कि जो तारीख आप शादी की निश्चय करें मुझको लिख भेजें। तुम्हारी शादी जिस वक्त होगी उसी वक्त से वह अपनी चचा की बिल्कुल जायदाद का मालिक हो जायगा।

एलिस०। (क्रोध के साथ) परन्तु मैं इस किस्म की शादी पसन्द नहीं करती! आप बिल्कुल नहीं जानते कि वह किस तरह का आदमी है। क्या आपको मेरे सुख दुःख का बिल्कुल ख्याल नहीं है? आप नहीं जानते कि वह बदमाश, बेवकूफ या क्या है?

थोड़ी देर तक तो रईस सोच में पड़ा हुआ होंठ चबाता रहा क्योंकि उसको अपने वादे का ख्याल था परन्तु फिर कुछ निश्चय करके उसने कहा, "एलिस! जिस आदमी से तुम्हारी शादी होनेवाली है वह न तो बदमाश है और न बेवकूफ। मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि वह इज्जतदार और लायक आदमी है और यह बात खाली उसके खत की लिखावट सेही नहीं जानी जाती बल्कि इस सबब से भी कि उसने अपने मृत चचा की आज्ञा का जो उसने एक मुद्दत हुई किसी से वादा किया था, पालन किया है।

एलिस०। (घृणा के साथ) वाह क्या ही इज्जत और लेयाकत की बात है कि एक बिना रजामन्द स्त्री के साथ जबर्दस्ती

शादी करने की इच्छा प्रगट कर देना।

रईस०। (अपनी लड़की की ऐसी बातें सुन कर क्रोध साथ) हमलोग परसों मुल्क इटली को रवाना होंगे, तुम अ बिलकुल सामान से लैस रहना और अपनी मजदूरनी गलि को भी साथ चलने के वास्ते कह देना।

इतना कह कर ज्योंहीं उसका बाप जाने लगा, एलिस रोक कर कहा, "कृपा करके एक बात मेरी सुन जाइये। मैं कभी आपकी आज्ञा उल्लंघन नहीं की और मैं इतना आप प्रेम रखती रही हूं कि कदाचित ही किसी लड़की ने अप पिता से किया हो, परन्तु इतने पर भी आपने आज मेरे कले पर ऐसा जख्म कर दिया है जो एक मुद्दत में जाकर अच्छा होगा। मैं जानती हूं कि अभी मैं नाबालिग हूं अस्तु जो कु आप कहेंगे मुझको मंजूर करना पड़ेगा परन्तु मेरी इच्छा है कि आप मुझको इस आफत से मुक्त कर दीजिये।

रईस०। (क्रोध के साथ) तो मैं भी कसम खाकर कहता हूं कि या तो तुम मेरी आज्ञा का पालन करो और या घर छोड़ कर मठ (कौनवेंट) में जाकर रहो। इधर मैं भी इस दुनियां से कूच करता हूं क्योंकि बेइज्जती के साथ दुनियां में रहना मुझ को मंजूर नहीं है।

एलिस०। (घबड़ा कर) क्या आत्म हत्या! नहीं बाप यह नहीं!

रईस०। क्यों नहीं! झूठे बन कर जीने से तो जान दे देना अच्छा है

एलिस को विश्वास हो गया कि यदि वह और ज्यादा जि करेगी तो उसका बाप जरूर आत्महत्या कर डालेगा, इस

सने रञ्ज के साथ कहा, "अच्छा जो आप कहते हैं वही करूंगी
गइये इस चीठी को मैं भी जरा पढूं।"

अर्ल ने बगैर कुछ कहे सुने चीठी एलिस के हाथ में दे दी
ऋौर उसने पढ़ना शुरू किया। उसमें इस तरह लिखा हुआ था।

मान्यवर, महाशय! मैं आपको अपने चचा रोदर साहब
े यकायक परलोक गामी होने की इत्तला देता हूं। कई
र्षों के बाद हमलोग सफर से लौट कर मकान पर पहुंचे,
एकाएक उनको बुखार आया और देह त्याग दिया आज उन
ेा मरे तीसरा दिन है। मैं इस समय ऐसी बुरी विपत्ति में
ंस गया हूं कि उनकी बीमारी का पूरा २ हाल नहीं लिख
कता। मैं अदब के साथ आपका उस कौल करार की तरफ
्यान दिलाता हूं जो अट्ठारह वर्ष हुए मेरे चचा साहब और
आपके दर्मियान में हुआ था। मेरे इतनी जल्दी लिखने का
सिर्फ यही सबब है कि चचा साहब का ऐसाही हुक्म हुआ था।
अस्तु जब उनकी यही इच्छा थी कि जहां तक जल्द हो सके
हमारा वादा पूरा हो जाय तो मैं भी अदब के साथ जाहिर
करता हूं कि मैं तैयार हूं आप जो तारीख मुनासिब समझिये
लिख भेजिये परन्तु शर्त यह है कि आपकी लड़की लेडी एलिस
का यदि अब तक किसी दूसरे के साथ सम्बन्ध न हुआ हो या
इस शादी से वह खुश हो तो। इस बात का मुझको बहुतही
अफसोस है कि चचा साहब के जीते हम लोगों को एक साथ
रहने का कभी भी मौका न मिला। मेरी सलाम आपको और
लेडी एलिस को कबूल हो।

आपका भलाई चाहने वाला—रजिन।

जब यह चीठी समाप्त कर चुकी तो रईस ने कहा, "मेरी राय में यह चीठी बहुत ठीक लिखी हुई है। ऐसा दामाद मिलने से मुझको बहुत ही खुशी है।"

एलिस०। (क्रोध से जल भुन कर) अच्छा, आपने तो अपनी राय जाहिर न करदी, अब मेरी सुनिये मैं आपका हुक्म मानने को तैयार हूं, मुझको मंजूर है यहां और चाहे गिर्जाघर में जहां जी चाहे शादी करदें परन्तु शादी के अलावा और किसी बात की उम्मीद मुझसे न रखनो क्योंकि मैं उस आदमी से बातचीत भी उसकी इज्जत कभी नहीं कर सकती जिसके साथ मेरी मुहब्बत न हो।"

रईस० (क्रोध में भर कर) तो साफ ही क्यों नहीं कहती कि तुम अपने पति के साथ न रहोगी?

एलिस०। (क्रोध से) अच्छा यही सही।

रईस०। एलिस! तू बिल्कुल भूल रही है, ऐसा न समझियो कि तू इस बात को प्रगट न होने देगी। हमलोग फौरन शादी करके अपने इसी शहर में लौट आवेंगे और साथही तुम्हारा पति रजिन भी आवेगा। यहां पर सब दोस्तों को जमा करके शादी की दावत दीजायगी, परन्तु इतने पर भी यदि तू अपनी टेक निबाहेही जाएगी तो याद रख मेरे से किसी तरह की आशा न रखियो।

एलिस०। अच्छा तो खाना आध घंटे में तैयार हुआही जाता है, यदि आप भी इसी बात पर तुले हुए हैं तो मुझको कहीं चले जाने की आज्ञा दीजिये।

रईस०। अच्छा बेटा, जहां इच्छा हो जाओ।

यह कहकर रईस उठा और एलिस के साथ लिये हुए दर्वाजे की तरफ बढ़ा, परन्तु केवाड़ खोलने के पहिले उसने मुहब्बत के साथ लड़की को गले से लगाया और उसके आंसुओं से तर गालों का चुम्बन किया।

एलिस ने जल्दी के साथ अपने आंसू पोंछे और फिर बाप से अलग होकर सीढ़ियां चढ़कर अपने कमरे में चली गई।

एलिस और उसके पिता के वहां से हटने के साथही पुस्तकालय के साथ वाली कोठड़ी का (जो उसी कोठड़ी के साथ सटी हुई थी जहां एलिस और उसके बाप में बात चीत हो रही थी) दर्वाजा खुला और एक जवान लड़की भीतर से निकली और धीमे से दर्वाजा बन्द करके वह भी उन्हीं सीढ़ियों से ऊपर जाकर गुम होगई।

पुस्तकालय और दूसरी कोठड़ी जिसमें वह औरत छिपी हुई थी एक मोटे पर्दे के जरिये से अलग २ की हुई थीं। इस कोठड़ी में एक खिड़की थी जो दक्खिन तरफ वाले रमने की तरफ खुलती थी और इसी कोठड़ी में एलिस के खिलौने और फूल इत्यादि रक्खे रहते थे। जब कभी वह खाली होती तो इसी कोठड़ी में आकर बैठा करती थी।

आज जोकुछ बाप और बेटी में बातें हुई यह औरत पर्दे के भीतर से कान लगा कर सुनती रही। यदि इन लोगों को मालूम होजाता कि उसने सब बातें सुनली हैं तो बेचारी एलिस को भारी मुसीबत में न पड़ना पड़ता॥

तीसरा बयान ।

उस कमरे में जहां रोदर मरा था, रजिन लिखने वाले मे के पास उदास बैठा हुआ है। बहुत से कागज और हिसा किताब के रजिष्टर इधर उधर फैले पड़े हैं और बगल वाले मे पर के कागज देखने से प्रतीत होता है कि उसका काम खत हो चुका है। इस समय वह अपने और अपने चचा के हिसा को देख रहा है परन्तु रह २ कर वह किसी होने वाली बात विचार में पड़ जाता है।

एक हफ्ता हुआ जब उसने रईसमंघू को चीठी लिख थी परन्तु जबाब अभी तक नहीं आया था। इसी सोच वह खड़ा होकर इधर उधर टहलने लगा। उस दिन की डाक पहुंचने में देर समझ कर वह जेब से घड़ी निकाल खिड़की के पास खड़ा होकर देखने लगा। उसी समय एक गाड़ी होटल के दर्वाजे पर आकर खड़ी हुई और रजिन आश्चर्य्य के साथ उसमें से उतरते हुए लोगों की तरफ देखने लगा।

एक मर्द और दो औरतें गाड़ी में से उतरीं। मर्द एक लंबा और खूबसूरत जवान था। उसकी दाढ़ी और सिर के बाल बिल्कुल भूरे और आंखें नीली तथा तेज थीं परन्तु सूरत से वह इज्जतदार मालूम होता था। औरतें दोनों लम्बी और दुबली पतली थीं और मालूम होता था जैसे वे सगी बहनें हों क्योंकि दोनोंही एक तरह की काली पैाशाक पहिने थीं और दोनों के चेहरे काले नकाब से ढके हुए थे परन्तु इतना फर्क जरूर था कि एक उनमें से कुछ घमण्ड के साथ तन कर आगे २ चलती थी।

उनके सराय में चले जाने के एक घंटा बाद एक जवान,

रईस मंधू की चीठी लेकर रजिन के पास पहुंचा। उसमें लिखा था कि "जहां तक जल्द सम्भव हो मुझसे सराय में आकर मिलो।"

रजिन अपनी जिन्दगी में कई तरह की मुसीबतें झेल चुका था और उसका दिल ऐसा मजबूत था कि वह कभी भी किसी बात से नहीं घबड़ाता था परन्तु इस समय यकायक रईस के पहुंचने का समाचार पढ़कर वह घबड़ा गया मगर फौरनही अपने को सम्हाल कर वह उठ खड़ा हुआ और नौकर के साथ सराय की तरफ चला।

सराय में पहुंचते ही रईस मंधू ने उसको बहुत आवभगत के साथ लिया और फिर कमरे में बैठ कर इस तरह पर बात चीत होने लगी।

रईस०। मैं आशा करता हूं मेरी तार तुम्हें पहुंच गई होगी।

रजिन०। नहीं, तार तो कोई नहीं पहुंची बल्कि दो दिन से मैं आपकी चीठी की राह देख रहा था मगर जब कोई खबर न मिली तो मैंने समझा कि शायद मेरी चीठी ही न पहुंची हो।

रईस०। जल्दी आने के कारण चीठी तो मैंने लिखी नहीं परन्तु कल शाम को पेरिस से तार भेजी थी कि हम फलाने वक्त पहुंचेंगे। बड़ा आश्चर्य है कि तार न पहुंची!

रजिन०। लेडी एलिस तो अच्छी तरह से हैं?

रईस०। (सुस्त चेहरा बना कर) हां बहुत अच्छी तरह से।

रजिन०। इतनी जल्दी आने से आपको और लेडी एलिस को जरूर तकलीफ हुई होगी, आपलोग आराम के साथ पीछे से आसकते थे।

रईस०। नहीं, नहीं, जलदी तो कुछ भी नहीं की और कुछ तकलीफ ही हुई है और साथही इसके मुझे यह भी ख्य था कि जहां तक जल्द होसके तुमको तुम्हारी जायदाद मालिक बना देना चाहिये।

इसके बाद इधर उधरकी बातें लगभग दो घण्टे के हो रहीं और जब रजिन जाने के वास्ते उठा तो रईस ने कहा खाना आता है खाकर जाना। अस्तु वह बैठ गया,उसको बात से बहुत ही खुशी हुई कि अब अपनी स्त्री से भी बा चीत करूंगा परन्तु जब रईस ने एलिस को बुलाया तो एक नौक ने लौट कर कहा कि वह थक गई हैं इससे अपनेही कमरे खाना खाएंगी।

रईस मंथू यह बात सुनतेही क्रोध और रंज में भर ग परन्तु फौरनही अपने को सम्हाल कर वह रजिन के साथ बै कर खाना खाने लगा। रजिन को एलिस के ऐसे बर्ताव से कु सन्देह हुआ परन्तु रईस की चिकनी चुपड़ी और लच्छेदा बातों में फिर उसका उधर ध्यान ही नहीं गया। ज्योंह खाना खतम हुआ रजिन अपने मकान को चला गया और रई क्रोध में भरा हुआ अपनी लड़की के पास गया। लड़की भ उसी समय खाना खाकर उठी थी, बाप को आता देख चुपचाप उसके सामने खड़ी होगई।

रईस०। (क्रोध के साथ) एलिस। आज तूने हमारे सा खाना खाने से इन्कार किया, इससे मुझे बड़ा ही रंज है। तुमको रजिन से मिलाना चाहता था।

एलिस०। (नाक भौं चढ़ा कर) जबतक शादी न होती मैं

ससे मिलना नहीं चाहती।

रईस०। ऐसा करने से वह क्या खयाल करेगा?

एलिस०। जो कुछ वह चाहे खयाल करे या जो कुछ आप नासिब समझें उससे कहदें।

रईस०। (सख़्ती से) देख एलिस! तू नाहक मुझे क्रोध ढ़ा रही है! अब मैं ऐसी बातें सहन नहीं कर सकता।

एलिस०। (क्रोध के साथ) मेरा क्रोध भी अब अच्छी तरह ड़क उठा है।

रईस०। अच्छा यदि ऐसीही तेरी इच्छा है तो जहां तक गरद सम्भव हो यह शादी हो जानी ही चाहिये।

एलिस०। मुझको मंजूर है, आजही रात को, या घंटे भर गद जब आप चाहें।

पाठकों को जानना चाहिये कि रईस मंधू इस समय बड़े गेच और तरद्दुद में पड़ा हुआ था। उसकी समझ में नहीं आता था कि इन मुश्किलों से क्योंकर छुटकारा मिलेगा। उसको अपनी लड़की के ऊपर बहुतही क्रोध था क्योंकि उसने मन में ठान लिया था कि यदि रजिन के साथ एलिस की शादी न करा सकूंगा तो जान दे दूंगा। अस्तु उसने अपने क्रोध को रोक कर धीरे से कहा "अच्छा एलिस! तुम्हारी ही बात सही, तुम को रजिन के साथ शादी करने के वास्ते कल शाम को आठ बजे तैयार रहना चाहिये। देखो मैंने तुम्हारीही बात मान ली है अब इस बात का खयाल रखना कि शादी के समय पूरा गम्भीर भाव रहे। हमलोग पहिले मृत रोदर साहब की कबर पर चल कर तुम्हारा हाथ रजिन के हाथ में देंगे, परन्तु तुमने कहा है कि शादी से पहिले तुम उसके साथ बातचीत न करोगी सो

अच्छी बात है हमलोग उसी समय गिर्जाघर में चलेचलेंगे और वहां पर शादी करके दस बजे रातही की रेलगाड़ी में सवार होकर पेरिस को चलेंगे और वहां से शहर मंथू को रवाना हो जाएंगे। कहो यह सब तुम्हें मंजूर है?

एलिस०। क्यों नहीं?

रईस०। क्या कल रात के आठ बजे तुम तैयार रहोगी?

एलिस०। जी हां, जरूर तैयार रहूंगी।

इस बातचीत के थोड़ी देर बाद रईस मंथू रजिन के पास गया और उससे कल रात को आठ बजे शादी के तय होजाने का जिक्र किया और साथही इसके उससे यह भी कह दिया कि कल शाम के पहिले एलिस उसके पास नहीं आसकेगी।

रजिन०। जैसा आप मुनासिब समझें।

रईस०। और यह भी तय होगया है कि शादी होने के बाद दस बजे की गाड़ी में पेरिस होकर हमलोग मंथू चले चलें, वहां रास्ते में तुमसे उससे हेलमेल भी होजायगा।

रजिन०। परन्तु शादी रात को किसलिये करने का इरादा है, मेरी राय में दिन में होना चाहिये।

रईस०। दिन के समय कबर पर रसम अदा करते हुए यदि कोई देख लेगा तो तरह २ की बातें उड़ावेगा।

रजिन०। मेहरबानी करके यदि इस शादी में किसी तरह का भेद हो तो मुझे बता दीजिये। मुझको सन्देह है कि इस शादी से आपकी लड़की को तो किसी तरह का उज्र नहीं है। मेहरबानी करके उनको मेरे पास बुला दीजिये मैं कुछ पूछना चाहता हूं।

रईस०। वाह ! तुमको भी कैसे कैसे सन्देह पैदा होजाया करते हैं। कल शादी होने के पहिले जोकुछ तुम उससे पूछना मुनासिब समझना पूछ लेना।

इधर रईस के बाहर जातेही एक औरत जिसकी उम्र बीस बरस के लगभग होगी लेडी एलिस के कमरे में पहुंची। वह एलिसही की तरह दुबली पतली थी और ठीक उसीके बराबर ऊंची थी। उसने एलिस के पास पहुंचतेही आश्चर्य्य और दिल्लगी के साथ मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देखा। यही लेडी एलिस की सखी और मजदूरनी थी जिसका नाम गलिया था।

यही वह औरत थी जिसने पुस्तकालय के पीछे वाली कोठड़ी में से एलिस और उसके बाप की शादी के बारे में बातचीत सुनी थी।

जिस समय वह लेडी एलिस के सामने खड़ी हुई उसका चेहरा बिल्कुल जर्द था और उसकी चितवनों से पाया जाता था कि वह किसी बुरे काम पर तुली हुई है। उसने एलिस के पास पहुंचतेही कहा "प्यारी एलिस! इस आनेवाली शादी का तुम्हारे चेहरे पर ऐसा रंज देखकर मुझे बहुतही दुःख होता है।"

एलिस०। (क्रोध के साथ) मैं मरजाना स्वीकार करूंगी परन्तु ऐसी शादी कभी न करूंगी।

गलिया०। क्यों? मेरी समझ में तो ऐसे इज्ज़तदार और नामी आदमी के साथ शादी करने में कदाचितही कोई स्त्री इन्कार करे।

एलिस०। वाह! क्या ऐसे आदमी के साथ शादी करना कोई स्वीकार करेगा जिसकी कभी सूरत भी न देखी हो?

बोल उठी "ओह ! मैं यह कभी नहीं कर सकती । मैं
नहीं कर सकती !"

गलिया० । तब तो जिन्दगी भर दुःख भोगने के अति
और कुछ चाराही नहीं है । मैंने तो तुमको रंज में देखकर
उपाय बता दिया था परन्तु तुम्हें इस बात से रंज हु
खैर । जब तुम्हारे में हिम्मत ही नहीं है तो फिर तुम
कर सकोगी ।

एलिस० । (क्रोध के साथ) खबर्दार! हिम्मत का नाम
लेना ! ऐसी भला कौनसी बात है जो मैं नहीं कर सकत
यदि मैं तुम्हारी राय पर चलूं तब भी मेरा बाप अपनी प्रति
का जरूर पालन करेगा । हाय ! यदि इस समय मेरी
जीती होती !

गलिया० । वाह ! तुम भी क्या भोली हो ! मैं तुमसे
कहती हूं उसको तो जबतक इस भेद का पता न लग जाय
दिन रात नींद ही न आवेगी !

एलिस० । (सन्देह के साथ) क्या वास्तव में तू स
कहती है ।

गलिया० । भला मुझे झूठ बोलने से मतलबही क्या है

एलिस० । (कुछ रुककर) इस उपाय से मुझे तकलीफ त
बहुत होगी परन्तु देखा जायगा, मैं करूंगी ।

गलिया० । तो तुम यह बात दृढ़ता के साथ कहती हो

एलिस० । हां, इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है

गलिया० । मगर फिर भी अच्छी तरह से सोच समझ लो
ऐसा न हो कि पीछे से पछताना पड़े ।

एलिस०। कोई हर्ज नहीं, मैंने अच्छी तरह सोच समझ लेया है।

इसके बाद थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा और जब नौकर ाय लेकर आया तो दोनों चुपचाप बैठी हुई थीं परन्तु एलिस ा चेहरा भय से जर्द हो रहा था और चालाक गलिया का ेहरा खुशी से दमक रहा था॥

चौथा बयान।

गिर्जाघर की घड़ी से टनाटन आठ बजने की आवाज ुनाई दी। यह समय एलिस के वास्ते बहुतही बुरा था क्योंकि ीक यही समय उसके बाप ने शादी का निश्चय किया हुआ ा। अभी घंटे की आठवीं टन्कार हवा में गूंजही रही थी कि ईस अपनी लड़की की बांह पकड़े हुआ होटल में से बाहर निकला और पीछे २ गलिया मजदूरनी भी साथ थी।

दोनों औरतें (एलिस और गलिया) एकही सी काली ोशाकें पहिने हुई थीं और दोनोंही के चेहरों पर काले नकाब ड़े थे। तीनों जने बगैर जरा भी बातचीत किये बढ़े चले गए यहां तक कि कब्रिस्तान के बीच पहुंच गए। एलिस यद्दपि अपने बाप की बांह पकड़े हुई थी मगर बराबर कांप रही थी। इस बीच में उसने कई बार इरादा किया कि अपने दृढ़ किये हुए विचारों को बदल डाले परन्तु भावी बड़ी प्रबल होती है। वह जोकुछ मंसूबा गांठ लेतीहै उसे बगैर पूरा किये कभी नहीं मानती।

इधर रईस की भी अवस्था बहुत सोचनीय हो रही थी

गलिया०। परन्तु सम्भव है कि रजिन को इस बात खबरही न हो कि यह शादी तुम्हारी मर्जी से होती है या नहं

एलिस०। भला यह हो सकता है? ऐसा कभी विच भी मन में न लाना।

गलिया०। मैं ऐसा विचार नहीं करती बल्कि मैं अच्छ तरह से जानती हूं कि रजिन ने खुद ऐसी शादी से इन्का किया था परन्तु तुम्हारे बाप ने उससे कहा कि मेरी लड़क बिल्कुल राजी है और यदि तुम शादी न करोगे तो उसे बहुत दुःख होगा।

एलिस०। यह कभी नहीं हो सकता कि मेरा कहे कि मैं इस शादी से राजी हूं।

गलिया०। जब तुमको मेरा एतबारही नहीं तो मैं क्य करूं! मैं तुमसे सच कहती हूं कि तुम्हारा बापही इस शादी को जबर्दस्ती कराने पर तुला हुआ है।

एलिस०। यदि ऐसा है तो मैं कभी बाप की राय पर नहीं चल सकती।

उसकी सखी ने रंज के साथ एलिस की तरफ देखा और उसके गले में बाहें डाल कर कहने लगी, "प्यारी एलिस यदि तुम चाहो तो तुम इस आफत से बच सकती हो।"

एलिस ने दीवानेपन से चिल्ला कर कहा, "तुम नहीं जानतीं, मेरा बचना बिल्कुल असम्भव है।"

गलिया०। मैं सब कुछ जानती हूं। इसलाक में जिस समय तुम और तुम्हारा बाप बातें कर रहे थे मैं पुस्तकालय में खड़ी २ सुनती थी। मैंने उस धमकी को भी सुना था

ाने दी थी।

एलिस०। (क्रोध के साथ अपने को उसकी बाहों से अलग के) नालायक। तू छिप कर हमारी बातें सुनती थी?

झूठी गलिया ने जल्दी के साथ बात बना कर कहा "माफ जिये, मैं किसी से इसका जिक्र नहीं करूंगी। इत्तफाक से मैं तकालय में चली गई और एक किताब उठा कर पढ़ने लगी तनेही में तुम लोगों की बातें सुनाई दीं, मैं उठकर वहां से ने लगी परन्तु नहीं मालूम बाहर से किसने दर्वाजा बन्द र दिया इसलिये मैं वहीं पर लाचार होकर बैठी रही।

एलिस०। तो तूने सुन लिया जो उन्होंने प्रतिज्ञा की थी?

गलिया०। हां, उन्होंने कहा था कि यदि तू मेरी बात न नेगी तो मैं आत्महत्या कर डालूंगा।

एलिस०। बस तो यदि मैंने उसका कहना न माना तो ह जरूर मर जायगा।

गलिया०। जरा मेरी बात तो सुन, मैं ऐसी तदबीर बता-ंगी कि वह इस धमकी को पूराही न कर सके।

एलिस०। अच्छा बता मैं सुनती हूं, जल्दी कह।

गलिया०। अच्छा जो कुछ मैं कहूंगी तू करेगी?

एलिस०। जरूर करूंगी तू जल्दी बता।

उस चालाक मजदूरनी ने टटोलने वाली नजर से उसकी रफ देखा और फिर उसकी तरफ झुक कर धीरे से कुछ कहा।

बेचारी एलिस पहिले तो सन्देह के साथ उसकी बात नती रही परन्तु बात पूरी होते होते उसका चेहरा भय और बराहट से जर्द होगया। इसके बाद वह यकायक चनड़ा कर

बोल उठी "ओह! मैं यह कभी नहीं कर सकती। मैं कभी नहीं कर सकती!"

गलिया०। तब तो जिन्दगी भर दुःख भोगने के अतिरिक्त और कुछ चाराही नहीं है। मैंने तो तुमको रंज में देखकर यह उपाय बता दिया था परन्तु तुम्हें इस बात से रंज हुआ, खैर! जब तुम्हारे में हिम्मत ही नहीं है तो फिर तुम क्या कर सकोगी!

एलिस०। (क्रोध के साथ) खबर्दार! हिम्मत का नाम न लेना! ऐसी भला कौनसी बात है जो मैं नहीं कर सकती? यदि मैं तुम्हारी राय पर चलूं तब भी मेरा बाप अपनी प्रतिज्ञा का जरूर पालन करेगा। हाय! यदि इस समय मेरी मां जीती होती!

गलिया०। वाह! तुम भी क्या भोली हो! मैं तुमसे सच कहती हूं उसको तो जबतक इस भेद का पता न लग जायगा दिन रात नींद ही न आवेगी!

एलिस०। (सन्देह के साथ) क्या वास्तव में तू सच कहती है!

गलिया०। भला मुझे झूठ बोलने से मतलबही क्या है!

एलिस०। (कुछ रुक कर) इस उपाय से मुझे तकलीफ तो बहुत होगी परन्तु देखा जायगा, मैं करूंगी।

गलिया०। तो तुम यह बात दृढ़ता के साथ कहती हो?

एलिस०। हां, इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

गलिया०। मगर फिर भी अच्छी तरह से सोच समझ लो, ऐसा न हो कि पीछे से पछताना पड़े।

एलिस०। कोई एर्ज नहीं, मैंने अच्छी तरह सोच समझ लिया है।

इसके बाद थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा और जब नौकर चाय लेकर आया तो दोनों चुपचाप बैठी हुई थीं परन्तु एलिस का चेहरा भय से जर्द हो रहा था और चालाक गलिया का चेहरा खुशी से दमक रहा था॥

चौथा बयान।

गिर्जाघर की घड़ी से टनाटन आठ बजने की आवाज सुनाई दी। यह समय एलिस के वास्ते बहुतही बुरा था क्योंकि ठीक यही समय उसके बाप ने शादी का निश्चय किया हुआ था। अभी घंटे की आठवीं टन्कार हवा में गूंजही रही थी कि रईस अपनी लड़की की बांह पकड़े हुआ होटल में से बाहर निकला और पीछे २ गलिया मजदूरनी भी साथ थी।

दोनों औरतें (एलिस और गलिया) एकही सी काली पोशाकें पहिने हुई थीं और दोनोंही के चेहरों पर काले नकाब पड़े थे। तीनों जने बगैर जरा भी बातचीत किये बढ़े चले गए यहां तक कि कब्रिस्तान के बीच पहुंच गए। एलिस चाहे अपने बाप की बांह पकड़े हुई थी मगर बराबर कांप रही थी। इस बीच में उसने कई बार इरादा किया कि अपने दृढ़ किये हुए विचारों को बदल डाले परन्तु भावी बड़ी प्रबल होती है। यह जोकुछ मंसूबा गांठ लेतीहै उसे बगैर पूरा किये कभी नहीं मानती।

इधर रईस की भी अवस्था बहुत सोचनीय हो रही थी

क्योंकि यह तो उसे मालूम होही गया था कि एलिस ... मारे कांपती जाती है, इसके अतिरिक्त वह इस बात से भी घबड़ा रहा था कि वह एक नौजवान लड़की को ... मर्जी के खिलाफ एक मृत मनुष्य की कबर पर रात के ... कौलक़रार कराने के वास्ते लिए जाता है। वह घड़ी २ ... बेवक़ूफ़ी पर मनही मन पछता रहा था परन्तु साथही ... हिम्मत नहीं पड़ती थी कि अपने मृत मित्र से किये हुए ... को तोड़ डाले।

अभी इन विचारों ने पीछा नहीं छोड़ा था कि एक ... भारी पेड़ के नीचे वही नई बनी हुई कबर दिखाई दी और ... पास दो आदमी खड़े मिले। रईस ने इन आदमियों को ... बढ़कर कहा "रजिन! इधर आओ, मेरी लड़की आगई ...

रजिन ने जो उन दोनों में से कुछ लम्बे क़द का था ... बढ़कर अदब के साथ बन्दगी की और कहा "लेडी साह... मुझको आपके साथ मिलने से बहुतही खुशी है।" लेडी ने ... झुक कर सलाम किया परन्तु मुंह से कुछ न बोली। रजि... झुककर अपनी प्यारी के चन्द्रमुख का दर्शन करना चाहा प... वह इस तरह नक़ाब से ढांका हुआ था कि उसको ज़रासी ... झलक दिखाई न दी। इसपर रजिन को बड़ाही आश्चर्य हु... कि यह क्या मामला है क्योंकि क़ायदे के मुताबिक़ मुंह ... देखना बहुत ज़रूरी था। अस्तु उसको विचार होगया कि ... शादी लेडी की इच्छानुसार नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा ... होता तो मुंह छिपाने की ज़रूरतही क्या थी। अस्तु ज़रा ... चुप रहने के बाद उसने लेडी से कहा "प्यारी लेडी! भाग्य...

हमलोग आज एक कौलकरार के पूरा करने के वास्ते इस जगह आये हैं। मैंने तुम्हारे बापको पहिलेही लिख भेजा था कि सब कार्रवाई तुम्हारी लड़की की इच्छानुसार की जायगी। अस्तु यदि तुमको जरा भी इन्कार इस शादी से हो तो साफ२ कहदो मैं कभी मंजूर न करूंगा क्योंकि मैं तुम्हारी खुशी को मट्टी में मिलाना नहीं चाहता।"

इतना कहकर वह जवाब पाने की इच्छा से रुक गया परन्तु फिर भी एलिस की तरफ से कुछ जवाब न मिला।

एलिस के बाप ने जब देखा कि यह बिल्कुल मुंह से नहीं बोलती तो उसे क्रोध चढ़ आया परन्तु फौरन ही अपने को रोक कर उसने कहा "बेटी एलिस! यह समय चुप रहने का नहीं है। नकाब हटा कर अपने पति को मुंह दिखाओ।"

यह कहते हुए रईस ने जल्दी के साथ लड़की के मुंह पर से नकाब हटा कर दूर फेंक दिया।

रजिन ने उसके चांद से मुखड़े की एक झलक देख पाई थी कि उसने जल्दी से पीछे की तरफ घूम कर फिर नकाब अपने मुंह पर डाल ली। रजिन ने फिर कहा "प्यारी लेडी! कृपा करके दो एक शब्द बोल कर मेरे सन्देह को दूर करो। क्या यह शादी तुम्हारी इच्छा से होती है या नहीं? यदि तुम्हारी इच्छा न हो तो मैं कदापि स्वीकार न करूंगा। तुम्हारी जरा सी जबान के हिलने से बिल्कुल फैसला होजायगा। अब स्वतं-त्रता के साथ हाथ मिला कर उत्तर दो"।

बेचारी भोलीभाली लड़की का दिल तेजी के साथ उछल रहा था। उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या करे। उसने

सोचा कि यदि मैं स्वीकार करती हूं ते जिन्दगी भर अपरि
मनुष्य के साथ दुःख भोगना पड़ेगा और यदि इन्कार क
हूं ते मेरे पिता का घर नष्ट हुआ चाहता है। यह सोच
जरा रुक कर उसने अपना हाथ रजिन के हाथ में दे दि
और धीरे से कहा 'यह आपका है।'

रजिन ने उस मुलायम हाथ के अपने दोनें हाथे
खुशी के साथ दबा कर कहा "मैं इस उदारता का आपके ह
से धन्यवाद देता हूं। ईश्वर मुझके आपका निर्वाह करने
मदद दे" यह कहते हुए उसने अपनी हीरे की अंगूठी उस
उंगली में पहिरादी।

बुड्ढा पादड़ी जे अबतक चुपचाप कबर के पास सिर नी
किये खड़ा था आगे बढ़ा। उसने दोनें मिले हुए हाथों
पकड़ कर ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू की। इधर गलि
मजदूरनी ने बचाव का उपाय सोचा और उधर रईस
छाती पर से बोझ का पत्थर उठ गया और उसने सोचा
अब मामला फतह हुआ।

इधर ज्योंही पादड़ी साहब की प्रार्थना समाप्त हुई रई
ने खुशी के साथ आगे बढ़कर कहा "चलो अब देर करने क
समय नहीं है। पादड़ी साहब! आप आगे २ चलिये (अपनी
लड़की की तरफ घूम कर) एलिस! चलो, देर न करो"।

रजिन गलिया के हाथ में हाथ दिये आगे बढ़ा मगर वह
उसकी और एलिस की एकही तरह की पोशाक वगैरह देखकर
मनही मन तरद्दुद में पड़ा हुआ था कि इसका क्या कारण है।
इतनेही में गिर्जाघर पहुंच गया परन्तु ज्योंही सबलोग दर्वाजे

में घुसे गलिया जल्दी के साथ रजिन के हाथ में से हाथ निकाल कर अलग खड़ी होगई श्रीर अपने जूड़े में से ग्रालपीन निकाल कर फिर से लगाने लगी। इधर रजिन को रईस से बातें करते देखकर गलिया ने धीरे २ एलिस के कान में कहा "कहो तुम तैयार हो?"

एलिस०। हां।

गलिया०। अच्छा ते नक़ाय को मज़बूती से पकड़े रहना।

दोनें लेडियां आगे बढ़ीं, एक ने रईस का हाथ पकड़ लिया श्रीर दूसरी ने रजिन का श्रीर जब वे उस जगह पर पहुंच गए जहां पादड़ी साहब खड़े थे ते रईस ने कहा "एलिस! क्या तुम के अपने बाप से घृणा है?"

एलिस०। कदापि नहीं।

इस बात से रईस ने प्रसन्न होकर कहा ईश्वर तुझको खुश रक्खे। इसके बाद पादड़ी ने पूछा 'लड़की किसने दी' ते रईस ने कहा कि मैंने। पादड़ी ने लड़की का हाथ पकड़ कर रजिन के हाथ में देदिया श्रीर शादी की रसम पूरी होगई। परन्तु ज्योंहीं अपनी स्त्री का हाथ चूमने के वास्ते रजिन ओठें तक लेगया श्रीर अपनी दी हुई अंगूठी के उसकी उंगलियों में न पाया ते उसको बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

चाहे वह अंगूठी बहुत बेशक़ीमती थी परन्तु तब भी ज़ाहिरा रजिन ने इस बारे में कोई ज़िक्र न किया। वह उसका हाथ पकड़े हुए गिर्जाघर से बाहर निकला श्रीर उस गाड़ी में सवार हुआ जे उसके ससुर ने पहिलेही से स्टेशन पर चलने के वास्ते तैयार रखने का हुक्म दिया हुआ था॥

पांचवां बयान।

रईस मंपू ने गाड़ी का पहिले दर्जे का पूरा कमरा इस वास्ते लेलिया था कि दूसरे आदमी उसमें न चढ़ने पावें। उसने सोच लिया था कि एक तरफ के बेंच पर तो वह और गलिया बैठ जायगी और दूसरी तरफ एलिस और उसका पति रजिन। उसको विश्वास था कि जब यह लोग एक साथ बैठकर सफर करेंगे तो कुछ न कुछ बातचीत करेंहींगे।

एलिस चाहे क्रोध में भरी हुई थी परन्तु रजिन ऐसा शरीफ आदमी था कि उसने उसके साथ बराबर सभ्यता का बर्ताव किया। उसने सिवाय एक झलक के जो उसको गिर्जा घर में दिखाई दी थी फिर उसकी सूरत नहीं देखी थी क्योंकि वह अपना मुंह नकाब से लपेटे हुई थी। उसने गाड़ी में चढ़ते ही एलिस के वास्ते गदेला बिछा दिया, उसके कपड़े झाड़ कर खूंटियों पर टांग दिये और हवा आने के वास्ते खिड़की खोल दी जिसमें उसको हाथ हिलाने की भी तकलीफ न करनी पड़े।

इन बातों से एलिस का दिल भी पिघल गया उसने नकाब की ओट से दो तीन बेर अपने पति की तरफ देखा और उसके सभ्यता के बर्ताव को जांचा परन्तु न मालूम क्या सोच कर उसने उसके किसी काम पर धन्यवाद न दिया। इतनेही में एलिस का रुमाल हाथ से छूट कर गाड़ी में गिर पड़ा और रजिन ने फौरनही उसको उठा कर एलिस के हाथ में दे दिया। परन्तु देते समय उसने धीरे से सभ्यता के साथ

कहा "क्या मेरी स्त्री मुझको इस बात की आज्ञा न देगी कि मैं उसका मुखारविन्द देख सकूं?"

एलिस ने कांप कर घबरहट के साथ जवाब दिया "नहीं, नहीं"।

रजिन०। भला यह तो बताओ कि तुम्हारे बाप ने कहीं जबर्दस्ती तो तुम्हारी शादी मेरे साथ नहीं करदी है?

एलिस ने कुछ जवाब न दिया,इसपर वह शर्मा कर चुप हो रहा। उसको विश्वास होगया कि एलिस की खुशी से यह शादी कदापि नहीं हुई। परन्तु यह उसने निश्चय कर लिया कि इस विषय में जोकुछ कहना सुनना होगा वह मंघू में पहुंच कर इसके बाप सेकहूंगा। यदि वास्तव में मेरा विचार ठीक हुआ तो मैं इसको इसके बाप के परही रहने दूंगा।

यह टकटकी बांध कर एलिस की तरफ देख रहा था और मन में यह कह रहा था कि अब मैंभी रास्तेभर उससे कोई बात न करूंगा, इतनेही में एलिस ने अपना हाथ उठाकर अपने बहते हुए आंसुओं को पोछा और उसकी उँगली में वही हीरे वाली अंगूठी जो रजिन ने कब्रिस्तान में उसकी उंगली में पहनाई थी दिखाई दी। रजिन को अँगूठी देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि गिर्जाघर में जब यह थी तो उसकी उंगली में अँगूठी नहीं थी। इस बात से उसको बड़ाही आश्चर्य मालूम हुआ।

गनिया सीढ़ी वाले दूर बैठी थी परन्तु आंखें उसकी इन्हीं लोगों की तरफ थीं। जब उसने देखा कि रजिन एलिस को फुसलाने की कोशिश कर रहा है तो यह भीतरही भीतर घबड़ाने लगी। यह मन में सोच रही थी कि यह भोलीभाली लड़की यदि

उसकी बातों में आजायगी तो सब मामला बिगड़ जायगा,
सोच कर वह एलिस के पास गई और कहने लगी "कहिये
थकावट तो मालूम नहीं होती "इतना कहा और फुर्ती के स
एलिस के जूड़े में से आलपीन (सूई) निकाल कर नीचे गिरा
परन्तु इस कार्रवाई को रजिन और रईस ने बिल्कुल न देखा
इसके बाद वह फिर बोली "प्यारी लेडी! तुम्हारा जूड़ा
गया है। मैं ठीक करदूं या आप भीतर कमरे में जाएंगी?

यह कहकर उसने धीरे से उसके कान में कहा "
तुम्हारा काम है, गाड़ी पांच मिनट में टरन स्टेशन
ठहरेगी जहां हमको गाड़ी बदलनी होगी"।

एलिस उठी परन्तु घबड़ा कर वह फिर बैठ गई। गलि
का चेहरा इस बात से क्रोध में भर गया क्योंकि उसने सो
इस समय पल भर भी देरी करने का मैाका नहीं है और
बेवकूफ लड़की दहल रही है अस्तु उसने चालाकी से रजि
की तरफ देखकर कहा "मेरी लेडी कमरे में जाना चाहती है।

वह उठकर एक तरफ खड़ा होगया और एलिस अप
बाप की तरफ घृणा के साथ देखती हुई कमरे के अन्द
चली गई।

गलिया उसको भीतर भेज कर रईस के पास आई, औ
उससे इधर उधर की बातें करने लगी। इतनेही में स्टेश
पहुंचा और गार्ड ने ताला खोल कर कहा 'गाड़ी बदलो'।

रजिन सामान वगैरह इकट्ठा करने लगा और रईस
गलिया से कहा कि एलिस से कहो जल्दी करे, गाड़ी यह

गलिया धीरे २ कमरे की तरफ चढ़ी परन्तु वहां कौन था? एलिस ते उसी समय बाहर निकल गई थी जब गार्ड ने आकर ताला खोला। इधर जब गलिया कमरे में पहुंची उसी समय एक दूसरी गाड़ी जो स्टेशन में पहिलेही से खड़ी हुई थी रवाना होगई जिसकी तरफ देखकर गलिया मुस्कराई क्योंकि उसने अपनी आंखों से देख लिया था कि एक औरत काला नकाब मुंह पर डाले उस गाड़ी पर चढ़ी है। अस्तु वह फौरनही लौट कर बाहर आई और घबड़ाई हुई सूरत बनाकर कहने लगी, 'वह ते यहां पर नहीं है!'

रजिन०। (घबड़ा कर) क्या कहती है? कमरे में नहीं है!

गलिया०। (जल्दी से) हां साहब, वह वहां नहीं है!

रजिन०। असम्भव!

यह कह कर वह स्वयम असबाब फेंक कर गाड़ी में खोजने के वास्ते घुसा परन्तु वहां तो कमरा खाली पड़ा था। वह जरा देर के लिये रंज और घबराहट में खड़ा २ इधर उधर देखता रहा इतनेही में खिड़की की झिलमिली में एक कागज का पुर्जा खुसा हुआ उसको दिखाई दिया जो गलिया की नजरों से बच गया था। उसने उसको निकाला और रोशनी में ला कर पढ़ा यह लिखा था, "पिता! बन्दगी। मुझको माफ करना क्योंकि मैंने तुमसे कह दिया था कि इससे मैं मरना अच्छा समझती हूं।"

यह चीठी पढ़कर रजिन को एलिस की प्रसन्नता के विपरीत शादी होने का पूरा विश्वास होगया। एलिस ने जो २ कठिनाइयां झेलीं और जोकुछ उसे आगे झेलनी पड़ेंगी वह पल भर

में सब समझ गया परन्तु उसने लम्बी सांस लेकर कहा 'हे ईश्वर! तेरी दुनियां में भी कैसे २ विचित्र जीव पड़े हैं जो नाहक दूसरों के मन को दुःखित करते हैं।"

यह कहकर वह उस जगह आया जहां गलिया खड़ी थी। उसने जल्दी २ असबाब इकट्ठा किया और कहा "चलो, रईस मंथू कहां हैं?"

इतनेही में रईस जो स्टेशन की तरफ चला गया था लौटा और वहां पर सिर्फ दोही आदमियों को देखकर वह जल्दी से बोला 'एलिस कहां है?'

रजिन ने वह चीठी जो कमरे में से पाई थी रईस के हाथ में देदी और क्रोध के साथ कहा 'पढ़ लीजिये!'

रईस चीठी पढ़तेही पागलसा मालूम होने लगा। उसने घबड़ा कर जल्दी के साथ कहा "इसका क्या मतलब?"

रजिन०। (सख्ती के साथ) इसका क्या मतलब! खैर, इस का जवाब तो मैं आपको दूसरे समय दूंगा परन्तु इस समय हमलोगों को जल्दी कोई कार्रवाई करनी चाहिये। अब हमलोगों को यहीं रह कर उसकी खोज करनी चाहिये क्योंकि अभी वह इसी जगह कहीं छिपी हुई होगी।

रईस०। (कांपते हुए) अभी पांच मिनट भी नहीं हुए जब वह हमारे साथ थी। वह जरूर इसी जगह होगी, हमलोग अभी उसको खोज लेते हैं।

रजिन०। मैं भी यही आशा करता हूं। परन्तु सम्भव है वह उस गाड़ी में बैठकर रवाना होगई हो जो अभी २ छूटी है। आप गलिया के पास ठहरिये, मैं जाकर उसकी गिरफ़ारी के

वास्ते सब स्टेशनों पर तारें दे आता हूं।

यह कहता हुआ रजिन रईस और गलिया को उस जगह छोड़ तारघर की तरफ बढ़ा। इधर मक्कार गलिया ने रो कर रईस से कहा 'अब मेरी समझ में आया! कल जब आप दोपहर को पुलिस के पास से गए थे उस समय यह बहुतही तरद्दुद में मालूम होती थी। वह बहुत देर तक किसी भारी सोच में इधर उधर टहलती रही। परन्तु क्या वह वास्तव में लोप हो जायगी और हमलोगों को न मिलेगी?"।

रईस०। तुम ज्यादा रंज न करो, मैं आशा करता हूं यह अभी थोड़ी देर में मिली जाती है।

इतनेही में रजिन तार देकर लौट आया। उसने कहा चलो मैं एक कमरा किराये पर ठीक कर आया हूं, वहां बैठकर तब कोई और तदबीर करेंगे।

रईस०। पहिले तो हमलोगों को होटल वगैरह में अच्छी तरह खोजना चाहिये क्योंकि वह अभी दूर न गई होगी।

रजिन ने हँसकर कहा "अजी यह सब बेफायदा है। मैंने स्टेशन भर छान डाला और बिल्कुल अफसरों से पूछ लिया कि इस हुलिये की कोई लेडी तो दिखाई नहीं दी। मेरे खयाल में तो वह जरूर उसी गाड़ी में बैठकर चली गई और यदि यह बात ठीक हुई तो अब तक वह कोसों दूर निकल गई होगी। परन्तु मैंने कई स्टेशनों पर तार देदिये हैं आशा है घंटे आध घंटे में कुछ न कुछ हाल अवश्य मालूम होजायगा।"

इतनेही में एक मारई उस जगह आया और सलाम करके कहने लगा 'क्या लेडी साहब मिल गई?'

रजिन०। नहीं।

गार्ड०। अभी जो गाड़ी मिलन की तरफ रवाना हुई है उसमें एक ऐसीही औरत को चढ़ते देखा था जैसी कि (गलि की तरफ अंगली दिखा कर) यह हैं, बस ठीक ऐसीही पोशाक

इसके बाद सब लोग उस कमरे की तरफ गए जो किरा पर ठीक किया गया था। गलिया एक कोठड़ी में ठहरी औ दूसरी में दोनों ससुर दामाद बैठकर इस प्रकार बातें करने लगे

रजिन०। क्यों जनाब! यह आपने क्या अक़्लमन्दी करी

रईस०। क्या मैं जानता था कि यहां तक नौबत पहुं जायगी। इसके अतिरिक्त मैं अपने कौल से भी लाचार था

रजिन०। जब मैं कह ही रहा था कि यदि उसकी इच्छा न होगी तो मैं कदापि शादी न करूंगा तो फिर आपका कौल किस तरह टूटा जाता था?

रईस०। परन्तु यदि तुम्हारे साथ शादी न करता तो निश्चय तुम्हारे भतीजे आर्थर के साथ करनी पड़ती और वह तुम्हारे चचा की बिल्कुल जायदाद का मालिक होजाता। तुम आर्थर का चालचलन तो जानतेही हैा। वह जरूर सब जायदाद चौपट कर डालता।

रजिन०। परन्तु उसका जायदाद नष्ट कर देना इस कमीनी शादी से तो लाख दर्जे अच्छा था और आशा है कि फिर वही काम भखमार के करना पड़े क्योंकि सब से पहिले मेरा काम यह होगा कि मैं लेडी एलिस का पता लगाऊं और उसके मिल जाने पर यदि कानूनन् किसी तरह की रुकावट न हुई तो मैं उसको स्वतंत्र कर दूंगा। यदि मुझको इस बात का पता

नटों तक रास्ते में गाड़ी रोकी गई थी। सम्भव है इस थोड़ी देर में कोई गाड़ी पर से उतर कर चला गया हो।

रजिन ने अपने ससुर से कहा कि आपकी हालत इस समय अच्छी नहीं है,मैं उचित समझता हूं कि आप और लेडी गलिया मंधू को चले जाएं और मैं लेडी एलिस का या तो पताही लगा कर और या बिल्कुल ही उधर से निराश होकर आपके पास आऊंगा।

अस्तु रईस को रवाना करके रजिन मिलन में पहुंचा और उसकी खोज करने लगा, जब वहां कुछ पता न चला तो वह बहुत से शहरों में खोज करता हुआ फ्रांस की राजधानी पेरिस में पहुंचा परन्तु वहां भी उसे कोई सुराग न मिला। फिर यह सोच कर कि वह मंधू में न पहुंच गई हो वह वहां से मंधू अपने ससुर के पास आया परन्तु यहां पर भी निराशा ने उसका पल्ला न छोड़ा, क्योंकि रईस ने कहा उसका बिल्कुल पता नहीं लगा। इसके अतिरिक्त रईस स्वयम बहुत बीमार था और जब उसने इतने शहरों में खोज किये जाने का हाल सुना तो और भी उसकी हालत खराब होगई।

इस समय गलिया चाहे लोगों की नजरों में दुःखित जान पड़ती थी परन्तु मन में वह बहुत ही खुश थी। उसने बातचीत और सेवा टहल से रईस को ऐसा वशीभूत कर लिया कि वह उसको अपनी दूसरी लड़की समझने लग गया था। एक दिन जब गलिया रईस का बिस्तर झाड़ बिछा कर बाहर चली गई तो रईस ने रजिन से कहा, "अब तो बेटा यही हमारी लड़की है, यह हमारी बड़ी सेवा करती है।"

रजिन०। (आश्चर्य से) जी हां, ठीक है।

रजिन को भी यह प्यारी लगती थी, उसकी काली और बड़ी २ आंखें, गुदगुदा चेहरा, मुस्कुराहट के साथ मीठी मीठी बातें, छोटे २ पैर और उसके मेहनत से भरे हुए कामों को देख कर भला कौन न मोहित होता? कभी २ जब रजिन थक कर सो जाता तो यह इस तरह धीरे से उसकी गर्दन के नीचे तकिया रख देती और ठंड से बचने के लिये उसपर चादर ओढ़ा देती कि उसको मालूमही न होता परन्तु जागने पर वह समझ जाता कि यह काम गलिया हीं का है।

एक दिन रईस ने रजिन से कहा "देखो, गलिया ने मेरी बड़ी सेवा टहल की है और जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं, मैंने तीन हजार रुपये साल की जीविका उसको देना निश्चय किया है,इसवास्ते मैं चाहता हूं कि तुम उसकी जायदाद की निगरानी रखना। मैंने यह जीविका एक तो उसकी सेवा के बदले में देना विचारा है और दूसरे वह हमारेही खानदान का खून तो है।"

इस आखिरी बात से रजिन चौंका और आश्चर्य से रईस की तरफ देखने लगा।

रईस०। मेरा एक भतीजा था जिसको मरे बहुत वर्ष हो गए। वह बड़ाही बदचलन आदमी था। वह गलिया की मां के साथ जो पहले सिरे की खूबसूरत थी बिगड़ गया था। गलिया भी चाहे वैसी खूबसूरत नहीं है परन्तु तब भी बहुतसी बातें अपनी मां की इसमें पाई जाती हैं। इस लड़की ने अच्छी विद्या सीख ली थी और जब इसने स्कूल छोड़ा तो मैंने इसको एलिस

के साथ रहने के वास्ते रख लिया था। यह हाल सिवाय मेरे और कोई नहीं जानता, तुमको इसलिये सब बता रहा हूं। यदि मैं इस दुनियां से कूच कर गया तो इसका ख्याल तुम रखना।

रजिन०। मैं, जहां तक मुझसे हो सकेगा उसका ख्याल रक्खूंगा और खास कर इस सबब से भी कि वह मंयू के खान्दान में से है।

रईस०। मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं! परन्तु यह तो बताओ तुम गलिया को समझते कैसा हो?

रजिन०। (इस सवाल से आश्चर्य में होकर) मैं समझता हूं वह बहुत ही सीधी और गम्भीर है। उसकी आंखें और चेहरा बहुतही खूबसूरत है।

रईस०। आंखें और रङ्ग तो उसका जरूर अपनी मां पर है परन्तु सूरत बिल्कुल मेरे भतीजे की सी है।

यह कहकर उसने करवट बदली और खुर्राटे लेने लगा। रजिन भी उठा और इन्हीं बातों पर गौर करता हुआ अपने कमरे में आ बैठा। इधर उसके जातेही गलिया दर्वाजा खोल कर रईस के पास पहुंच गई क्योंकि दर्वाजे के बाहर से वह कान लगा कर इन लोगों की बातें सुन रही थी। परन्तु इस समय वह बड़ेही क्रोध और रंज में भरी हुई थी, इसका सबब यही था कि उसने अपने कानों से सुन लिया था कि उसकी कमीनी पैदाइश का हाल रजिन को भी मालूम होगया। उसको इस बात का ऐसा रंज था कि यदि वहां खंजर होता तो वह फौरन अपने जिगर में घोंप लेती।

इस घटना के कुछ रोज बाद डाक्टर ने कहा कि चाहे अभी तक कमजोरी ज्यादा है परन्तु रईस का रोग अब हट गया है। अस्तु जिस दिन डाक्टर ने यह कहा उसी दिन शाम को रजिन ने रईस से प्रार्थना की कि यदि हुक्म हो तो मैं अब फिर से मेरी एलिस की खोज पर जाऊं।

रईस०। मैं भी यही सोच रहा था। चाहे मुझको तुम्हारा जाना बहुत ही बुरा मालूम होगा परन्तु तब भी एलिस की खोज का समाचार सुनकर मुझको बहुत जल्द आराम हो जायगा।

रजिन०। यदि आप आज्ञा दें तो मैं कल सवेरे चला जाऊं?

रईस०। (जल्दी से) हां हां, जाओ और मैं भी ज्योंही चलने फिरने की शक्ति हुई फौरन किसी तरफ खोज में रवाना होऊंगा।

रजिन०। मैं जहां तक सम्भव होगा जल्द खोज कर उस को आपके पास लेआऊंगा परन्तु बगैर उसकी तस्वीर के खोजना बहुत कठिन होगा, क्योंकि आप जानते हैं मैंने सिर्फ उसकी एक झलकही देख पाई थी, ऐसी हालत में यदि वह मिल भी जाय तो मैं किस तरह पहिचान सकता हूं! क्या आप के पास उसकी कोई फोटो (तस्वीर) उतरी हुई नहीं है?

रईस०। बहुतसी हैं, घर में देखलो।

रजिन०। मैंने तो गलिया के साथ घर भर छान डाला परन्तु मिली कोई भी नहीं।

गलिया ने जो वहीं पर खड़ी थी इस बात का अनुमोदन किया क्योंकि वह एलिस का पता लग जाना नहीं चाहती थी और इसी गर्ज से उसने उसकी बिल्कुल तस्वीरें ढूंढ़ कर नष्ट

कर डाली थीं। उसने ऐसी धूर्तता के साथ गलिस को भुलाव दिया था कि उसका पता लगना ज़रा टेढ़ी खीर थी, क्योंकि वह अच्छी तरह से जानती थी कि यदि वह आगई तो मेरी कदर फिर बिल्कुल न रहेगी।

रजिन०। अब सिर्फ़ एक उपाय और बचा है। यदि आप उस तस्वीर उतारनेवाले का पता जानते हों जिसने गलिस की तस्वीरें उतारी थीं तो मैं लन्दन जाकर उससे फिर से तस्वीर उतरवालूं।

रईस ने फौरन उसको पता लिख दिया परन्तु गलिया जो वहीं पर खड़ी थी इस बात को सुनकर मन में बहुत खुश हुई क्योंकि उसी दिन उसने एक अखबार में पढ़ा था कि उस तस्वीर उतारने वाले का मकान मय बिल्कुल असबाब के आग से भस्म होगया है परन्तु इस समय उसने कुछ न कहा।

रजिन को मकान भर में सिर्फ़ एकही तस्वीर एलिस की मिली जो लगभग पांच वर्ष पहिले की उतरी हुई थी। उसने ऐसे समय में उसीको गनीमत समझा।

शाम को वह सोच और तरद्दुद में घर से बाहर निकला और सीधा उस झील की तरफ जो वहां से करीब एक मील होगी चला गया। वहां पहुंच कर उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे गलिया खड़ी है। अस्तु वह उसकी तरफ बढ़ा परन्तु उसके पास पहुंच कर उसको मालूम हुआ कि वह रो रही है। इधर ज्योंहीं गलिया ने रजिन को देखा वह सहमसी गई और उसने अपनी आंखें ज़मीन की तरफ फेरलीं।

रजिन०। मिस गलिया! आप भी आज सन्ध्या के

मोहायने समय का आनन्द लूटने निकली हैं?

गलिया०। (घबरा कर) हां,—मैं नहीं जानती, मेरा तो आने का इरादाही नहीं था।

इतनेही में रजिन ने देखा कि उसकी आंख में से एक बड़ा सा आंसू टपक कर उसके कपड़ों पर गिर पड़ा। उसने जो पोशाक इस समय पहनी हुई थी वह बहुतही खूबसूरत थी और उसके कंधों पर एक काली कोर का दुपट्टा पड़ा हुआ था जो उसकी खूबसूरती को इस समय दूना कर रहा था। रजिन ने ऐसी खूबसूरती उसमें आज से पहिले कभी नहीं देखी थी। अस्तु बहिरा उसको खुश करने की नीयत से उसने कहा "रईस अब बहुत अच्छे हैं, सिर्फ कमजोरी बाकी है। अस्तु उसको तुम्हारे सुपुर्द करके मैं एलिस की खोज में जाता हूं।'

गलिया ने क्रोध के साथ चिल्ला कर कहा "ओह! हमलोग बड़ेही भाग्यहीन हैं! हमलोग एक तो आफत में पड़ेही हैं इस पर आप भी चले जाएंगे?"

रजिन०। हां, मैं अवश्य जाकर एलिस की खोज करूंगा। इसके अतिरिक्त मैं यहां पर रहकर करही क्या सकता हूं! मैं तो सिर्फ रईस की बीमारी के कारन रुक गया था।

इसके बाद दोनों थोड़ी देर के लिये चुप होगए अन्त में गलिया ने धीरे से कहा "मेरे पास एक आपकी चीज है।"

रजिन०। (आश्चर्य से) मेरी चीज?

गलिया०। जी हां, आपकी चीज! मैंने कई दफे सोचा कि वह आपको फेर दूं परन्तु ऐसा करने का साहस न कर सकी!

रजिन०। मुझको तो किसी चीज का खयाल नहीं आता,

यह बिलकुल असम्भव है जो तुम कह रही हो।

गलिया०। क्या तुमको इस बात का ध्यान है कि एलि
की और मेरी एकही तरह की पोशाक थी ?

रजिन०। (जल्दी से) जरूर थी।

गलिया०। और क्या इस बात का भी ध्यान है कि मैं
गिर्जे के अन्दर जाते समय एलिस का लहँगा पैर से दबा क
उसको रुका कर लिया था ?

रजिन०। हां, यह भी ध्यान है।

गलिया०। बस तो उसी समय हम लोगों की अदला बद
होगई। वह मैं ही थी जिसने रईस की बांह पकड़ी, वह मेरा ह
हाथ था जो तुम्हारे हाथ में दिया गया, वह मैं ही थी जिससे तुम
मोहब्बत करने का वादा किया और वह भी मैं ही थी जिस
इसके जवाब में कहा था कि मैं जिन्दगी भर तुम्हारी आज्ञा
मानूंगी। यही अंगूठी जो अब तुम्हारे हाथ में है मेरी उंगली
में पहनाई गई और वह भी मैं ही थी जिसको तुम अपनी स्त्री
बना कर इटली के गिर्जाघर से बाहर हाथ में हाथ दिये
निकले थे।

रजिन०। (घबराहट के साथ) परन्तु मेरी समझ में नहीं
आता कि किस तरह—क्यों !

गलिया०। (बात काट कर) मैं तुम्हारा मतलब समझ
गई, तुम इस मामले को जल्दी नहीं समझ सकते। मैंने और
एलिस ने पहिले ही से ऐसी कार्रवाई करने का मंसूबा गांठ
लिया था।

रजिन०। परन्तु मैं इस बात को नहीं मान सकता कि

एलिस ने जान बूझ कर मुझको धोखा दिया।

गलियाठ०। (घृणा के साथ) तुम भले ही न मानो परन्तु इसके सिवा वात दूसरी और कुछ नहीं थी।

रजिन०। अच्छा मुझसे तौर से बयान करो कि यह का- र्रवाई किस तरह?

गलियाठ०। मुझको यह बिल्कुल मालूम नहीं। मैं उस स- हर से ऐसी कांप रही थी और यह कार्रवाई इतनी जल्दी के मैं उसपर बिल्कुल विचार ही न कर सकी। इसके बाद उसके भाग जाने से मैं और भी तरद्दुद में पड़ गई।

रजिन०। क्या उसके भागने का इरादा भी तुमको मा- था?

गलियाठ० (सीधेपन से) बिल्कुल नहीं, मुझको ताज्जुब है कि यह कहां होगी! अब तुम तो उसकी खोज में ही हो आशा है तुम जरूर खोज कर ले आओगे।

रजिन०। निस्सन्देह मैं अपने भरसक कोशिश करूंगा।

गलियाठ०। प्यारे रजिन! क्या तुम मेरा यह अपराध क्षमा दोगे?

रजिन०। परन्तु क्या तुम समझती हो कि यह व्याह धर्म- के अनुसार ठीक२ हुआ है।

गलियाठ०। इसमें भी भला कुछ सन्देह है?

इसके बाद दोनों आदमी जुदे२ रास्तों से रवाना हुए। दिन रजिन एलिस की तस्वीर उतरवाने के वास्ते लन्दन तरफ रवाना हुआ परन्तु वहां पहुंच कर जब उसको मालूम था कि उस तस्वीर उतारने वाले का मकान मय बिल्कुल

लगभग सौ क़दम के फ़ासले पर होगी। उस पहाड़ी के किनारे एक पगडण्डी बनी हुई थी, उसी पर वे जल्दी २ वह जाने लगी। आधे घण्टे तक वह बराबर बढ़ती गई मगर उसको कोई झोंपड़ी तक दिखाई न दी। इसके बाद सड़क का घुमाव मिला और अब उसने देखा कि पगडण्डी का पता बिल्कुल नहीं लगता, इसके अतिरिक्त उसको सब तरफ़ ऊंचे २ पहाड़ दिखाई दिये। एक तो वह थक गई थी और दूसरे आज सुबह से उसने रंज के सबब कुछ खाया नहीं था, इसके अतिरिक्त अकेली स्त्री चारों तरफ़ पहाड़ही पहाड़ देखकर घबरा गई परन्तु इसपर भी कड़ा जी करके वह आगे बढ़ी और दर्रे में से होती हुई एक पहाड़ी पर चढ़ गई। वह आबादी की आशा में कभी ऊपर चढ़ती और कभी नीचे उतरती परन्तु जब कोई निशान दिखाई न देता तो फिर निराश होजाती। इसी तरह वह दो तीन घंटे तक बराबर चलती रही परन्तु जब बस्ती का कोई चिन्ह दिखाई न दिया तो वह निराश होकर और थक कर सड़क के किनारे लेट गई। ओस इतनी तेज पड़ रही थी कि उसका बदन बिल्कुल अकड़ गया और वह बेहोश होगई।

धीरे २ तारागण भी अपने १ घरों की तरफ़ राही हुए और इसके बाद चन्द्रदेव ने भी पश्चिम दिशा में छिपकर अपना मुंह छिपा लिया। कुछ देर बाद सुबह की सुपेदी चारों तरफ़ फैल गई परन्तु अभी तक बेचारी एलिस को कुछ होश नहीं। नहीं मालूम वह जीती भी है या इस दुनियां से कूच कर गई।

यकायक एक दो घोड़ों की खूबसूरत गाड़ी जिसके कोच-बक्स पर कोचवान बैठा हुआ था और साईस पीछे खड़ा था

म कशार पहुंची। गाड़ी के भीतर तीन औरतें थीं अर्थात् एक रईस की रानी और बाकी दो उनकी लौंडियां। परन्तु जब गाड़ी पहाड़ की चढ़ाई पर धीरे २ चलने लगी तो रानी ने कहा आजकल धूप बहुत तेज पड़ती है, घोड़े खराब होजाएंगे।"

लौंडी०। तो आगे वाले गांव में ठहर जाइये। शाम को फेर आगे चले चलेंगे।

रानी०। मैं भी यही मुनासिब समझती हूं।

इतनेही में गाड़ी यकायक रुक गई और कोचवान ने साईस को घोड़े पकड़ने के वास्ते आज्ञा दी, रानी ने खिड़की में से झांक कर पूछा "कौन क्या है?"

तब कोचवान ने सड़क की तरफ उंगली करके कहा "कोई लड़की सड़क पर पड़ी हुई है।"

रानी०। लड़की! अच्छा उसको उठाकर गाड़ी में लेआओ।

कोचवान ने लड़की को उठाया और उसके चेहरे तथा कपड़ों को आश्चर्य के साथ देखकर कहा "यह तो कोई लेडी है।"

रानी०। (जल्दी से) असम्भव! यहां पहाड़ी रास्तों में लेडी भला क्यों अकेली आवेगी?

इतनेही में कोचवान उसको उठाये हुआ गाड़ी के पास पहुंचा। तीनों औरतों ने जब उसकी सूरत देखी तो यकायक चिल्ला उठीं और कोचवान ने कहा 'देखिये, यह जरूर किसी बड़े घर की स्त्री है। जरा इसकी अंगूठी को तो देखिये कैसी बेशकीमत है! जिसपर लिखा हुआ है कि "रजिन के ब्याह की अंगूठी।"

रानी०। मैंने देखली, परन्तु इसके वास्ते जल्दी कुछ उपाय

ऐसा प्रेम होगया कि उसने प्रतिज्ञा करली कि मैं अपने भरसक इस लड़की की मदद करूंगी। यह निश्चय करके उसने कोचवान को हुक्म दिया कि गाड़ी को धीरे २ पास वाले गांव में ले चल।

अस्तु गाड़ी रवाना हुई और घंटे भर में एक छोटेसे गांव में पहुंची। यहां एक सराय में सब लोगों ने डेरा किया और यहां उस लड़की को उतार कर उसके आराम का पूरा २ बन्दोबस्त किया गया। यह रानी बहुतही नरमदिल और अच्छे मिजाज की औरत थी। उसके कई एक लड़के लड़कियां जन्मे थे परन्तु सिवाय एक लड़की के बाकी सब किसी न किसी बीमारी के कारन एक के बाद एक इस दुनियां से कूच कर गए थे। यह लड़की अठारह वर्ष की होगई थी अस्तु वह और उसका पति अपनी इकलौती लड़की को अपनी आंखों का तारा समझते थे परन्तु पिछले वर्ष जब रानी लड़की को साथ लेकर सफर में गई उस समय वह लड़की भी यकायक बीमार होकर इस प्रकार संसार को त्याग गई थी। उस समय से रानी कभी किसी जगह टिक कर नहीं रहती थी। वह कभी पूरब कभी पच्छिम, कभी उत्तर और कभी दक्खिन बराबर घूमाही करती थी। आज एलिस के भाग्य से वह इधर आपड़ी। अस्तु एलिस के साथ लगभग एक महीने तक वह उस गांव में रही, और इतने समय में एलिस में भी ताकत आने लग गई थी।

एक दिन लड़की के पास बैठ कर रानी ने कहा "बेटी! तुमको अच्छी अवस्था में देखकर मुझे बड़ी ही खुशी है।"

एलिस०। (आश्चर्य से) क्या मैं बीमार थी?

रानी०। देखो, मैं तुमको सब हाल सुनाती हूं। मैं अपने

नि के पास शहर मिलने को जा रही थी कि एकाएक रास्ते में तुम पड़ी हुई मिल गईं। मैंने तुमको उठवा कर गाड़ी में लाया और फिर इस गांव में पहुंचा दिया।

एलिस०। (आश्चर्य से) और आप.............

रानी०। (हँस कर) मैं भी तुम्हारे साथ आई (आंसू बहा कर) तुम्हारीही सूरत और उम्र की मेरी भी एक लड़की थी जो हालमें परलोक गामी हुई। अस्तु तुम्हारी सूरत देखकर मेरी हिम्मत न पड़ी कि तुम्हें अकेली छोड़ कर मैं चली जाऊं। प्यारी लड़की! मैं जानती हूं कि तू किसी भारी मुसीबत में है। इसी गर्ज से तुमको उठा लाई थी कि यदि तू अच्छी होगई तो तुमको तेरे घर पर पहुंचा दूंगी।

इन बातों से उस लड़की के चेहरे पर दुःख के चिन्ह दिखाई दिये और एक मास पहिले की सब बातें उसकी आंखों के सामने नाचने लगीं परन्तु उसने अपने भाव को रोक कर रंज के साथ कहा "यह कभी नहीं हो सकता! मैं आज से घर वालों के वास्ते मर चुकी हूं! मैं जरूर मर चुकी हूं!"

रानी०। बेटी! ऐसा न कहो! तुम्हारी उम्र बहुत थोड़ी है।

एलिस०। मैं अपने घर वालों और दोस्तों से भाग कर आई हूं।

रानी ने इन बातों से आश्चर्य में आकर घृना और सख्ती के साथ कहा "भाग आई है!"

एलिस रानी के ऐसे घृणा के भाव को देखकर रंज के साथ कांपती और आंसू बहाती हुई बोली "हां माता! मैं भाग आई हूं! और ठीक शादी वाली रात को! आपने मेरे साथ बहुत

अच्छा बर्ताव किया है इसवास्ते मैं सब हाल आपको सुनाती हूं, फिर आपही इन्साफ कीजिये कि मेरा भागना वाजिब था या गैरवाजिब !"

इसके बाद उसने अपना पूरा हाल रानी को सुना दिया जिसके सुनतेही रानी ने आंसू बहाते हुए उसको अपनी छाती के साथ लगा लिया और कहा "हाय क्याही भयानक किस्सा है ! क्या एक अंजान लड़की के साथ ऐसा अन्याय ! वह बाप कैसा अन्याई है जो अपनी इकलौती लड़की की शादी ऐसी जबर्दस्ती के साथ करे !"

एलिस० । प्यारी मां ! उसने मेरे सुःख दुःख का बिल्कुल विचारही नहीं किया । उसको तो केवल अपने कौलकरार का खयाल था और यह कि शादी करके दोनों जायदादों को एक करदें ।

रानी० । (क्रोध के साथ) बड़ी लज्जा की बात है ! उसको तो केवल तुम्हारे सुख दुख काही विचार करना चाहिये था ! और उस तुम्हारे पति महापुरुष पर मुझको सबसे ज्यादा क्रोध है जिसने बिना तुम्हारी मर्जी के अपनी इच्छा प्रगट करदी !

एलिस० । परन्तु उससे तो कहा गया था कि मैं राजी हूं ।

रानी० ! और क्या उसने इस बात का ऐतबार करलिया !

एलिस० । मुझको तो ऐसाही मालूम है !

रानी० । तब तो उस बेचारे का भी क्या कसूर है !

एलिस० । क्या आपके खयाल में मैंने यह बुरा काम किया था कि ऐसी शादी के समय चालाकी से अपनी जगह दूसरी औरत को खड़ा कर दिया !

रानी०। ऐसी हालतों में इस बात का ठीक२ जवाब देना मुश्किल बात है! मेरे खयाल में तो तुमको उस समय साफ कह देना चाहता था कि मैं शादी न करूंगी। परन्तु अभी तुमने अपना नाम नहीं बताया?

एलिस०। मेरा नाम एलिस है! मैं आपसे सच २ कहती हूं मेरे इस नाम पर कभी धब्बा नहीं लगा परन्तु तब भी जब नाम से मेरी इतनी बेइज्जती हुई है तो मैं अब उसको नहीं चाहती। बस इससे ज्यादा और मैं कुछ नहीं कह सकती। हां जो मेहरबानी आपने मेरे ऊपर की है उसके वास्ते आपको हृदय से धन्यवाद देती हूं।

रानी उसकी बातें सुनकर किसी भारी सोच में पड़ गई। उसके होंठ कई दफे कांपे और उसके चेहरे पर मुर्दनी छागई। इस समय अपनी खूबसूरत लड़की को स्मर्ण कर रही थी जिसको मरे एक वर्ष बीत गया था। इसी सोच विचार में उस के चेहरे पर फिर से प्रफुल्लता के चिन्ह दृष्टि गोचर हुए। उस समय वह सोच रही थी कि जब एलिस कहती है कि मैं अब अपने घर पर कभी न जाऊंगी तो क्या वह मेरे पास रहेगी? यदि ऐसा हो तो एक दफे मेरा अंधेरा घर फिर से उजेला होजायगा। यह एक अच्छे खान्दान की लड़की है, पढ़ी लिखी है और मेरी लड़की से किसी तरह खूबसूरती में भी कम नहीं है! यह सोच कर उसने कहा "बेटी! अब दोही चार दिन में तुम्हें चलने फिरने की शक्ति होजायगी, अस्तु यदि तुम्हें भी मंजूर हो तो मेरा इरादा तुमको अपने पास रखने का है। यहां से मैं अपने पति के पास शहर मिलन को जाऊंगी। क्या तुम मेरी

अतिथि (मेहमान) बनकर कुछ दिन मेरे साथ रह सकती

एलिस०। परन्तु क्या आप बिना घर द्वार और बिना
की एक राहचलतू लड़की को अपने साथ रखना पसंद करे

रानी०। मैं अब जब तक अपने पति के पास न प
जाऊंगी तुमसे तुम्हारा नाम तक दोबारा न पूछूंगी और य
पहुंच कर तुम्हारे वास्ते जो कुछ उचित बन्दोबस्त होग
किया जायगा।

एलिस०। (कांपते हुए होठों से) आपने मेरे साथ ऐसी
नेकी की है कि मैं उसका बदला कभी नहीं चुका सकती।

रानी०। (दिलासा देकर) बेटी। आज तुम बहुत थोर
हो, अब थोड़ी देर आराम करलो।

यह कहकर उसने उसका मुंह चूम लिया और उसको
आराम लेने के वास्ते एकान्त में छोड़ कर आप बाहर निकल
आई। उसने दृढ़ कर लिया कि यदि उसका पति भी अस्वीक
करे तब भी वह एलिस को अवश्य अपनी लड़की बनाएगी
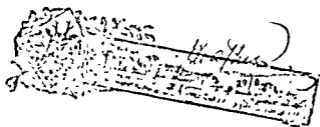
आठवां बयान।

अब पाठकों को रजिन की तरफ चल कर देखना चाहिये कि उसने अपनी स्त्री (लेडी एलिस) का अब तक क्या पता लगाया। पहिले वह सीधा पैरिस गया और वहां से उस स्टेशन पर पहुंचा जहां से उसकी स्त्री गुम हुई थी परन्तु इतने दिन के बाद अब उसको गार्ड से मालूम हुआ कि उस गाड़ी का इंजन जिसमें एलिस सवार थी रास्ते में कुछ खराब होगया था और गाड़ी कुछ मिनटों के वास्ते रोकी गई थी। ज्योंही उसने यह बात सुनी उसको विश्वास होगया कि उसकी स्त्री जरूर उसी समय गाड़ी में से भाग गई होगी। अस्तु उसने उसी समय भाड़ा देकर एक स्पेशल गाड़ी खास अपने वास्ते ठीक की और उस में सवार होकर उस जगह उतरा जहां कि एक महीना पहिले इंजन का कोई पुर्जा टूट गया था। परन्तु वहां से पहाड़ के ऊपर न चढ़ कर उसने एक तराई का रास्ता लिया और कई कोसों तक उसकी खोज में चला गया। अन्त में जब उसका कोई पता न लगा तो वह निराश होगया। वह निराश होकर लौट ने वालाही था कि एकाएक थोड़ी दूर पर उसे एक गांव दिखाई दिया जो उस जगह से जहां से एलिस गाड़ी छोड़ कर भाग गई थी लगभग पचीस कोस के होगा। परन्तु दुर्भाग्यवश इस गांव में पहुंचने पर उसको मालूम हुआ कि उसके बताये हुए हुलिये की एक लड़की जो बिल्कुल अकेली थी और जिसकी सूरत से रंज और तरद्दुद प्रगट होता था लगभग एक महीने के हुआ होगा इसी गांव में से होकर गई थी।

इतना ही पता लगने से उसमें हिम्मत आगई और उसने फिर सिपाहियों के साथ तलाश करना शुरू किया। बहुत से गांवों में होता हुआ एक दिन वह एक छोटे से गांव में पहुंचा। वहां उसको एक आदमी ने कहा कि "एक जवान स्त्री, जिसके कपड़े बिलकुल फटे हुए थे और जो थक कर कांटा हो रही थी यहां आई और यकायक बीमार होकर मर गई। उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह किसी अमीर घर की लड़की है परन्तु पास उसके फूटी कौड़ी तक नहीं निकली और न उस का किसीको हालही मालूम हुआ। (सामने वाले मकान की तरफ इशारा करके) परन्तु उस मकान में आकर टिकी थी इस से मुमकिन है कि अगाथा (मकान मालिक का नाम था) को कुछ विशेष हाल मालूम हो।"

अस्तु रजिन अगाथा के मकान की तरफ गया और वहां जाकर तथा अगाथा से मिल कर उसने कहा "मैं उस मृत स्त्री का कुछ हाल जानने के वास्ते आपके पास आया हूं जिसके साथ आपने उसके आखिरी दम तक नेकी का बर्ताव किया।"

अगाथा०। (जल्दी से) क्या वह किसी अच्छे कुल की थी?

रजिन०। (रंज के साथ) मेरा ब्याह उसके साथ होने वाला था।

अगाथा०। (रंज के साथ सिर हिला कर) महाशय! मुझ को अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मैं उसे बेसुधी की हालत में घर पर लाई थी।

रजिन०। (इस समाचार से हताश होकर) क्या उसने अपना हाल कुछ भी नहीं बताया था?

अगाथा०। नहीं महाशय, कुछ भी नहीं।

रजिन०। क्या उसका नाम भी नहीं मालूम हुआ?

अगाथा०। मैंने उससे बीसों दफे पूछा परन्तु जब जब मैंने उससे पूछा वह पागलों की तरह हँस कर अपना मुंह दूसरी तरफ फेर लेती थी।

रजिन०। अच्छा वह कपड़े कैसे पहने हुई थी?

अगाथा०। बिल्कुल फटे चीथड़े।

रजिन०। यह आश्चर्य की बात है! क्योंकि जिस स्त्री की मैं तलाश में हूं वह तो बेशक़ीमत कपड़े पहने हुई थी!

अगाथा०। इसमें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उसने अच्छे कपड़े बेच कर साधारण ख़रीद लिये होंगे।

रजिन०। (कांपते हुए ओठों से) क्या उसके पास रुपया पैसा बिल्कुल नहीं था? क्या छोटा मोटा भी कोई जेवर उसके बदन पर नहीं था?

अगाथा०। (आंसू बहाकर) नहीं महाशय! उसके पास एक फूटी कौड़ी तक नहीं थी!

रजिन रंज और तरद्दुद में थोड़ी देर तक इधर उधर टहलता रहा। वह रह रह कर इस बात पर पछताता था कि उसकी स्त्री ने उसी के कारण इतनी मुसीबतें झेलीं —आखिरकार चित्त स्थिर करके उसने फिर कहा "तुमने कहा है कि उसकी आंखें नीली थीं और बाल भूरे?"

अगाथा०। हां, और उसके हाथ पैर बहुत छोटे२ और मुलायम थे। वह बहुत ही धीरा बोल बोलती थी और उसकी बातों से पाया जाता था कि जैसे वह किसी जगह की रानी हो

रजिन०। अच्छा, वह मरी कब?

अगाथा०। आज पन्द्रह दिन हुए।

अब उसको विश्वास होगया कि वह जरूर उसकी स्त्री थी अस्तु उसने फिर कहा, "क्या उसकी ऐसी कोई चीज नहीं है जो आप मुझको दिखा सकें?"

अगाथा०। पोशाक तो उसकी ऐसी चीथड़े हो गई थी कि मैंने फौरन ही उसको बाहर फेंकवा दिया था, हां और जोकुछ है अगर आप चाहें तो देख सकते हैं।

रजिन०। अच्छा जो २ चीज उसकी हो मुझको सब दिखादो।

अगाथा उठ कर भीतर चली गई और थोड़ीही देर बाद एक छोटी सी गठड़ी लिये हुऐ पहुंची। उस गठड़ी में सिर्फ दो कपड़े निकले जो करीब २ रद्दी की हालत को पहुंच चुके थे। उनमें एक कपड़ा भूरे रंग का था, रजिन ने टटोल कर उसकी जेब में से एक रूमाल निकाला। रूमाल के निकालते ही उसकी अजीब हालत होगई। वह लंबी २ सांसे लेने लगा और फिर निराश होकर कुर्सी पर लेट गया। अब उसको विश्वास होगया कि वह एलिस ही थी जिसने ऐसी बुरी अवस्था को पहुंच कर प्राण त्याग किया क्योंकि उस रूमाल में से वैसीही गुलाब के इतर की खुशबू आ रही थी जैसी कि एलिस के कपड़ों में उस समय आती थी जब वह उसके साथ रेलगाड़ी में बैठा था इसके अतिरिक्त उस रूमाल के एक कोने में 'ए' लिखा हुआ था जो उसके नाम का पहिला अक्षर है।

अगाथा०। क्या आपको कुछ पता लगा?

रजिन०। हां, मैं जो कपड़ों को। जरूर यह वही थी

. . " सोज में हूं।

यह कहते हुए रंज के साथ उसने सिर नीचा कर लिया और थोड़ीही देर में बेहोश होगया। लगभग पाव घंटा चुप रहने के बाद अगाथा हाथ से हिला कर उसको होश में लाई और कहा "क्या आप उस जगह को देखना चाहते हैं जहां वह दफ्न की गई थी?"

रजिन उठकर उसके पीछे होलिया। वह सीधी उस जगह पहुंची जहां एलिस की कबर थी, रजिन ने टोपी उतार कर कबर को सलाम किया और फिर टकटकी बांध कर बहुत देर तक उसकी तरफ देखता रहा। वहां से लौटने पर उसने अगाथा के हाथ पर सौ रुपये का नोट रक्खा और कहा कि मैं आपको घर पहुंच कर खत लिखूंगा। उसने मकान पर चलने और खाना खाने के वास्ते जिद्द की परन्तु रजिन ने न माना, वह वहां से उसी समय चल कर टरन पहुंचा जहां से एलिस उसके साथ से बिछड़ी थी और वहां पहुंच कर उसने पूरा २ हाल चीठी में लिख कर एलिस के बाप के पास भेज दिया।

उसने उसी समय एक चीठी आर्दर को भी इस मजमून की लिखी कि अब मेरा अपने चचा की जायदाद पर कोई दावा नहीं है, तुम जिस तरह चाहो उसको काम में लाओ। यह ... यह जङ्गल की तरफ अकेला निकल गया।

इधर एलिस का बाप (रईस) रजिन की कोई चीठी न ... से बहुत तरद्दुद में था मगर चीठी उसके पास पहुंचती ... है? चीठी तो गलिया हजम कर जाती थी! यह बड़ीही ... थी। यह बराबर रईस की सेवा टहल करके उसको

खुश रक्खा करती इसलिये रईस ने भी समझ लिया कि एलिस
की जगह अब यही मेरी लड़की है।

अब जरा एलिस का भी हाल सुनिये, वह एक दिन कमरे
में बैठी पिछली बातों पर रंज कर रही थी कि उसको बाप का
घर छोड़े अभी चार मास भी नहीं हुए और बाप उसे बिल्कुल
भूल गया कि इतने में सामने एक फटे हुए अखबार पर नज़
पड़ गई। उसको उठा कर वह पढ़ने लगी। यकायक उसक
चेहरा जर्द होगया। जहां पर वह पढ़ रही थी उसका ऊपर
हिस्सा फट गया था सिर्फ कुछ पंक्तियां नीचे के मजमून
बची हुई थीं। उसने पूरा मजमून पढ़ा और जर्द हो
यकायक चीख उठी। जोकुछ उसमें लिखा था वह यह
"शादी जो.........रोदर के मालिक और संघू के रईस
लौंडी गलिया के साथ हुई वह बहुतही धूमधड़ाके की
शादी में दुल्हे की तरफ से बहुत से बेशकीमत तोहफे
और जिस समय दुलहिन उम्दे कपड़े और गहने पहि
बाहर निकली वह कहीं की रानी मालूम होती थी।
होजाने पर सब लोग मय दुल्हा दुल्हिन के पैरिस की तरफ
रवाना हुए।

बस इतनाही मजमून फटने से बच रहा था जिसको प
कर एलिस का दिल टुकड़े २ हो गया था। उसने अपने मन
रंज के साथ कहा, "वाहरे ईश्वर तेरी महिमा! अभी केव
चार महीने मुझको घर से निकले हुए और इतनेही में मेरे
बाप ने मुझको ऐसा भुला दिया!

इधर गलिया ने रईस को खुश करके उस पर अपना

प्रभाव डाल रक्खा था क्योंकि थोड़े ही दिनों के अन्दर उसने रॅम के दिल से एलिस का ध्यान भुला दिया था। वह अपने मन में कहती थी कि अगर रजिन मेरे से राजी नहीं है तो क्या हर्ज है, मेरी खुशामद करनेवाले और बहुत से हो जाएंगे॥

नौवां बयान।

शहर फ्लारेंस में एक अमरीका निवासी अफसर के मकान में आज बड़े भारी जलसे का सामान दिखाई देता है। झाड़, फ़ानूस और हांडियों से मकान जगमगा रहा है और सुरीले गाने से जो रात के समय हवा में गूंज कर दूर दूर तक फैले हुए हैं बड़ाही आनन्द मालूम होता है। इधर भीड़भाड़ की भी कमी नहीं है, कोई आता है कोई जाता है कोई हँसता है कोई गाता है। इसी तरह रात के ग्यारह बज गए। इस समय जलसे में चार आदमी नये पहुंचे और उनके आतेही जलसे भर में गोलमाल मच गया और सब लोग उन्हीं की तरफ देखने लगे। इन चारों में दो तो इरवेंट के राजा और रानी थे, एक उनकी बनाई हुई लड़की थी जिसका नाम अलीसिया था और चौथा एक मुसैव्वर था जिसका नाम आरचो था।

ज्योंही यह लोग कमरे में पहुंचे एक आवाज ने पर्दे के अन्दर से पूछा "यह लड़की कौन है?"

जवाब०। इस लड़की को इरवेंट की रानी साहबा ने गोद लिया हुआ है और इनका नाम अलीसिया है।

आवाज०। 'अलीसिया!' अच्छा यह जवान आदमी साथ में कौन है?

जवाब०। यह अमरीका के रहने वाले मुसौअर हैं और नाम इनका आरची है।

आवाज०। (घृणा के साथ) आरची और मुसौअर! (जल्दी के साथ) अच्छा उसका आपलोगों से सम्बन्ध क्या है?

जवाब०। कुछ नहीं।

आवाज०। क्या तुम उनको जानते हो?

जवाब०। अच्छी तरह से।

आवाज०। क्या हमारी मुलाकात उन लोगों से करा सकते हो?

जवाब०। यदि आप चाहें तो जरूर करा सकते हैं।

"मैं जरूर चाहती हूं, भला नई मुलाकातें कौन बढ़ाना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त जब से मैंने सुना है कि रानी साहब ने एक लड़की गोद ली है मेरी उत्कण्ठा उससे मिलने की और भी बढ़ गई है।"

यह कहती हुई गलिया जो भीतर बैठ कर आने वाले मेहमानों को ध्यान के साथ देख रही थी साटन का लहँगा पहिने मटकती हुई बाहर निकल आई। पहिले तो उसकी मुलाकात रानी और राजा के साथ कराई गई और इस बीच में उस बदमाश गलिया की सूरत देखतेही अलीसिया (एलिस) को हौलदिल उठ खड़ा हुआ परन्तु कोशिश करके उसने धीरे २ दिल को दबाया और निश्चय कर लिया कि यदि गलिया कुछ पूछे भी तो वह साफ कह देगी कि वह उसको बिल्कुल नहीं जानती। इतनेही में रानी से दो चार बातें करके वह एलिस की तरफ मुड़ी। थोड़ी देर तक तो बगैर जबान हिलाये ये दोनों

एक दूसरे की तरफ देखती रहीं। इसके बाद यकायक उसने आरची की तरफ देखकर कहा "मुझको आपके साथ जान पहिचान होने की बड़ी भारी खुशी हुई है क्योंकि मैंने आपके मुसौव्वरी के इल्म की बड़ी तारीफ सुनी है।"

आरची०। इस बात का मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

गलिया यह बात सुनकर हँसी और उन दोनों की तरफ टटोलने वाली नजरों से देखने लगी, परन्तु एलिस उसकी इस हरकत से बहुत भयभीत हुई। चाहे वह इस बात से गलिया की बड़ी एहसानमन्द थी कि उसने उसको पहिचान कर भी जाहिरा कुछ नहीं कहा तब भी उसको खटका लगाही हुआ था कि कहीं वह मेरा भण्डा न फोड़दे। एलिस ने सोच रक्खा था कि यदि वह उसका भण्डा न फोड़ेगी तो शाम को एकान्त में उसके साथ बातचीत करके अपने पिता का हाल दरियाफ़ करूंगी।

गलिया०। (एलीसिया से) क्यों जी, क्या तुम फ्लारेंस में भी कुछ दिन रही हो?

एलीसिया०। कोई तीन चार महीने।

गलिया०। ठीक है, तुमने देखा होगा कि वह कैसा रमणीक शहर है।

इस बात से एलीसिया का माथा ठनका क्योंकि यह फ्लोरेंस शहर ही था जहां उसने आरची के साथ प्रेम का अंकुर जमाया था परन्तु अपने को सम्हाल कर उसने कहा, "वास्तव में बहुत ही अच्छा है।"

गलिया०। क्योंकि तुम उसको इङ्गलैंड से भी रमनीक सम-

भती हो ?

एलीसिया पहिले तो इस बात से गर्द होगई परन्तु फौरन ही सम्हल कर उसने कहा, "मैं समझती हूं इटली शहर जहां अयकी मैं जाड़े भर रही हूं बहुत ही रमनीक है।"

गलिया०। मैं भी तुम्हारी राय से इत्तफाक करती हूं परंतु यह तो बताओ क्या तुम कभी मोंटगढ़ भी गई हो ?

एलिसीया०। (दिल मसोस कर) नहीं।

गलिया०। वाह ! यह शहर तो देखने योग्य है, मेरी वह जन्मभूमि है। इस समय मेरे पति एक जरूरी काम से बाहर गये हैं यदि वह होते तो आपके साथ खुशी से मुलाक़ात करते। खैर! अभी तो हमारा इरादा यहां रहने का कुछ दिन है ही इसवास्ते आपके साथ प्रायः मुलाकात हुआ करेगी।

उसकी इन पेचीली बातों को सुन २ कर एलीसिया घबड़ा रही थी। वह चाहती थी कि किसी तरह इस बदमाश औरत से पीछा छूटे। अस्तु ज्योंहीं उसकी बात खतम हुई एलीसिया यह कहकर वहां से चलती हुई "मुझको अपनी मां से कुछ जरूरी काम है इसलिये मेरी गैरहाजरी माफ कीजिये।"

उसके साथही आरची भी चलने को तैयार हुआ परंतु गलिया ने जल्दी से उसकी कलाई पकड़ कर कहा "मैं आपसे एकान्त में कुछ बातें करना चाहती हूं।"

अस्तु दोनों एक एकान्त कमरे की तरफ बढ़े और वहां पहुंच कर गलिया ने कहा, "क्यों साहब यह क्या कारण है कि आप अपने को आरची कहते हैं ?"

आरची०। क्योंकि यही मेरा नाम है।

गलिया०। खूब! अब तुम अपने को किसी तरह नहीं छिपा सकते क्योंकि मैं तुमको खूब पहिचानती हूं!

आरची०। मैं कब कहता हूं कि तुम मुझको न जानती होगी?

गलिया०। तो फिर तुमने मुझसे अपने को छिपाया क्यों?

आरची०। इसी वास्ते कि मैं दूसरे लोगों के सामने अपने को जाहिर करना नहीं चाहता।

गलिया०। क्यों?

आरची०। क्यों क्या? मैंने अपने रिश्तेदारों को छोड़ दिया है और यह रोजगार अख़्तियार किया है, मैं चाहता हूं कि जब तक मैं इस काम से मशहूर न होजाऊं मैं किसी पर अपना असली नाम प्रगट करना नहीं चाहता।

गलिया०। (कुछ देर चुप रहने के बाद हँसकर) परन्तु तुमने अपना नाम आरची ही क्यों रक्खा?

आरची०। मैंने यह नाम नये सिरे से नहीं रक्खा, मेरे चार नाम हैं और आरची भी उनमें से एक है।

गलिया०। और तुमने बाकी के तीनों नामों को क्यों छोड़ दिया?

आरची०। क्योंकि वे लोगों में बहुत ज्यादा मशहूर हैं।

गलिया०। (घृणा मिली हुई हँसी के साथ) तो अपना काम निकालने के वास्ते तुमने अपने पुराने नाम को इस्तीफा देदिया?

आरची०। मैंने उसको कभी इस्तीफा नहीं दिया, मैं अपने उस नाम पर कभी धब्बा लगना नहीं देख सकता।

गलियाज़। बहुत ठीक ! अच्छा तुमने मुझको मुबारकबाद क्यों नहीं दिया ?

आरची०। (घृणा के साथ) क्योंकि मैं उसका देना उचित नहीं समझता।

गलियाज़। (क्रोध के साथ) चाहे जैसे मानिये, मैं गा-स्गाम रोदर की मालकिन ज़रूर हूं।

आरची०। (क्रोध और घृणा के साथ) यदि तुम्हारे ऐसे दिमाग चढ़े हुए हैं और तुम अपनी जिन्दगी के प्याले को ऐशोइशरत से भरा हुआ समझती हो तो जय मैं तुमको मुबारकबाद देता हूं।

गलियाज़। (पागलों की तरह चिल्ला कर और उसको असली नाम से पुकार कर) तुम अच्छी तरह से जानते हो कि मेरा दिमाग क्यों चढ़ा हुआ है ! तुम खूब जानते हो कि मेरी जिन्दगी के प्याले को ऐशोइशरत से किसने भरा ! परन्तु रजिन ! यह सब तुम्हारीही बदौलत मुझसे छीने गए हैं।

आरची०। बेशक आरची और रजिन एकही आदमी का नाम है। जब लेडी एलिस की कबर को मैं अपनी आंखों से देख कर लौटा तो मैं सीधा फ्लारेंस में आया परंतु यहां पहुंचतेही मेरी उस साथी मुसौअर से भेंट हुई जो दो वर्ष पहिले मुझको शहर रोम में मिला था। उसने मेरी बुद्धि देखकर उस समय भी मुझको मुसौवरी सीखने पर बहुत जोर दिया था परन्तु मेरे चचा ने जो उस समय जीते थे मुझको मुसौवरी सीखने से मना किया। अब इस मौके पर जब मैंने अपनी मुसीबत का उसको सब हाल सुनाया तब उसने फिर मुझे मुसौवरी सीखने के वास्ते कहा और

मैंने भी उचित मौका देखकर उसकी बात स्वीकार करली।

यहांपर पाठकों को यह भी जान लेना चाहिये कि गलिया किस तरह रोद्र घराने की मालिक होगई। जब रजिन को एलिस का मरना निश्चय होगया तब उसने एक चीठी रोद्र के भान्जे आर्थर के पास भेजी थी कि अब मेरा चचा की जायदाद पर कोई दावा नहीं है, तुम उसको जिस तरह उचित जानो काम में लाओ। बस इस खत के पातेही वह बिल्कुल जायदाद का मालिक होगया और गलिया से उसने शादी करली। यदि वह अखबार जिसको एलिस पढ़कर अपने पति की तरफ से हताश होगई थी फटा हुआ न होता तो उसको मालूम हो जाता कि गलिया की शादी रजिन के साथ नहीं हुई थी बल्कि आर्थर के साथ हुई थी।

रजिन की बात सुनकर गलिया क्रोध और घृणा के साथ कहने लगी "रजिन! तुम बड़ेही मूर्ख निकले! यदि तुम मेरे पास रहे होते तो तुमको मालूम होता कि आनन्द क्या चीज है! मेरे समान पतिभक्त स्त्री का तुमको मिलना कठिनही नहीं बल्कि असम्भव है!"

रजिन०। खैर, माफ कीजिये। इस समय आपका क्रोध बहुतही बेढङ्ग उभड़ा हुआ है, अस्तु अब मैं विशेष यहां ठहरना नहीं चाहता।

यह कहकर वह उठा और क्रोध भरे चेहरे से तन कर उस के सामने खड़ा होगया। उसने अपने हाथ जो दोनों गालों में रखे हुए थे पीछे की तरफ कर लिये और फिर घृणा के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

उसकी इस समय की मूरत देखकर गलिया उसपर मोहि होगई क्योंकि लगातार कई एक दिल दुखाने वाली बातें कह पर भी रजिन की जबान से एक शब्द भी असभ्यता का न निकला था अस्तु वह मनही मन अपने को धिक्कारने लगी मैंने नाहक ऐसे शरीफ आदमी को हाथ से जाने दिया, मुझे जरूर किसी तर्कीब से इसके साथ शादी करनी चाहिये थी यह सब सोचती हुई वह खिलखिला कर हँस पड़ी और बोल "आप जैसे लायक पुरुषों को ऐसी तुच्छ बातों पर ध्यानही न देना चाहिये। मैंने सुना है कि जब से तुम्हारी शादी इरवें की रानी की लड़की से हुई है तुमने अपने समय को बिल्कुल फजूल नहीं खोया। चाहे तुमने कहा था कि मैं जिन्दगी भर एलिस की खोज करूंगा! परन्तु मेरी समझ में तुम रईस की लड़की को एकदमही भूल गये।"

रजिन०। (आश्चर्य्य के साथ) यह क्या! क्या तुमने मेरी चीठी नहीं पढ़ी थी?

गलिया०। कौन चीठी?

रजिन०। वही जो मैंने फ्रांस से भेजी थी!

गलिया को झूठ कहते हुए जरा भी डर और लज्जा न हुई और उसने कहा "नहीं, मुझको तो तुम्हारी कोई चीठी नहीं पहुंची और मैं तुमसे सच कहती हूं कि इसी कारण रईस भी तुमसे खुश नहीं हैं।"

रजिन०। तो क्या तुमको विश्वास है कि रईस को अपनी लड़की एलिस के मरने का हाल नहीं मालूम!

गलिया०। (आश्चर्य्य से जाहिरा घबड़ाकर और उसको

टोलने वाली नजरों से देखकर) मरने का हाल?

जैसा गलिया का खयाल था वास्तव में वैसी हालत थी क्योंकि रजिन को विल्कुल नहीं मालूम था कि एलीसिया और उसकी प्यारी एलिस एकही हैं और इधर एलिस भी नहीं जानती थी कि आरची और रजिन एकही आदमी का नाम है अस्तु गलियाको यह जान कर हद्द दर्जे की खुशी हुई। उसने उसीदम निश्चय किया कि जहां तक बस चलेगा मैं इन दोनों को कभी यह भेद न जानने दूंगी और जहां तक जल्द सम्भव होगा उन दोनों में विरोध करा दूंगी जिससे उनकी आपस में शादी न होने पावे।

इन विचारों ने उसको सुस्त और कमजोर बना दिया और वह कुर्सी पर टासना लगा तथा रजिन को दूसरी कुर्सी पर बैठने का इशारा करके बोली "तुमने यही कहा है न कि वह मरगई?"

रजिन०। हां, वह मर चुकी है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हारे पास चीठी नहीं पहुंची! मैंने उस चीठी में कुला-सा हाल आदि से अन्त तक लिख भेजा था।

चालाक गलिया ने अपने मुंह को दोनों हाथों से ढक लिया जिससे समझे कि उसको इस बात के सुनने से बहुत रंज हुआ है परन्तु वास्तव में वह मुंह पर हाथ रखकर मनही मन प्रसन्न हो रही थी कि उसका दिया हुआ धोखा अभी तक उसका पीछा किये हुए है। अस्तु उसने रंजीदा चेहरा बना कर कहा "अच्छा ईश्वर के आगे किसीका बस नहीं है! किस्मत जो चाहे सो कराये! कदाचित तुम्हें उस शाम का स्मर्ण हो जब मैंने और तुमने मन्चू की झील के किनारे बातें की थीं और तुम

के मैंने वह अंगूठी दी थी जो एलिस की उंगली में ठीक नह
हुई थी परन्तु मेरी उंगली में ठीक होगई थी । अब कदाचि
वही अंगूठी एलीसिया पहिने। परन्तु बाजी दन्तकथा भी कैस
ठीक उतरती है, देखिये एलिस की उंगली में अंगूठी न होने
उसको कैसे २ दुःख भोगने पड़े और मेरी उंगली में ठीक होग
तो मैं कैसे आनन्द में हूं! और जायदाद के विषय में आर्थर क
जब तबीयत लगी हुई थी तो उसको मिलही गई और शादी
में छल करने का हाल भी मैंने आर्थर को सुना दिया जिसे
उसने मेरी चालाकी की बड़ीही तारीफ की कि मैंने एलिस के
बारे में ऐसा कपट प्रबन्ध रचा.................

रजिन० । (क्रोध के साथ उसकी बांह पकड़ कर) तुमने
एलिस के वास्ते कपट प्रबन्ध रचा था? तुमने पहिले भी कहा
था कि उसने तुमसे सब हाल कह दिया था, और तुमसे इसमें
मदद मांगी थी ।

गलिया० । (अपनी बांह छुड़ा कर और पीछे हट कर) क्या
मैंने कहा था? परन्तु मुझको उस बात का बिलकुल ध्यान नहीं
जोकुछ भी हो परन्तु मेरे वास्ते तो अच्छाही हुआ ।

यह कहकर उसने उसके जाने के वास्ते दर्वाजा खोल
दिया। रजिन उसकी इस आखिरी बात से जिगर पर पत्थर
रखकर उठ खड़ा हुआ। यदि वह औरत की जगह मर्द होती
तो वह उसको फर्श पर पटक कर फैारनही इस बात का मजा
चखा देता । इधर गलिया दर्वाजा बन्द करके रजिन को और
दुःख पहुंचाने की गर्ज से खिलखिला कर हँसी और इससे उस
बेचारे को और भी रंज हुआ ॥

दसवां बयान।

उपरोक्त जलसे के दूसरे दिन प्रातःकाल के समय एक बंद गाड़ी शहर फलार्ट्स से फियेसोल की तरफ आती दिखाई देती है। देखतेही देखते वह एक पहाड़ी के ऊपर चढ़ गई। अब उस की झिलमिली में से एक गोरा हाथ बाहर निकला। थोड़ी देर बाद एक काली मगर खूबसूरत सूरत ने खिड़की में से झांक कर बाहर की तरफ देखा। गाड़ी इस समय धीरे २ चल रही थी, यहां तक कि कुछही कदम बढ़ने के बाद वह एक मठ के दर्वाजे पर खड़ी हो गई और कोचवान गाड़ी से नीचे उतर पड़ा।

मठ के फाटक पर जो सिपाही था उससे गाड़ी में बैठी हुई गलिया ने पूछा, "क्या पादड़ी साहब भीतर हैं? यदि भीतर हों तो उनको बुला दो।"

सिपाही अच्छा कह कर भीतर चला गया। उसके जाने के दस मिनट बाद एक बुड्ढा आदमी फाटक से निकल कर गाड़ी के पास पहुंच गया। गलिया उसकी भोली भाली सूरत देख कर मन में खुश हुई और बोली, "क्या आपही का नाम पादड़ी साहब है?"

पादड़ी०। हां।

गलिया०। मुझको आपके साथ एक बहुतही जरूरी काम है नहीं तो इतने सबेरे मैं आपको कभी तकलीफ न देती। क्या आप थोड़ी देर के वास्ते गाड़ी में बैठ सकते हैं?

पादड़ी ने खुशी से इस बात को मंजूर कर लिया। वह गाड़ी में चढ़ा और नौकर ने दर्वाजा बन्द कर दिया।

इस बात को सुनकर गलिया ने जमीन की तरफ आंखें फेर कर कहा "अच्छा महाशय ! पहिले यह बताइये कि आपने कभी पहिले भी मुझको देखा है।"

पा०। हां, जरूर देखा है।

गलिया०। कहां?

पा०। यहीं ! इस गांव के छोटे गिर्जा घर में।

गलिया०। ठीक है, आपकी दृष्टि और स्मरण शक्ति बहुत ही दुरुस्त है।

पा०। अच्छा यह तो बताओ तुम आई किस गर्ज से हो? तुम्हारी शादी रजिन के साथ..........

गलिया०। (जल्दी से) आपका कहना बहुत ठीक है। अच्छा क्या आप और सब लोगों के चेहरों को देख कर भी पहिचान सकते हैं जो उस शादी के समय मौजूद थे?

पा०। उन दोनों पुरुषों को तो मैं जरूर देखते ही पहिचान जाऊंगा, सिर्फ उस स्त्री को नहीं पहिचान सकता जो नकाब से अपना मुंह छिपाये हुए थी क्योंकि एक तो वह दूर खड़ी थी और दूसरे वह जब तक यहां रही जमीनही की तरफ देखती रही।

गलियाः। और क्या मैंने नकाब में अपना मुंह नहीं ढका हुआ था?

पा०। तुमने भी ढका हुआ था, परन्तु तुम्हारी सूरत लम्प के करीब होने के कारन मैंने देखली थी।

गलिया इस बात से मनही मन बहुत खुश हुई क्योंकि ने उसके मन की बात कही थी। जरा देर ठहर कर उस

े फिर पूछा "क्या आपने उन लोगों में से फिर भी कभी किसी ो देखा है ?"

पा०। (उसको शक की नजर से देख कर) हां, एक को।

गलिया०। कौन एक ?"

पा०। मैंने रजिन को दूसरे शहरों में कई मर्तबे देखा है और एक दफे यहां भी देखा है।

गलिया०। क्या आप दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि वह ाजिन ही था ?

पा०। मुझको धोखा होना असम्भव है।

गलिया०। अच्छा वह यहां कितने दिन तक रहा।

पा०। मैं यह ठीक २ नहीं बता सकता, परन्तु यहां तो सने अपना नामही और रक्खा हुआ था, मैंने उसको यहां क खूबसूरत लड़की के साथ देखा था, दरियाफ़ करने पर ालूम हुआ कि उसका नाम आरची है और उसी लड़की के ाथ उसकी शादी हो गई है।

गलिया०। ठीक है, यही मैंने भी सुना है। परन्तु क्या ाप बता सकते हैं कि वह लड़की है कौन ?

पा०। वह हरवेंट के बादशाह की गोद लीहुई लड़की है।

गलिया०। मैं आपको इस बात का हृदय से धन्यवाद ती हूं कि आपने सब बातें मुझसे सब२ कहदीं। आपने स्वी- ार किया है कि मेरी और उस आदमी की शादी जो अपने ा अब आरची कहता है कराई थी।

पा०। जरूर कराई थी।

गलिया०। यदि आवश्यकता हुई तो क्या आप औरों के

सामने भी इसी तरह पर कह सकेंगे?

पा०। भला मैं इस बात से कैसे बदल सकता हूं।

गलिया०। अच्छा जो कुछ आपने कहा है क्या वह
डरवेंट के बादशाह के नाम एक खत में लिख कर भेज सकते

पा०। मुझको इसके लिखने में भी कोई उज्र नहीं है,
नहीं चाहता कि एक बेकसूर दुःख भोगे।

गलिया०। तो फिर लिख दीजिये।

पा०। अच्छा मैं मठ में से जाकर लिख लाता हूं, तु
उसको लिफाफे में बन्द करके डाक में छोड़ देना।

यह कहकर वह गाड़ी में से उतरा और मठ में चला गय
कोई पाव घंटे में वह फिर बाहर आया और उसने एक लपेट
हुआ कागज गलिया के हाथ पर रख दिया। गलिया ने उसके
कांपते हुए हाथों से खोला, यह लिखा हुआ था:—

गिर्जाघर—फियेसोल जनवरी ३१ सन् १८.........

मैं राजा साहब डरवेंट को इस बात की इत्तला देता हूं वि
वह मुसैावर जो अपना नाम आरचीबतलाता है दगाबाज है
उसकी शादी एक लड़की के साथ जो उससे उम्र में कई वर्ष
छोटी है मैंने पन्द्रह जूलाई सन् १८—ई० में कराई थी। मैंने उसी
बेकसूर स्त्री के कहने पर यह खत लिखा है।

पादड़ी।

गलिया ने पादड़ी को बहुतसा धन्यवाद देने के बाद वह
चीठी तोड़ मरोड़ कर अपनी छाती पर रखली। उसको एक
टुकड़े कागज पर पादड़ी के हाथ की पांच, चार सतरें लिखी

हुई मिल जाने से बड़ीही खुशी थी! क्योंकि इस समय दो आदमी जिनको वह अपना दुश्मन समझती थी केवल उसकी दया पर थे। यदि वह चाहती तो उनसे ऐसा बदला ले सकती थी कि फिर वह किसी प्रकार न उठ सकें। ज्योंही यह विचार बिजली की तेजी के समान उसके दिमाग में पहुंचा, उसने कहा "यदि बादशाह आपको बुलाकर यह हाल पूछे तो आप उत्तर देने में हिचकेंगे तो नहीं?"

पादड़ी०। हिचकने की क्या बात है? परन्तु मैं कल इटली को जाने वाला हूं और ठीक २ यह नहीं बता सकता कि लौटूंगा कब तक।

गलिया पादड़ी की यकायक रवानगी सुनकर मन में बहुत ही खुश हुई। उसने उसको सलाम करके अपने कोचवान को शीघ्र गाड़ी हांकने का हुक्म दिया और शहर में पहुंच कर उसने उस लिफाफे को जिसमें बेगुनाह एलिस और उसके प्यारे पति की बर्बादी लिखी हुई थी, अपने हाथ से चिट्ठियों वाले सन्दूक में छोड़ा। इसके बाद वह जल्दी के साथ थकावट और आज दिन भर की उलझन को मिटाने के लिये घर पहुंच कर आराम से सोगई।

पाठक महाशय! अब जरा राजा साहब हर्बर्ट की तरफ झुकिये और देखिये कि वह क्या कर रहे हैं। इसी ऊपर वाली घटना के दूसरे दिन सबेरे डाकिये ने राजा साहब के हाथ में कई एक चीठियां दीं और सबसे पहिली चीठी जो उन्होंने पढ़ी वह तरद्दुद में डालने वाली पादड़ी साहब की थी। उन्होंने उस चीठी को आंखें फाड़ २ और ओंठ काट २ कर कई दफे पढ़ा,

अन्त में उन्होंने क्रोध से चिल्ला कर कहा "यह असम्भव है कि मुझको ऐसा धोखा दिया गया हो! मैं इस चीठी पर कभी भरोसा नहीं कर सकता! चाहे मैं उसका पुराना हाल कुछ नहीं जानता तब भी मैं उसकी सचाई और ईमान्दारी की जहां कोई कहे चल कर कसम खा सकता हूं।"

राजा साहब के इतना बेहाल होने का कारण एक यह भी था कि वह आरची को मन से अपना लड़का बना चुके थे और इस समय एलिस का ध्यान आजाने से वह और भी परेशान होगये अस्तु उन्होंने चिल्ला कर कहा "ऐ प्यारी लड़की! तुझको यह समाचार सुनकर बड़ा रंज होगा क्योंकि पहिले तेरी शादी तेरी इच्छा के विपरीत एक आदमी के साथ जबर्दस्ती कराई जाती थी जिससे तुझको इतना दुःख भोगना पड़ा और अब तू एक ऐसे आदमी से जुदा की जाती है जिसके साथ हद्द से ज्यादा तेरी मोहब्बत थी! (कुछ रुक कर) परन्तु अब उचित यही है कि जहां तक जल्द सम्भव हो तुझको यह समाचार सुना देना चाहिये जिसमें और मोहब्बत न बढ़ने पावे। अब मैं कभी किसी आदमी की बात पर विश्वास न करूंगा।"

इतनेही में किसीने उसका कन्धा पकड़ लिया और उसने चौंक कर पीछे की तरफ जो देखा तो अपनी स्त्री को खड़ा पाया।

स्त्री०। (चीठी की तरफ देखकर) यह क्या है?

उसके पति ने चीठी उसके हाथ में देदी, उसने पढ़ा और यकायक जोर से बोल उठी "मैं इसपर विश्वास नहीं कर सकती। यह जरूर किसी दुश्मन की साजिश है!

पति०। मेरे खयाल में तो यह सच मालूम होती है परन्तु

आरची से पूछने के पहिले मैं पादड़ी के पास जाकर सब हाल दरियाफ़ करना चाहता हूं।

स्त्री०। ज़रूर जाइये, जबतक इस बात का पूरा पूरा पता न लगजाय हम लोगों को आराम नहीं मिल सकता। हाय! हमारी भोलीभाली लड़की को यह सुनकर कितना दुःख होगा।

पति०। मेरी समझ में तो अभी एलिस पर यह भेद प्रगटही न करना चाहिये। यदि यह बात ठीक निकली तो हमलोग उसका दिल बहलाने के वास्ते उसको किसी दूसरे मुल्क में लेकर चले चलेंगे।

स्त्री०। परन्तु यदि पादड़ी कहभी दे तब भी हमको आरची से ज़रूर पूछना चाहिये, सम्भव है कि उसको अपने बचाव की कोई तदबीर मालूम हो।

पति०। अच्छा पहिले मैं पादड़ी साहब से हाल तो दरियाफ़ कर आऊं।

यह कहकर उसने घोड़ा कसाया और पादड़ी के मठ की तरफ़ रवाना हुआ। इसी समय एलिस अपने कमरे में बैठी आरची की इन्तज़ारी कर रही थी परन्तु न तो वही आया और न उसका कोई संदेसाही पहुंचा इससे वह निराश होकर कमरे में इधर उधर टहलने लगी और रह रह कर गलियां और उसकी मुलाकात पर सन्देह करने लगी।

इधर राजा साहब पादड़ी के यहां से लौट कर घर पहुंचे। उनकी बेचैन सूरत देखकर जल्दी से उनकी स्त्री ने पूछा "क्या वह मिला?"

पति०। आज वह कहीं काम से बाहर गया हुआ है।

स्त्री० । अब तो कोई समाचार मालूम न हुआ होगा ?

पति० । उसके मातहत मुंशी ने कहा है कि जोकुछ उसं लिखकर भेजा होगा वह कभी भूठ नहीं हो सकता क्योंकि जिस बात पर उसका पूरा विश्वास होता है उसीको वा लिखते हैं ।

स्त्री० । तो अब हमलोगों को क्या करना चाहिये ?

पति० । हमलोगों को फौरन यहां से चले चलना चाहिये जिससें अब एलीसिया की आरची से मुलाकात ही न हो ।

स्त्री० । आपको आरची से जरूर पूछना चाहिये, सम्भव है कि वह अपने बचाव का कोई उपाय जानता हो। मेरी समझ में यह बात बिल्कुल झूठ है !

पति० । (रंज के साथ) परन्तु मुझको आशा नहीं है कि वह ऐसा कर सके ।

यह कहकर उसका पति उठा और आरची के कमरे में गया परन्तु वहां नौकर की जबानी मालूम हुआ कि वह कहीं बाहर गया है अस्तु उसने नौकर से पूछा कि वह कबतक बाहर से आवेगा ।

नौकर० । मैं नहीं कह सकता ।

राजा० । वह यहां से कै बजे गया था ।

नौकर० । प्रातःकाल जो उत्तर की तरफ रेलगाड़ी जाती है उसी में गए हैं ।

इस बात के सुनतेही राजा साहब को विश्वास होगया कि पादड़ी की बात सच है। उसने सोचा उसको जरूर पादड़ी की चीठी का हाल मालूम होगया है इसी वास्ते वह भाग गया ।

परन्तु वह अपनी स्त्री के पास कमरे में लौट आया और यह हाल उसको सुनाया। थोड़ी देर तक दोनों में बहस होती रही, आखिर यह तय पाया कि एलिस को भी यह हाल सुना देना चाहिये। एलिस बुलाई गई और पादड़ी की चीठी उसको पढ़ने के वास्ते दीगई।

उसने उसको आखीर तक पढ़ा और फिर क्रोध के साथ हाथ से तोड़ मरोड़ कर कहने लगी 'क्या आप उनसे मिले हैं? क्या वह अपने को बेकसूर साबित नहीं कर सकते?'

उसके बाप ने जवाब दिया "नहीं, वह तो इस शहर सेही कहीं चला गया है!"

एलिस०। (कांपते हुए होठों से) तो......तो आपको पूरा विश्वास होगया कि वह कसूरवार है?

बाप०। (गम्भीरता से) सबूत तो इस समय तक जोकुछ मिला है वह जरूर उसके खिलाफ है।

इस समय उस मकान के अन्दर इतना रंज फैला हुआ था कि जिसका बयान करना असम्भव है। बेचारी एलीसिया को अपनी उभड़ती जवानी मेंही दो दुःख भोगने पड़े। अब उसने अपनी पूरी राम कहानी मय अपने खान्दान के नाम वगैरह के इन लोगों से कह सुनाई।

रानी०। (आश्चर्य से) तो तुम मन्टू के घराने की लड़की हो? मैं तुम्हारे बाप को उस समय से जानती हूं जब उसकी शादी भी नहीं हुई थी परन्तु उस जमाने ने [illegible] मैंने उनको जलसे में नहीं [illegible]

राजा०। [illegible]

पार्लियामेंट में मैंने उनको तीन वर्ष से नहीं देखा।

एलिस०। प्यारे बाप! मैं जरूर उनसे मिल कर अपना कसूर माफ करवाऊंगी। क्या आप इस बात का पता लगा दें कि वह मन्थू में हैं या नहीं?

राजा०। मैं आजही अपने कारखाने के अफसर द्वारा तार देकर दरियाफ्त करता हूं कि रईस आजकल कहां हैं।

यह कहकर उसने फौरन तार लिख कर रवाना की। दो दिन के बाद जवाब आया कि रईस मय अपने भतीजे आर्थर और उसकी स्त्री के फ्लारेंस मेंही हैं।

ज्योंही एलिस ने यह समाचार सुना वह चिल्ला उठी "मेरे प्यारे बाप! मेरे प्यारे बाप! क्या वास्तव में तुम यहीं हो! (राजा से) क्या आप मुझको उनके पास ले चलेंगे?

राजा०। आज सबेरे मुझको मालूम हुआ है कि आर्थर की स्त्री यहां से कल रवाना होगई।

एलिस०। तब तो वह जरूर मेरे बाप को भी साथ लेती गई होगी जिसमें मैं उनसे न मिल सकूं। कृपा करके कोई ऐसा आदमी तलाश कीजिये जो उनका पता लगा देवे।

राजा०। हां, इसका बन्दोबस्त हुआ जाता है परन्तु उनका पता लगने तक तो तुम यहीं रहोगी न?

एलिस०। (जल्दी से) नहीं मैं अब यहां रहना नहीं चाहती मुझको आप पैरिस लेचलें।

रानी०। मैं भी यही चाहती हूं कि पैरिस चले चलें।

इधर राजा साहब की भी यही राय थी क्योंकि उनका पहिलेही से इरादा था कि कहीं परदेश में चलकर रहें जिसमें

रची से मुलाकात न हो। अस्तु उसने ऐसाही किया, रईस
पता लगाने के वास्ते एक होशियार आदमी मुकर्रर करके
रेही दिन ये लोग पैरिस की तरफ रवाना हुए॥

ग्यारहवां बयान।

जिस समय गलिया फ्लारेंस से रवाना होने लगी उसने
पने पति आर्थर को तार दे दिया कि मैं रईस के साथ फलाने
ज पैरिस पहुंचूंगी तुम वहीं पर आ जाना। अस्तु वह पैरिस
उससे आ मिला। उसी रोज जब उसका पति और वह अकेले
टल में बैठे तो गलिया ने आरची और एलिस से मुलाकात
ने का सब हाल उससे कहा, और यह भी कह दिया कि
नों एक साथ रहने पर भी एक दूसरे को नहीं पहिचानते।
बात से उसका पति बहुत ही खुश हुआ। उसने कहा कि
मने यह अच्छी चालाकी खेली कि वे एक दूसरे से अलग ही
जावें।

गलिया०। मैंने इधर तो पादड़ी से उसको अलग करने
बन्दोबस्त किया और उधर रईस को मकान से बाहर न
कलने दिया। यदि एलिस को खबर लग जाती कि उसका
प इसी शहर में है तब तो बना बनाया खेलही चौपट हो
ता और इसी बात को बचाने के वास्ते मैं वहां से इतनी
ड़ी भाग खड़ी हुई।

आर्थर०। प्यारी! तुमने शादी के समय चालाकी तो पूरी
ी परन्तु उस पादड़ी के पास एकाएक तुम कैसे पहुंच गईं?

गलिया०। मैंने वहीं एक दिन गिर्जाघर में उसको देख
था, बस उसकी सूरत देखतेही मैंने पहिचान लिया औ
दरियाफ्त करने पर मालूम हो गया कि वह वहींके गिरजाघ
का पादरी है।

आर्थर०। परन्तु फ्लोरेंस में तुमने बड़ीही चालाकी क
नहीं तो जरूर भण्डा फूट जाता। तुम्हारे में यह बड़ा गुण है
कि जिसको तुम एक दफे देख लो फिर नहीं भूल सकतीं।

गलिया०। मुझे इसके वास्ते बड़ी चालाकी करनी पड़ी थी

आर्थर०। परन्तु सम्भव है कि यह चालाकी खुल जाय और
वह किसी न किसी दिन अपने बाप के पास पहुंच जाय। यदि
ऐसा हुआ तो याद रक्खो फिर यह सब दौलत उसी की हो
जायगी और हमलोगों को भागते ठिकाना न मिलेगा।

गलिया०। आप बेफिक्र रहें, उसको कभी पता नहीं
लग सकता, इसके अतिरिक्त मेरे पास एक ऐसी पुड़िया है
यदि वह रईस को खिला दी जाय तो वह उसको पहिचान ही
न सकेगा।

आर्थर०। यह ठीक है परन्तु यदि हमको पताही न लगे
और वह उसके पास पहुंच जाय तो?

गलिया०। यह असम्भव है। जब रईस बाहर जायगा मैं
उसके साथही रहूंगी और मकान पर बगैर हमारी इजाजत
कोई आही नहीं सकता।

आर्थर०। (कुछ सोच कर) रईस ने जो तुम्हारे नाम अपनी
सब जायदाद लिखने को कहा था वह अभी लिखी या नहीं?

गलियाo। चर्चा तो रोज होती है, सिर्फ लिखनेही की देर

।वह अक्सर इस बात को सोच कर रोया करता है कि एलिस गई और रजिन ने भी कोई चीठी न लिखी, परन्तु मैं उस समझा बुझा कर धीरज दे दिया करती हूं।

आर्थर०। तुम साफ ही क्यों नहीं कह देतीं कि रजिन ने हा है एलिस मर गई!

गलिया०। तब तो वह यह न कहेगा कि तुमने रजिन मुझसे क्यों न मिलाया! मुझको रह रह कर यह भी अफ- स आता है कि मैंने उसकी रईस से मुलाकात क्यों न करादी कि यदि वह रजिन से सब हाल सुन लेता तो फिर मेरे म जायदाद लिखने में कभी देर न करता' परन्तु मैं तो फिर लाकात के बाद वहां रहीही नहीं।

आर्थर०। मेरी समझ में अब कोई और तदबीर करनी हिये।

गलिया०। (जल्दी से) क्या?

आर्थर०। यह तो तुम जानतीही हो कि एक न एक दिन एक दूसरे को जान जाएंगे। उस समय जरूर ये हम लोगों र गुबार निकालेंगे!

गलिया०। परन्तु इसका उपाय जो कुछ हमलोग कर रहे इससे ज्यादा और क्या कर सकते हैं?

आर्थर०। मैं चाहता हूं.....................

गलिया०। हां हां, कहो, रुक क्यों गए?

आर्थर०। (गलिया को सन्देह की दृष्टि से देख कर) मैं हता हूं कि एलिस को यहां से उड़ा लाना चाहिये!

गलिया०। अच्छा उड़ा लाये सही, फिर क्या होगा?

आर्थर। बस फिर क्या है; कैद का भेद!

गलिया। कहां?

आर्थर। एक जगह ऐसी है जहां कुछ समय रख कर के यह समाचार कैद रक्खी जा सकती है।

गलिया। क्या "मैगलहीं पैरी *" में!

आर्थर। हां।

गलिया। (आश्चर्य से उसकी तरफ देख कर) क्या इतनी तकलीफ में? तुम्हारा दिमाग ऐसा करने को कहेगा?

आर्थर। और इसके सिवा चाराही क्या है? यह आखिरी उपाय रह गया है।

गलिया। यह जगह है कितनी दूर?

आर्थर। यहां से पचास कोस!

गलिया। इतनी दूर!

आर्थर। (धीरे से) जितनी दूर हो उतनाही अच्छा है।

गलिया। (उसको टटोलने वाली नजर से देख कर) तुम्हें उस जगह का सब हाल कैसे मालूम हुआ?

आर्थर। मैं जानता हूं, मेरे एक दोस्त ने किसी लड़की को यहां भेजा था।

यह कहते हुए उसका चेहरा डर से जर्द होगया। गलिया उसकी तरफ ध्यान के साथ देखती रही, फिर यकायक जल्दी के साथ पूछने लगी "वह दोस्त कौन था? और वह लड़की कौन थी?"

---

* यह बड़ा ही भयानक कैदखाना था, इसमें कैदी को बड़ी तकलीफ दी जाती थी।

आर्थर०। यता दूंगा, मैंने विश्वासघात नहीं किया।

इतनेही में दर्वाजे पर किसीने आवाज दी और आर्थर ने अपना नौकर समझ कर जवाब दिया कि ऊपर चले आओ। वह नौकर के आने से इसलिये खुश हुआ कि उसकी औरत को अब ज्यादा सवाल जवाब करने का मौका न मिलेगा।

दर्वाजा धीरे से खुला और तीन आदमी अन्दर दाखिल हुए। उनमें एक तो बुड्ढा शरीफ आदमी मालूम होता था और दो जवान सिपाही। आर्थर उनकी सूरत देखतेही जर्द होगया परन्तु फौरनही खड़े होकर उसने कहा "बगैर हुक्म के तुमलोग भीतर क्यों घुस आये?"

इतने में गलिया भी खड़ी होगई और उनमें से बुड्ढे आदमी ने जिसकी उम्र लगभग साठ वर्ष के होगी जोर से कहा "क्या मैं जनाब आर्थर साहब के सामने खड़ा हूं?"

आर्थर०। (क्रोध से तन कर) हां हैं तो सही। कहो तुम किस गर्ज से आये हो?

बुड्ढा०। मैं आपसे दो चार बातें पूछना चाहता हूं।

आर्थर ने कुर्सी पर बेमज़ी के साथ बैठ कर कहा "पूछिये, परन्तु जल्दी कीजिये क्योंकि मुझको कई एक जरूरी काम हैं।"

यह सुन कर वह आदमी घृणा के साथ मुस्कुराया और बोला, "मैं यह पूछता हूं कि क्या आप उस जवान लड़की को जानते हैं जिसका नाम हैली है?

आर्थर०। हैली!

यह बड़बड़ा कर इस तरह वह कुर्सी में लेट गया जैसे आस्मान से वज्र उसके ऊपर टूट पड़ा हो।

बुड्ढा०। हां डिनी, एक बेकसूर भरोसा करनेवाली लड़की

आर्थर ने पहिले तो उस बुड्ढे की तरफ देखा और फि अपनी स्त्री की तरफ। इसके बाद वह दर्वाजे की तरफ देख लगा जिससे पाया जाता था कि वह भागने का उपाय सो रहा है।

बुड्ढे ने उसकी ऐसी मन्शा देखकर सिपाहियों की तर इशारा किया और अब ये लोग और करीब पहुंच गए हैं उसने फिर कहा "क्या तुम कह सकते हो कि उसके साथ किस शादी की थी? क्या तुम यह भी बता सकते हो कि उसके धोखा किसने दिया? और क्या यह भी तुमको मालूम है कि अब वह कहां है?

गलिया०। (अपने पति की तरह जर्द होकर कांपती हुई आर्थर! यह क्या बात है?

आर्थर०। मेरी समझ में यह उससे बहुत ज्यादा है जो कुछ कि मैं कह सकता हूं।

बुड्ढा०। मैडम! यह तो जो कुछ मैं कहने वाला हूं उसके मुकाबिले में कुछ भी नहीं है, परन्तु यह बड़ाही दिल दुखाने वाला किस्सा है और इसके सुनने से तुमको बड़ा दुःख होगा। मेरी राय में आपको यहां से चले जाना चाहिये।

आर्थर०। (अपनी स्त्री से) अच्छा प्यारी गलिया! तुम यहां से चली जाओ। हमलोगों को आपस में बातचीत कर लेने दो, तुम्हारा इस समय यहां रहना उचित नहीं है।

गलिया०। परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती! इनकी बातों के सुनने का जितना तुमको हक है उतनाही मुझको भी है।

अस्तु मैं यहां रहूंगी और जोकुछ बातचीत होगी उसको सुनूंगी।

बुड्ढा०। अच्छा तुम्हारी मर्जी।

यह कहकर उसने आर्थर से फिर कहा "आर्थर! तुम खूब जानते हो कि उस भोलीभाली लैज़ी को किसने मुहब्बत में फांसा! तुम खूब जानते हो कि उसको चिकनी चुपड़ी बातों में फंसा कर किसने घर से निकाला और उसके साथ शादी की "

आर्थर०। (कांपते हुए होठों से) यह बिल्कुल झूठ है। कोई शादी नहीं हुई।

बुड्ढा०। (क्रोध और रंज के साथ) उस शादी से तुम कभी इन्कार नहीं कर सकते क्योंकि मेरे पास सबूत मौजूद है। शादी के कई महीने बाद उसको लड़का पैदा हुआ। परन्तु वह कुछ दिन बाद मर गया। आर्थर! वह लड़का तुम्हारा और मेरी लड़की का था।

आर्थर ने भयभीत होकर अपनी स्त्री की तरफ दिखा कर कहा "तुम तो सिर्फ इसको सुनाने के वास्ते कह रहे हो। परन्तु मुझको इस बात की कुछ परवा नहीं है!"

बुड्ढे ने फिर इस तरह कहना शुरू किया "जब तुम लापता होगए तो वह भीख मांगती और लोगों से मिन्नतें करती तुम्हारी खोज में मारी २ फिरी और अन्त में तुमको खोज निकाला, उस समय तुमने उसके साथ मोहब्बत करने का फिर वादा किया और उसको साथ लेकर शहर बीरट तक गए, परन्तु वहां पहुंच कर तुमने उसको "मेसन डी सैंटी" में बन्द करा दिया।

गलिया ने आखिरी बात सुनतेही डर के साथ चीख कर कहा 'आर्थर!'

परन्तु आर्थर के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। उस
सिर्फ भ्यानक नेत्रों से एक दफे गलिया की तरफ देखा और
फिर अपने चेहरे को दोनों हाथों से छिपा लिया। इधर गलि
या भी डर और रंज के कारन घबरा कर कुर्सी में लेट गई और
ध्यान के साथ उस बुड्ढे की बातों को सुनने लगी।

बुड्ढा०। वहां वह लगभग एक वर्ष तक कैद रही। वह तं
वहां की हालत देख कर मुद्दत की मरगई होती परन्तु ए
आशा ऐसी थी जिससे वह जीती रही। आशा यही थी कि
वह वहां से भागने का उपाय सोच रही थी और इसमें ईश्व
ने उसकी मदद भी की। उसको सीधी साधी समझ कर कु
दिनों के बाद उसकी निगहबानी बहुत कम होने लगी अस्तु
एक दिन सन्ध्या समय जब उसकी पहरेवाली सोई हुई थी उस
ने कुंजी चुराली और फौरन दर्वाजा खोल कर कैदखाने से भाग
खड़ी हुई। वहां से वह पता पूछती हुई सीधी अपने घर की
तरफ दौड़ी परन्तु रास्ते में जो २ तकलीफें उसको हुईं उनका
लिखना लेखनी की शक्ति से बाहर है।

यह बातें आग के अङ्गारों की तरह आर्थर को मालूम हुईं
और उसने घबड़ा कर कहा 'हे ईश्वर! क्षमा कर!'

बुड्ढा०। (क्रोध से) क्षमा? कभी नहीं! क्या जब वह क्षमा
की प्रार्थी थी तो तुमने दी थी? जब उसने तुमसे मोहब्बत करना
चाहा था तो क्या तुमने स्वीकार किया था? सुनो, एक गांव में
वह रोकी भी गई परन्तु यह कहकर छुटकारा पाया कि मैं भूखी
हूं और अपने घर वापस को जाती हूं। अभी बेचारी ने
तिहाई रास्ता भी तय नहीं किया था कि वह यकायक बीमार

होगई। वहां के रहमदिल किसानों ने अपने घर लेजाकर उस को तीन हफ़्ते तक रक्खा और जब वह अच्छी हो गई तो कुछ रुपये और खाने का बंदोबस्त करके वह वहां से रवाना हुई।

आर्थर०। (घबड़ा कर) ईश्वर के वास्ते अब चुप रहो।

बुड्ढा०। (दांत पीस कर) चुप रहो। अच्छा चुप रहता हूं (कुछ रुक कर) परन्तु अब चलते२ उसकी हिम्मत पस्त हो गई थी। एक शाम को वह मोतीझील के पास एक सराय में जाकर टिकी और वहीं कुछ दिन बीमार रह कर इस दुनियां से कूच कर गई।

गलिया०। (एकाएक चौंक कर) आर्थर। ज़रूर यह वही औरत थी जिसका धोखा रञ्जिन ने एलिस की बाबत खाया था!

बुड्ढा०। सराय में जब वह बीमार होगई तो एक औरत उसको अपने मकान पर लेगई और उसकी अच्छी तरह सेवा टहल की और अन्त में वह उसी के मकान पर मरी।

गलिया०। उसका नाम क्या था?

बुड्ढा०। अगाथा।

गलिया०। वही थी, वही! (क्रोध के साथ) आर्थर! यह तुम्हारी स्त्री थी? अब मेरी समझ में आया, एलिस का गिरा हुआ रूमाल उसको मिल गया होगा जिसको पहिचान कर रञ्जिन ने एलिस का धोखा खाया था। परन्तु आर्थर! तुम क्यों बुज़दिलों की तरह मुंह छिपाये बैठे हो, मर्दों की तरह साम्हने मुंह कर के बैठो और मुझसे कहो कि यह सब बातें ठीक हैं न? कहो उससमय इसी औरत का ज़िक्र न तुम मुझसे कर रहे थे जब यह लोग भीतर आये थे?

आर्थर०। गलिया! यह सब ठीक है, मैं इससे इन्द नहीं कर सकता।

गलिया०। (दुःख और घृणा के साथ) मैं तुम्हें इस ब का धन्यवाद देती हूं कि तुम्हारी जबान से एक दफे ता स निकला। निस्सन्देह तुम दोषी हो। भाग्यवश इस समय तुम्हारी विवाहिता स्त्री हूं नहीं तो यदि वह एक महीना औ जीती रहती..............................

आर्थर०। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह मेरी स्त्री नह थी, मेरी उसके साथ शादी नहीं हुई।

बुड्ढा। (क्रोध के साथ) जरूर शादी हुई थी!

आर्थर०। झूठ!

बुड्ढा०. (अपनी जेब में से एक कागज निकाल कर) क्य तुम सनद देखना चाहते हो?

गलिया ने फौरन बुड्ढे के हाथ से कागज ले लिया औ उसे खोल कर पढ़ने के साथ ही उसको विश्वास होगया कि शादी जरूर हुई थी। अस्तु उसने चिल्लाकर क्रोध के साथ कहा, "यह बिल्कुल सही है, आर्थर। तुम झूठे और दगाबाज हो!"

आर्थर०। मैं समझता हूं तुमने अच्छी तरह समझ ही बूझ कर तो मेरे साथ शादी की होगी। अच्छा लाओ मैं भी जरा उस कागज को देखूं।

गलिया ने उसको कागज दिया, उसने उसको पढ़ा और मालूम किया कि शादी पादड़ी ही द्वारा कराई गई थी। अस्तु उसने कागज लौटा दिया और कहा "मुझको यह कागज पढ़ खुशी हुई!"

गलिया०। (क्रोध से लाल आंखें करके) खुशी हुई!

आर्थर०। बेशक! चाहे मेरा कसूर भी कम नहीं है तब भी जबकि वह मर चुकी है तो अब मुझको उससे किसी तरह का डर नहीं है।

गलिया०। (बुड्ढे से) क्या आप उसके बाप हैं?

बुड्ढा०। हां मैं लैली का बाप हूं।

गलिया०। (बुड्ढे के करीब आकर मिन्नत के साथ) क्या आप इंसाफ को रहम के साथ नहीं बदल सकते?

बुड्ढा०। रहम! मेरे वास्ते तो अब यह शब्दही दुनियां में नहीं रहा? इस शब्द का खातमा तो मेरी लड़की के साथ ही होचुका!

गलिया०। तो इस समय आप यहां क्या करने आये हैं?

बुड्ढा०। तुम्हारे पति को इस जुर्म में गिरफ्तार करने के वास्ते कि उसने एक भरोसा करने वाली स्त्री को एक भयानक पागलखाने में भेजा।

गलिया०। (डर से कांपकर नर्मी के साथ) और इसकी सजा क्या होगी?

बुड्ढा०। (गम्भीरता के साथ) जनम भर की कैद!

गलिया०। कृपा करके क्षमा कीजिये।

बुड्ढा०। मैं तुमसे कहही चुका हूं कि क्षमा मर चुकी है!

बेचारी गलिया ने सारा कहा सुना और रुपये पैसे का लालच दिखाया मगर उसने एक न मानी।

उसने सिपाहियों को इशारा करके अपना मुंह दूसरी तरफ फेर लिया, सिपाहियों ने गिरफ्तारी का वारण्ट दिखा-

कर उसकी मुश्कें बांधलीं और उसको साथ लिये हुए कमरे से बाहर निकले। इस समय गलिया ने ज़ोर से चीख मारी और बेहोश होकर धम्म से ज़मीन पर गिर पड़ी॥

बारहवां बयान।

यह बयान करना कठिन है कि जब रंजिन सिपाहियों से गिरफ़्तार होकर जेलखाने चला गया और गलिया को होश हुआ तो उसकी कैसी हालत थी। वह इस समय बहुत दुःख में थी परन्तु यह दुःख उसको रंजिन की जुदाई के कारन नहीं था बल्कि उस दौलत के कारन जो उसके रहने से उसको मिलती। उसने थोड़े में सब हाल रहंग से कहा और उसकी राय से मुकद्दमे की पैरवी के वास्ते एक वकील मुकर्रर किया परन्तु तारीख़ पेशी के बाद पड़ने के कारन से निराश होकर बैठ रहे।

इस समय फरवरी का आख़िरी महीना था। रहंग और [illegible] सार्जेंट ने गलिया को समझाया कि जबतक मुकद्दमा ख़तम न होवे तुम लन्दन जाकर रहो परन्तु उसने ऐसा करने से इन्कार किया, आख़िरकार मजबूर सार्जेंट को रहंग, गलिया को अपने साथ लेकर [illegible] को चला गया और वहां दोनों एकान्त के एक मकान में रहने लगे, परन्तु सार्जेंट की गिरफ़्तारी का रहंग को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि अपनी लड़की के मिलने की उम्मीद से तो वह हाथ धोये बैठा था, इधर रंजिन की भी कोई ख़बर न मिलने से उसको निश्चय होचुका था कि वह भी मर चुका है, नहीं तो वह ज़रूर उसको [illegible] [illegible]

जिससे एकदम से उसका दिल टूट गया।

दिन पर दिन तो उसकी हालत खराब होतीही जाती थी और डाक्टर ने भी एक प्रकार से जवाब ही दे दिया था, इसके अतिरिक्त जितने आदमी उनके यहां आया जाया करते थे सभों को निश्चय होगया था कि अब रईस की जिन्दगी चन्द-रोजा है। अस्तु अपनी ऐसी हालत देखकर एक दिन रईस ने कहा "गलिया! मैं मन्धू में मरना चाहता हूं इस वास्ते तुम मुझको यहीं पर ले चलो।"

गलिया०। मेरे मालिक ऐसी बात जबान से मत निकालो, जरासा भी आराम होजाय तो हमलोग इंगलैंड को चले चलेंगे।

यह कहकर गलिया उठी और दूसरे कमरे में चली गई।

इधर रईस अपनी बेसुधी की हालत में होगया। उसको यह भी नहीं मालूम कि गलिया बैठी है या उठकर कहीं चली गई। इतनेही में एक मुलायम हाथ ने उसका कंधा पकड़ कर धीरे से हिलाया। उसने आंखें खोलीं और देखा कि एक औरत उसके पास घुटने टेक कर खड़ी है। उस औरत ने ज्योंही रईस की आंखें खुली देखीं मिन्नत के साथ गिड़गिड़ा कर कहा, "बाप? क्या तुम अपनी एलिस का अपराध क्षमा करोगे?"

अहा! यह ऐसी मीठी आवाज थी जैसी आज तक उसके कानों में नहीं पड़ी थी। यह ऐसा भोला और खूबसूरत चेहरा था जैसा कि उसने स्वप्न में भी कभी नहीं देखा था। रईस ने उस मूरत को देखतेही अचम्भे में आकर कहा 'एलिस!'

एलिस०। (धीमी आवाज से) हां बाप!

रईस०। एलिस! क्या तू मरी नहीं?

एलिस०। (आंसू बहाती हुई कांपते हुए ओठों से) मेरे प्यारे बाप। मैं जीती और अच्छी तरह से हूं और अब मैं तु से कभी अलग न होऊंगी।

परन्तु उसके बाप को अभी तक विश्वास नहीं हुआ। व घूर २ उसके चेहरे की तरफ देखता रहा और जब उसको पूरी तरह से विश्वास होगया कि वास्तव में यही मेरी लड़की एलिस है तो उसने उसको जल्दी के साथ छाती से लगा लिया और दिल खोल कर खूब रोया।

एलिस०। (बिल्कुल उसके बदन के साथ चिमट कर) बाप क्या तुम मेरे आजाने से खुश हो?

रईस०। (खुशी से) खुश!! आहा! बड़ाही खुश हूं!

एलिस०। परन्तु तुम बहुत बीमार हो! अच्छा अब मैं आगई हूं तो तुम भी अच्छे हो जाओगे। फिर हमलोग अपने घर शहर मन्द्र को चलेंगे। आप जरा टिक कर बैठ जाइये और थोड़ी देर सुस्ता कर तब बातें कीजिये।

परन्तु जितना वह समझे हुई थी उससे वह बहुत ज्यादा कमजोर हो रहा था। इसलिये हाथ का सहारा देकर उसने उसको उठाया और टिका कर बैठा दिया।

रईस०। (लड़की का हाथ चूम कर) मेरी प्यारी लड़की! क्या अब मैं तेरे साथ रहूंगा?

एलिस०। जरूर रहोगे! ईश्वर ने जब हमलोगों को फिर से मिलाया है तो क्या अलग करने के वास्ते?

रईस०। (रंज के साथ) तुमने बड़ी तकलीफें उठाई होंगी।

एलिस०। नहीं बाप, अब उसका खयाल मत करो! किसी

दूसरे समय मैं सब हाल तुमको सुनाऊंगी।

इसी समय गलिया भी पहुंच गई परन्तु एलिस को यहां बैठी देखकर वह मूरत की तरह वहीं खड़ी रह गई। पल भर के अन्दर वह सब बात समझ गई और एक चीख मार, धम्म से जमीन पर गिर कर बेहोश होगई।

वास्तव में एकही महीने के अन्दर गलिया पर दो दफे मुसीवत पड़ी परन्तु इस मर्तबः की मुसीबत उसको मटियामेट करने के वास्ते थी। पल भर के अन्दर वह जान गई कि अब मैं बिलकुल कङ्गाल होगई क्योंकि जिस बाप और लड़की को मैंने एक दूसरे से अलग कर दिया था अब फिर मिल गए अस्तु अब रईस की बिलकुल जायदाद मेरे हाथ से जाती रही।

ज्योंही गलिया बेहोश होकर जमीन पर गिरी दो मनुष्य कमरे के भीतर पहुंचे। यह हरबर्ट की रानी और राजा थे जो धम्माके की आवाज सुनतेही बगैर एलिस का इशारा पाये भीतर पहुंच गए थे। एलिस ने अपने बाप से उनकी मुलाकात कराई और तब सब जने खुशी२ बातें करने लगे।

आज का दिन रईस के वास्ते बहुतही खुशी का था, वह बातेंही करता २ गहरी नींद में होगया और दो घंटे तक आराम के साथ सोया। जब वह उठा तो उसको मालूम हुआ कि जैसे वह बिलकुल तन्दुरुस्त हो। उसी समय डाकूर भी पहुंचा और उसकी यकायक ऐसी बदली हुई हालत देखकर आश्चर्य करने लगा परन्तु जब उसको खुलासा हाल मालूम हुआ तो उसने रईस से कहा कि आप अब एक दफे मस्कू चले जाएं। मैं आशा करता हूं कि अभी आप कई वर्ष तक जिन्दगी का मजा लेंगे।

इधर जब गलिया को होश हुआ तो उसको मालूम हुआ कि यह उठ बैठ नहीं सकती और वास्तव में उसने करीब एक महीने तक चारपाई न छोड़ी इससे एलिस और उसके बाप को उसकी तरफ से किसी तरह का डर न रहा।

गलिया को दूसरे कमरे में भेजने के बाद रईस ने कहा "एलिस! उस अलमारी में एक लपेटा हुआ कागज रक्खा है, उठा तो ला।"

एलिस ने जाकर कागज निकाला और फिर अपने बाप के हाथ में देदिया।

रईस०। अब मुझे आग के पास लेचल।

आश्चर्य के साथ उसकी इस बात को सुन कर एलिस उसको सहारा देकर आग के पास ले गई, उसने उस कागज को (जो वास्तव में उसकी विल थी) थोड़ी देर तक गौर के साथ देखा और तब अपनी कांपती हुई उंगलियों से उसके छोटे२ टुकड़े करके उसने आग में डाल दिया और कहा, "गलिया! तूने बड़ी बदमाशी की परन्तु अब तेरे बुरे दिन आगये! अब मैं ऐसे नीच पति की नीच स्त्री का कभी मुंह न देखूंगा!"

एलिस०। (आश्चर्य से) क्या नीच? मैं समझती हूं......

रईस०। (क्रोध से) आर्थर हमेशा नीचपना करता रहा।

एलिस०। (आश्चर्य से) आर्थर!

रईस०। हां आर्थर! और अब वह एक निर्पराध औरत को "मेसनडी सैंटी में" गिरफ़ार कराने के अपराध में जेलखाने की हवा खा रहा है।

एलिस०। (और भी आश्चर्य के साथ) यह तो मैं जानती

हूं क्योंकि यह हाल मैं अखबारों में पढ़ चुकी हूं परन्तु आ
और गलिया से क्या सम्बन्ध था?

रईस०। क्या तुझे यह नहीं मालूम कि वह उसका पति

एलिस०। उसका पति! क्या गलिया का पति? मैं
जानती थी कि उसने रजिन के साथ शादी की है।

रईस०। ओह! तुम बड़े धोखे में रहीं!

एलिस०। यही तो जान कर मुझको आश्चर्य हुआ था।
रजिन गलिया के साथ शादी करे और मेरे जाने के.........
इतना ही कह कर वह शर्मा गई और आगे कुछ न कहते बन

रईस०। नहीं, वह तो आर्थर था जिससे साथ शादी हुई

एलिस०। परन्तु आर्थर अपने को रोदर घराने का मालि
कैसे बना बैठा?

रईस०। जब अपने चचा की शर्त के मुताबिक रजि
तुम्हारे साथ शादी न कर सका तो आर्थर ने यह सब जाय
दाद जब्त करली और अपने को रोदर की जायदाद का म
लिक मशहूर कर दिया।

एलिस०। मगर रजिन ने शादी से इन्कार नहीं किया था
उसने तो अपने चचा के कौल को पूरा किया था। मैं जरू
उससे नफरत करती थी परन्तु वह तो मेरे पीछे मारा२ फि
रता रहा।

रईस०। ऐ मेरी प्यारी लड़की! तुम अभी तक नहीं स
मझीं कि रजिन किस तरह का आदमी था। जब उसको रो
के कमरे में से तेरे हाथ का लिखा पुर्जा मिला तो वह उसके
मेरे पास लाया और पूछने लगा कि इसका क्या मतलब है

उसने कहा कि यदि मुझको पहिले मालूम हो गया होता f
यह शादी एलिस की मर्जी के खिलाफ है तो मैं कभी न करता

एलिस०। तो क्या उस समय उसको यह नहीं मालू
हुआ कि मैं उसकी स्त्री नहीं हूं?

रईस०। बिलकुल नहीं। उसको विश्वास था कि तुम इस
शादी के रंज से आत्महत्या करने के वास्ते भाग गई हो। उस
रात को मैं भी बीमार हो गया इससे वह मुझे और गलिया के
साथ लेकर मंसू तक पहुंचाने आया और करीब बीस दिन वे
हमारे पास रहा। इसके बाद उसने तुम्हारी तस्वीर मांगी
और कहा कि मैं उसके वास्ते दुनियां भर खोज मारूंगा और
जब तुम मिल जाओगी तो तुमको शादी के बंधन से मुक्त कर
दूंगा।

एलिस०। (आंखों में आंसू भर कर) अफसोस! मैंने बड़ा
उसको धोखा दिया!

रईस०। परन्तु मकान में तुम्हारी तस्वीर एक भी न मिली।

एलिस०। तस्वीरें कोई एक दर्जन तो मेरे बक्स में रक्खी
थीं और बहुतसी किताब में पड़ी हुई थीं।

रईस०। तो गलिया ने छिपाली होंगी क्योंकि वहां तो एक
भी नहीं मिली और जब गलिया से पूछा तो उसने भी कहा था
कि मेरे पास कोई नहीं है। मालूम होता है कि उसके रवाना
होने से एक दो दिन पहिलेही गलिया ने उससे कह दिया था
कि उसकी शादी तुम्हारे साथ नहीं हुई!

एलिस०। तो क्या उसको विश्वास होगया था कि अब उस
का रोदर की जायदाद पर बिल्कुल हक नहीं है?

रईस०। यह तो मैं नहीं कह सकता कि उसको ऐसा विश्वास होगया हो परन्तु आर्थर ने सुना था कि रजिन कहता है अब मैं एलिस के साथ कोई सम्बन्ध न रक्खूंगा और यह भी सुना था कि रजिन ने अपना दावा सब जायदाद पर से उठा लिया है इसीसे आर्थर ने कब्जा कर लिया। मालूम होता है कि इसके पहिलेही आर्थर और गलिया में बातचीत हो चुकी थी। अस्तु जब उसने गलिया के साथ शादी करने की इच्छा प्रगट की तो मैंने भी उसको खुशी के साथ मंजूर कर लिया।

इस समय यह जान कर कि रजिन की शादी गलिया के साथ नहीं हुई एलिस को बड़ीही खुशी हासिल हुई॥

तेरहवां बयान।

मन्धू के रईस की हालत अब दिन पर दिन अच्छी होती जाती थी, यहां तक कि चन्दही रोज बाद डाकृरों ने कह दिया कि अब यह इङ्गलिस्तान जा सकते हैं क्योंकि जोकुछ रईस में कमजोरी थी वह किसी रोग के कारन तो थीही नहीं, वह थी सिर्फ रंज के सबब से अस्तु जिस समय से लड़की उसको मिली उसकी हालत यकायक ऐसी बदल गई कि जिससे डाकृरों को भी ताज्जुब होता था।

इधर गलिया भी बिलकुल तन्दुरुस्त होगई परन्तु अपनी मजदूरनियों के सिवाय और वह किसी को भीतर नहीं आने देती थी। एलिस ने उससे मुलाकात करने की कई दफे इच्छा

अपनी चमकदार सुनहली किरणें चारो तरफ इस तरह फैला रहे थे जैसे आग की लाटें निकल रही हों। परन्तु यह सब क्यों हो रहा था? यह इसी वास्ते हो रहा था कि एलिस अपने बाप के घर को फिर से लौट आई इसलिये सब चीजें इस समय उस को देखकर खुशी जाहिर कर रही थीं।

ज्योंही गाड़ी दर्वाजे पर पहुंची एलिस खुशी और आश्चर्य के साथ गाड़ी में से उतर कर चारो तरफ की चीजों को देखने लगी। पुराने नौकर सब उसके गिर्द जमा होगए और एक बूढ़ी औरत जो उसकी मां के समय से उनकी नौकर थी एलिस को गले से लगा कर रोने लगी।

आखिरकार सब लोग मकान में गए और हँसी खुशी से दिन बिताने लगे। हरबँट की रानी तो अब भी मन्यू में रहती थी परन्तु राजा अक्सर चला जाता था। इधर रईस भी करीब २ बेल्कुल अच्छा होगया था मगर एलिस के चेहरे पर दिन प्रति दिन रंज और उदासीनता छाती जाती है। चाहे हरबँट वालों के सामने वह अपने चेहरे पर कभी रंज न आने देती थी तब भी उनको उसकी हालत का पूरा २ हाल मालूम था। परन्तु ज्योंही सब लोग इधर उधर जाते और वहां निराला होजाता तो उसके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती थी।

एक दिन सन्ध्या समय सब लोग पुस्तकालय की खिड़की में से सामने वाले बाग की बहार देख रहे थे, उस समय एलिस के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई देखकर रईस ने कहा "बेटी! यह क्या बात है जो तुम दिन पर दिन मुरझाती चली जाती हो?"

एलिस०। (घबरा कर जल्दी से) आज गर्मी बहुत ज्यादा है।

प्रगट की परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया। इधर एलिस भी अपने पिता से मिल कर ऐसी खुश थी कि उसने गलिया से बदला लेने का ख्याल ही मन से दूर कर दिया। उसने निश्चय कर लिया था कि गलिया से बदला न लेकर मैं उसके साथ रहम का बर्ताव करूंगी और इसी कारन वह उससे मिलना चाहती थी परन्तु गलिया क्रोध में भरी हुई थी, उसने उससे किसी तरह की मदद लेना मंजूर न किया, बल्कि इसके दोही चार दिन बाद मालूम हुआ कि वह भाग गई है। वह रात के समय भागी थी इससे किसी को भी पता न लगा कि वह कहां गई। इस वारदात के दूसरे दिन एलिस और उसका पिता जेलखाने में आर्थर से मिलने गए परन्तु उसने भी क्रोध और रूखेपन के साथ जवाब दिया कि मैं गलिया का पता न बताऊंगा और न मुझ को अब तुम्हारी किसी तरह की मदद की जरूरत है। अस्तु यह सुन कर उन लोगों ने उसकी अवस्था पर अफसोस करते हुए घर का रास्ता लिया।

इसके चन्दही रोज बाद सब लोग मन्घू को रवाना हुए। डरबेंट के राजा और रानी भी उनके साथ गए क्योंकि एक सभ्य लड़की को जिसको उन्होंने ऐसी बुरी हालत में पाला था और जिससे इतनी मोहब्बत होगई थी यकायक छोड़ देना कठिन काम था। इसके अतिरिक्त लड़की को भी उनके साथ ऐसी मोहब्बत होगई थी कि यकायक उनका बिछुड़ना वह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। अस्तु वे जेठ के महीने में मन्घू पहुंचे, जिस समय गुलाब फूलने की तैयारी कर रहे थे, कँवल अपनी भीनी २ महक को चारो तरफ फैला रहा था और सूरज

अपनी चमकदार सुनहली किरणें चारों तरफ इस तरह फैला रह था जैसे आग की लाटें निकल रही हों। परन्तु यह सब क्यों हो रहा था? यह इसी वास्ते हो रहा था कि एलिस अपने बाप के घर को फिर से लौट आई इसलिये सब चीजें इस समय उस को देखकर खुशी जाहिर कर रही थीं।

ज्योंही गाड़ी दर्वाजे पर पहुंची एलिस खुशी और आश्चर्य के साथ गाड़ी में से उतर कर चारों तरफ की चीजों को देखने लगी। पुराने नौकर सब उसके गिर्द जमा होगए और एक बूढ़ी औरत जो उसकी मां के समय से उनकी नौकर थी एलिस को गले से लगा कर रोने लगी।

आखिरकार सब लोग मकान में गए और हँसी खुशी से दिन बिताने लगे। हरबेंट की रानी तो अब भी मन्चू में रहती थी परन्तु राजा अक्सर चला जाता था। इधर रईस भी करीब २ बिलकुल अच्छा होगया था मगर एलिस के चेहरे पर दिन प्रति दिन रंज और उदासीनता छाती जाती है। चाहे हरबेंट वालों के सामने वह अपने चेहरे पर कभी रंज न आने देती थी तब भी उनको उसकी हालत का पूरा २ हाल मालूम था। परन्तु ज्योंही सब लोग इधर उधर जाते और वहां निराला होजाता तो उसके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती थी।

एक दिन सन्ध्या समय सब लोग पुस्तकालय की खिड़की में से सामने वाले बाग की बहार देख रहे थे, उस समय एलिस के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई देखकर रईस ने कहा "बेटी! यह क्या बात है जो तुम दिन पर दिन सूखती चली जाती हो?"

एलिस०। (घबरा कर जल्दी से) आज गर्मी बहुत ज्यादा है।

कृपा करके यह बताइये कि क्या आपका नाम एलीसिया है।

एलिस०। (आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखकर) तु ठीक कहते हैं, ज़रूर मेरा नाम एलीसिया था।

अजनबी०। (आश्चर्य के साथ) एलीसिया था?

यह शब्द उसने बड़ेही रंज और आश्चर्य के साथ कहे औ इसके बाद फौरनही अपने चेहरे पर से नकाब उतार कर अल रखदी। उसकी सूरत देखतेही एलिस ने चिल्ला कर आरची क नाम लिया और उसकी तरफ झपटी।

उस अजनबी ने भी उसको पकड़ कर छाती से लगाई लिया होता परन्तु एलिस यकायक कुछ खयाल करके रुक गं और उससे थोड़ी दूर हट कर खड़ी होगई, अब उसने भी अपने चेहरे पर से नकाब हटादी।

एलिस०। मैं अभी तक नहीं जानती थी कि तुम इङ्ग-लिस्तान में हो।

इधर आरची भी उसको पीछे हटती देखकर पीछे हट कर खड़ा होगया क्योंकि उसने देखा कि एलिस उससे कुछ नाराज है परन्तु उसके यह शब्द कि 'मेरा नाम एलीसिया था' उसको बहुत ही खटकने लगे। उसने सोचा कि क्या अब मेरा हक उस बदन तक छूने का न रहा? क्या इतनी खोज के बाद उसको पाकर भी अब मैं उसकी तरफ से बिलकुल निराश होजाऊंगा? यही बातें सोच कर उसने एलिस से कहा, "मुझको यहां पहुंचे आज तीसरा दिन है। मैंने तुमको जेनोवा, टरन और वहां चल कर पैरिस तक खोजा और वहां से यह हाल सुन कर f तुम इङ्गलिस्तान चली गई हो तुम्हारे पीछे यहां तक आया